

424
vidui lunde
→



१ॐ नमः शिवाय ॥ न कर्म शुद्धा न क ॥
 वादन वलिवियाव ॥ शुद्ध यक ॥ शुद्ध
 लवदान र्शिष्टमर्शिगसाय ॥ भक्तिया
 यमालसायाय ॥ जह्याय सावाय ॥
 हाल जह्यमल ॥ जह्याया साकान
 क जह्यनक ॥ कावनचरुनययाय
 ॥ रुमिसाधनयाय ॥ यत्ने साधनया
 य ॥ यह्याविधिवत् ॥ न्यायनमु ॥ र्हा
 सि ॥ का ॥ वामुदय ॥ कृति ॥ पूजन ॥
 कृतिथवथव ॥ कलसुखिष्ठा ॥ संका
 कृति ॥ सुवलाइनकाव वामुपूजाया
 य ॥ शुसनासाक अकृत लंस्वधर्गन
 हाय ॥ रुमिपूजायाय ॥ आधनशक
 यत्यादि ॥ धन ॥ सुनूयंयमदानूयं
 दालं कानरुषिता ॥ तन्मयं गामि आवसा
 ध्यात्वा संयुजयन्मदी ॥ सर्वदवमयं
 वामु यनूयं गयुजयत् ॥ वद ॥ ॐ न
 मवा अस्ति न्दियममनमृमृगकुरुन
 सवर्चा ॥ सिसक्तुव ॥ नमामागृयिष्ये
 नमामागृयिष्या ॥ ॐ यं गवागृनामि
 मनाकुवासिधनू ॥ १ ॥ कुरुत्वा कमाय
 त्वा नयेत्वा वायायत्वा ॥ वाक्कलस्यं र्हा

सिकीलयावालस मधू घृत दधि दग्ध
 श्रीवैठ्ठल धर्गनवाल ॥ गायकावाठन
 यिन ॥ कीलखाय ॥ आग्नेयादिन ॥ न्या
 यनमुनगायकिलि ॥ आगाठधन ॥ ॐ
 विमक्तुगलनागं लाकयालाश्वकामदा
 ॥ अस्मिगृहकुतिष्ठतु आयुर्वलकना ॥
 सदा ॥ मनु ॥ ॐ र्हा कुरुत्वा स्वाहा ॥
 शिवाटयंन ॥ कीलस नयिधनर्हित
 माल ॥ रुसिकीलिय ॥ ३२ दूधयार्गं य
 वि ॥ यिंथयार्गं ॥ विविधं क्रियाटयं
 न ॥ ॥ धर्गधनकाव आग्नेयादिव
 लिविध ॥ वलिमनु ॥ ॐ अग्निस्थांथ
 सर्वस्था यवान्यतत्समाशिता ॥ वलिं
 र्हा ॥ ययकामि यत्नमादतमूर्कमं ॥ १ ॥
 ॐ नमस्त्याविषगि ॥ २ ॥ नमस्त्याविषना
 कसा ॥ वलिं र्हा ॥ ययकामि सर्वगृह
 कुमक्तिर्ता ॥ २ ॥ ॐ नमो वायुनाड्या
 यवान्यतत्समाशिता ॥ वलिं र्हा ॥ यय
 कामि गृहकु यत्नमादतं ॥ ३ ॥ ॐ न
 र्हा ॥ २ ॥ ॐ नमस्त्या यवान्यतत्समाशिता ॥
 ॥ वलिं र्हा ॥ ययकामि गृहकु समनाक
 का ॥ ४ ॥ ॥ ववभठिकाथ दयक ॥ धव २

काथसथवश्नेवश्रवाय ॥ न्यासादियूजनं ॥
 उं प्रियायेनमः ॥ उं यन्मवत्येनमः ॥ उं
 काकायेनमः ॥ उं सुप्रियायेनमः ॥ उं
 विमलायेनमः ॥ उं निवायेनमः ॥ उं
 स्वल्मरायेनमः ॥ उं शनूयेनमः ॥ उं
 धनायेनमः ॥ उं श्रीधन ॥ धनवहाव
 सूग ॥ ॥ उं धनयेनमः ॥ उं धन्यायेनमः
 उं विमलायेनमः ॥ उं मित्रायेनमः ॥ उं
 नृणांयेनमः ॥ उं गदायेनमः ॥ उं निम
 येनमः ॥ उं विदुमायेनमः ॥ उं विर
 वनमः ॥ वय ॥ उं श्रीमालखी ॥ धन
 र्यहावसूग ॥ उं लयविषदा ॥ ॥
 धनधूनदावकाथसयूजनयाया ॥
 वीज्मन्यादीन ॥ ॥

उं वीज्मनायनमः ॥ घृताकृतनेवश्र
 वय ॥ उं श्रीरत्नायनमः ॥ उं यज्ञा
 यनमः ॥ उं लललख ॥ उं महावृ
 कडाकसायज्ञावृक्षीमविव ॥ उं
 मेवत्सस्यवावृध ॥ उं यायेनमः ॥ य
 नाका ॥ उं मन्मनिन ॥ ॥

वृत्तायनमः ॥ नत्त ॥ उं सजाया वृत्त सग
 लो ॥ ॥ श्रीदित्यायनमः ॥ धूमवि
 गान ॥ ॥ उं श्रानवृजशिर्वद ॥ ॥
 सत्यायनमः ॥ लभधूमाश्र ॥ कावाधनवा
 ॥ उं कल्हासत्या ॥ ॥ लभयनमः ॥
 मीमादन ॥ ॥ उं श्रामुशमिभनता ॥
 धामाकायनमः ॥ यकिमीस ॥ ॥ उं
 यूकनमनसावयं दवस्य सविठु ॥ सव
 लययिभका ॥ धनयूवादिगया ॥ ॥

श्रमयनमः ॥ चयमाश्र ॥
 उं श्रीनिदुर्ग ॥
 यूषायनमः ॥ लाजाल ॥
 उं तमीभन ॥
 विरथयनमः ॥ लाजाल ॥
 उं यरुयविठुमर्चि ॥
 श्रीमनायनमः ॥ कलि ॥
 उं श्रीसिमुद्रा ॥
 यमायनमः ॥ चनक काला ॥
 उं यमनदर ॥
 गंधर्वायनमः ॥ गन्ध ॥

ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ शुभं कर्म शुभं भक्ति
शुभं मथ शुभं ज्ञानं शुभं ह्यवसगति
शुभं ॥ ॥ यस्तु न कल्पनाम ॥ ॥
हृन्मयनमः ॥ वगडि का ॥ गगलया
म ॥ ॐ यस्तु नानामधि ॥
गृन्मयनमः ॥ नील लंका ॥ संध्या ॥
ॐ ह्रीं मंगला ॥ धनं दक्षिणया ॥

नेमत्यायनमः ॥ गिलास्त ॥
ॐ यो न दवी ॥
नन्दिननमः ॥ खज्वन ॥
ॐ नारिभविर् विज्ञानं वायुर्मय
वित्तिर्लसतः ॥ श्रुतत्वा नन्दाया ॥
रुगः ॥ सोऽर्थं यमः ॥ ऊँ चार्था यज्ञा
धर्मास्मि विभिना जायन्ति हि ॥
सूणी वायनमः ॥ वायुणमाह ॥
ॐ जात नूद मिवा ॥
पूष्यदकायनमः ॥ कृष्णः ॥
ॐ गणेश्या गणेश ॥
वनूष्णनमः ॥ यक्ष ॥
ॐ ह्रीं मंगला ॥

शुक्रायनमः ॥ मृगा ॥
ॐ श्रुतात्यनि ॥ कर्तव्यनमः ॥ धृताम् ॥
ॐ कर्तुं कृत्वकर्त ॥
भनेधवायनमः ॥ साहन ॥
ॐ मीनादवी ॥
धनं दक्षिणदिगया ॥

वायव्यनमः ॥ मधुः ॥ मातृदायावा
धनवा ॥ ॐ तव वायु ॥ नागयनमः
॥ नागकमल ॥ ॐ या ह्यवडायाहु ॥
वृहस्पतयनमः ॥ वष्टिकान्त ॥ ॥
ॐ अमरुदग्निविद्या ॥ यकायन
मः ॥ मृगन्त ॥ ॐ कृविदं गज ॥ ॥
भामायनमः ॥ वायस कलि ॥ ॥
ॐ भुर्कत्वा ॥ विनियनमः ॥ अलूक
उत्पलसक ॥ ॐ डावधेयाय ॥ ॥
दितियनमः ॥ छावूनकाय ॥ ॐ वदा
हमर्त ॥ ॥ अदितियनमः ॥ वत ॥
ॐ अदिति द्यौ नदिति ॥ धनं दक्षिणदि
गया ॥
श्रवायनमः ॥ दूद ॥ ॐ श्रुक्वक्तन

नमयाचकं तथा बाला पूजायाय ॥
 सुवला इन्द्राव कृति ज्ञायाव लू
 नति १० कृति मूल ॥ ध्यानकयक
 थयारिं ग मरिं ग सायाव माला
 साकि याय ॥ थवावलिसुतयाव
 सास वाचकन काय ॥ ध्यानसक
 लीन थल ॥ कायउ न थाय ॥ यति
 छा ॥ विविथं यरु धनक ॥ कलसा
 लिखक ॥ मूलकलसत चन्दता
 दि श्रीविद्वद ॥ वासुसचाठ न
 यद्य विसर्जुन याय विसर्जुन म
 लं यति ला ॥ उंया लुधव गल्लमर्ष
 रूति विसर्जुन यादाव खास चय
 क काय ॥ कलस कुल्लमउ न थरु
 स लस्य ताथ ॥ पुदकि लयादाव
 ताज श्रीकृत्ता साय ३ ॥ थरुं स
 यविश्व लयाचक माव ॥
 रूति वासु यागवर्तन रुमि साधन
 विविश्रमाय ४॥

दिवस श्रुत कमल याद साधन १॥

यजमानस्य पश्य राजन ॥ वाक्
 लस्य यरु याय विविथं ॥ कलस
 यति छा ॥ संख्या कृति ॥ श्रुति
 कल याव श्रुत या १० ज्ञान याय
 काया विं व कलिस ॥ यंचा मृत ॥
 उं यय दधिया रूत्यादि ४॥ श्रुत
 वाचन ल साय ॥ वेद ॥ उं सुमि
 लियान ॥ यचै गव्यन साय ॥ वेद
 ॥ उं यविश्व छा ॥ यजमान जान
 कं यरु मधु यद ॥ वाक् लस्य ला
 सा लाव ॥ स्वमि वाचन य १० ॥
 श्रुतिकृत्ता यवर्ष स स्वमि कसर्ग ॥
 श्रुत या धन १० ॥ वा १० ॥
 गतु वास थन ॥ यचै तीर्थ जल ॥
 साद ॥ शय स्वात दारु ल ॥ श्रु
 त ॥ वाधन ॥ लू ॥ डाहा ॥ मिजल ॥
 कं ॥ कल ॥ स्वय सत ॥ न्या ॥ कं
 भव ॥ लू न कर्म कये ॥ क ॥
 मं स ६ ॥ मं स ३ ॥ मं स १ ॥ थय
 जमान या श्रुत नू यन दय ॥ लू डा
 हा य नू १० पूजन ॥ श्राधान भक्त

क २

॥ विजल ग पूवा १० ॥

ह्यादि ॥ धर्मादि ॥ ॐ तत्सत्ताजति ह्यादि
 ॥ नन्दाय नमः ॥ स्वर्णि ॥ ॐ नारि
 मविर्णि ॥ ॥ रुद्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ
 रुद्रं कर्तु ॥ ॥ जयाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ
 जाग नृप ॥ ॥ सकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ
 सकामया ॥ मिल्य ॥ ॥ पूर्वय
 नमः ॥ ३ ॥ ॐ पूर्वय द्रविय ॥ ॥
 साधन शिग त्वन ॥ दधकिया ॥ यति
 ह्या ॥ वला हल काव कर्म वाला
 जायाय ॥ काङ्क्ष नन्द्यादि पूजा याय ॥
 हस्त स स्वस्तिक वाय ॥ शूट वा गण
 वाविसर्जुन ॥ शूट यथा ॥ कर्मा
 वालाविय ॥ यज मानस्य गण वाजा
 न ॥ कालू वान ॥ ॥ शूट या त्वन
 ॥ वंस स्वस्तिक वाय ॥ कलस (गण)
 छि ॥ ॥ धर्मा ॥ द्रुयात ॥ ॥ स्वर्णि क
 छि ॥ ॥ शूट या स (गला वन चतन
 विदनीत स्वस्तिक वाय ॥ ॥ कल
 स पूजा ॥ ॐ शूडि ध कल म ॥ ॐ य
 के न द्य ॥ वलि स ॥ ॐ न मा व हू सा

य ॥ शूग गन्धादि ॥ धर्मा न काव
 वालाय ॥ लंडा हा यन्य ॥ मिजल
 रुन वाग ॥ शूट स्वतक ॥ ॥ शू (म
 यादि पूजन ॥ वनिष्ठ सुगाय नमः ॥
 नन्दाय नमः ॥ धर्मा वलि ॥ ॐ नारि
 मविर्णि ॥ ली न हा न ॥ शूयादि ॥ ॐ
 नन्द नन्दिते वीसा वा त्वाम गला य
 याम्यर्द ॥ शूग मगु छिर्णि कया द्याव
 वृत्ता कर्म दिनी ॥ ॥ ॐ छि ना रुव
 वीर्णि ॥ कल स लं खन शूट या स ल
 य ॥ स्वर्णि न शूट या स लं ख रुय ॥ ध
 न शूगि का व स ॥ ॥ नै स ह्य स ॥
 कल स पूजा ॥ वलि शूग गन्धादि ॥
 वालाय शूदि न द्ध धर्मा ॥ पूजन ॥ का
 म्य सुगाय नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ ध
 न वलि ॥ ॐ रुद्रं कर्तु ॥ छि न ॥ शू
 यादि ॥ ॐ धर्मा सर्वदा रुद्रं वीसा क
 न्दिता वर्द ॥ शूग मगु छिर्णि कया द्या
 व वृत्ता कर्म दिनी ॥ ॐ छि ना रुव वि
 र्णि ॥ द्ध धर्मा धर्मा न क ॥ धर्मा नै स

ह्यया ॥ ॥ गता वायव्य ॥ कलसादि
 पूजा ॥ पूर्ववत् ॥ रुगुसंगायनमः ॥
 ऊयायेनमः ॥ धनं वलि ॥ ॐ याग नूद
 ॥ स्तिन ॥ अद्यादि ॥ ॐ ऊय रुसर्व
 दवि ति हर्त स्तायितामया ॥ अरुमनु
 स्तिर्गक्या द्यावच्चलार्क मदिनी ॥ ॐ
 स्तिनारुववीर्ग ॥ विविधं धनक
 ॥ ॐ ति वायव्य ॥ ॥ गता ॥ ॐ भन ॥
 कलसपूजादि ॥ पूर्ववत् ॥ रात्रिवाज
 सुगायेनमः ॥ सकायेनमः ॥ धनं व
 लि ॥ ॐ सका मया सि ॥ स्तिन ॥ अद्या
 दि ॥ ॐ सका सका ॐ दायधु सिद्धि
 मर्कि रुल युद ॥ अरुमनु स्तिर्गक्या
 द्यावच्चलार्क मदिनी ॥ ॐ स्तिनारुव
 वीर्ग ॥ विविधं धनक ॥ ॐ ति ॐ
 भन ॥ ॥ गता मध्य ॥ कलसपू
 जा ॥ वलि पूजा ॥ चालाय ॥ सुवर्ण
 कूर्मन ॥ लूडाहायनी ॥ ॥ धयाध
 वन रुनिवाग ॥ पूजन ॥ आधन
 भक्त्यादि ॥ गनूठा सुनायनमः ॥
 अंगन सुगाये पूजयेनमः ॥ धनं

वलि ॥ अमरुवायनमः ॥ ॐ पूजु
 दवि यना ॥ ॐ याग नूद ॥ ॐ द्या मा
 नकी ॥ धूय दीय नेवद्य ॥ जायसा
 ॥ स्तिन ॥ ॥ अद्यादि ॥ ॐ पूजु
 ॐ मसायव सर्वसंदाहल कर्ण ॥
 अरुमनु स्तिर्गक्या द्यावच्चलार्क
 मदिनी ॥ ॐ स्तिनारुववीर्ग ॥ वि
 विधं धनक ॥ ॐ लूवयाव आरु
 ति थव २ नथियक ॥ यति सा ॥ ॥
 ॐ मनाईति ॥ दकि ॥ ॥ विविधं य
 क धनक ॥ कलसादि यक ॥ ॥
 ॐ ति याद स्तायन विविध समाय ॥

रतादवयति साविधि ॥
 वी० पूजा ॥ यवे ३ गद्य साधन विधि
 धं यहुयाय ॥ वन साधन ॥ दृगाद
 ति ॥ गिलादृति ॥ कलसपुति सा ॥ ॥
 मर्यादृति ॥ मूलदानसे धवल माया
 दीय लादनका ॥ आनति मधुयत्यली

भन ॥ स्नानमधुपकात्रय ॥ यद्वान
 नचवकीचाय ॥ धनयि अष्टेययय ॥ १२
 कलस ॥ गम ॥ सलननस्य ॥ १२ ॥ पूर्वकल
 सयुष्यनाग ॥ यद्वनाग ॥ हन ॥ मूति ॥
 सूर्यकाकि ॥ चन्द्रकाकि ॥ यूत ॥ मूति ॥
 यूजन ॥ ॐ गगानमिल ॥ ॐ वय ॥ ॐ
 ॥ ॥ अययय ॥ ॥ गममू ॥ ॥ गम
 मय ॥ भवि ॥ दू ॥ धन ॥ कसि ॥ हान
 ल ॥ चकन ॥ नसि ॥ यूजन ॥ ॐ अग्नि
 दू ॥ ॐ जयगवूदराग ॥ ॥ दकि
 लघट ॥ वरुसि ॥ दूवलि ॥ वरंगग ॥
 ऊव ॥ व्याल ॥ मधूक ॥ मिलीख ॥ यूज
 न ॥ ॐ यमनदर ॥ ॐ अवनूदम
 दीव ॥ ॥ नसत्यघट ॥ विष्कुरु
 मृत्तिका ॥ गंगा मृत्तिका ॥ यर्वगागमृ
 त्तिका ॥ अग्निदागमृत्तिका ॥ वनादख
 ॐ मृत्तिका ॥ मूयविलमृत्तिका ॥ व
 ल्मीकमृत्तिका ॥ वृषभृगमृत्तिका ॥
 यूजन ॥ ॐ उक्तदवी ॥ ॐ श्वडम
 सिर ॥ ॥ यष्टिमघट ॥ दवस्वात ॥

हिम वृष्टि ॥ यूजनही ॥ निर्जन ॥ द
 ह ॥ नदी ॥ समूह ॥ धनकुल यूज
 न ॥ ॐ ममवन्ध ॥ ॐ शुभकंड
 जामह ॥ ॥ वायव्यघट ॥ श्री
 स्व ॥ अगुन ॥ कथूव ॥ कूकम ॥
 कलुवि ॥ कूट ॥ जयमासि ॥ मूत
 ॥ यूजन ॥ गववाय ॥ ॐ जगत्तू
 दावभक्त ॥ ॥ उक्तनघट ॥ य
 लका ॥ लंका ॥ ॥ मयंक ॥ हाम
 लस्नानवा ॥ मंग ॥ विर्यगु ॥ यूज
 न ॥ ॐ कविदंगड ॥ ॐ गायव्यय
 मद ॥ ॥ ॥ श्रीभनघट ॥ म
 लिस्नान ॥ कादू संचल ॥ शायस्ना
 न ॥ जीविस्नान ॥ चव ॥ कक्षवल
 स्नान ॥ भस्वयूय ॥ अयनाडिगास्ना
 न ॥ यूजन ॥ ॐ अलिस्नामूल ॥ ॐ मि
 वानामासि ॥ ॥ पूर्वस्य पूर्व ॥
 कुलस ॥ नाक्षसि ॥ धाल ॥ कोलस
 ॥ उदविस्वहन ॥ नालिकल ॥ मि
 दसि ॥ म्वात ॥ ॥ यूजन ॥ ॐ

समुद्रग ॥ ॐ सदाजाता ॥ ॥
 दक्षिणस्य दक्षिण ॥ सहस्रदा ॥ वच
 ॥ कविला ॥ अश्वत्थ ॥ कूकुरि ॥
 गुग्गु ॥ कर्कशसि ॥ कलुगिनि ॥
 यूनन्यन ॥ यूजन ॥ ॐ समुद्राय
 त्वा ॥ ॐ वाममद्य ॥ ॥ यक्षिम
 स्य यक्षिम ॥ मनभी ॥ हनिधन ॥
 हिगुवि ॥ वसाउरन ॥ गन ॥ गम
 लावन ॥ गन्धक ॥ वलन ॥ यूजन
 ॥ ॐ समुद्रज ॥ ॐ जागवद ॥
 ॥ ॥ डहनस्य डहन ॥ लू ॥ मि
 जल ॥ न्या ॥ खषभग ॥ डाहा ॥ कर्म
 लंठ ॥ द्या ॥ य ॥ कुल ॥ यूजन ॥ ॐ
 समुद्रादूर्ध्व ॥ ॐ यत्पूवर्ध ॥ ॥
 निर्वृत्तादि ॥ सूत्राय ॥ दवाग्य
 ०ति ॥ दवदवजगन्नाथ हृष्टिर्
 हानकावक ॥ निर्मिभार्य महाकव
 त्वदीयामूर्ध्वयगसा ॥ न्यूनागस्त्वा
 धिकागमवा वीगमवाविकलं क
 विग ॥ कलुमहसिगत्सर्वं संयुक्तं

सर्वगारव ॥ मिलिधा ममक्ति र
 वहु ॥ ॥ ॐ तत्त्वो जाति ॥ गिलड
 वगन ॥ कश्च यूजा याकादान कल
 सन त्वात ॥ १२ ॥ वद ॥ पूर्ववद
 ॥ ॐ वक्षवक्षसना ॥ आस्यय ॥ ॐ
 अयाउवस ॥ दक्षिण ॥ ॐ वनक्ष
 र्त्त ॥ नेमय ॥ ॐ अश्वकात्त ॥ ॥
 यक्षिम ॥ ॐ यतीर्थनि ॥ ॥ वायू
 य ॥ ॐ गन्धदाना ॥ ॥ डहन ॥ ॐ
 वीयधम ॥ ॥ वीभान ॥ ॐ हवि
 मती ॥ ॥ पूर्वस्य पूर्व ॥ ॐ यारुला
 नी ॥ ॥ दक्षिणस्य दक्षिण ॥ ॐ या
 डावधी पूर्व ॥ ॥ यक्षिमस्य यक्षि
 म ॥ ॐ दवीनाया ॥ डहनस्य डह
 न ॥ ॐ हिनक्षगर्त ॥ यर्के गथान
 त्वात ॥ ॐ यविगुक्षा ॥ भगधन ॥
 मूलमकुल ॥ ॐ वक्षयविगुमसि
 ॥ ॐ तिस्त्रानविधि ॥ ॥
 श्रीखलु कर्षून कस्तुरि कूकुरमवा
 ल ॥ लयनय ॥ वन्दनादि सगमन ॥

दवदष्टिवियक ॥ ॐ नमः ॥ स
हं आनयि ॥ दवडहान ॥ ॐ नमः
हं ता ॥ यजमानस्यं ज्ञानकं ॥
यजमानस्यं लीख भानथस्यं मधु
यनेमस्यं दानधर्मा ॥ ॥ तूलस
दवग ॥ भिन्नसिक्तुल ॥ दवधर्मा
॥ भिन्नसिक्तुल ॥ खगनखयकधं
॥ कवचमक्तुल ॥ तिलसतिडाक
लस्यन ॥ आभानभक्त्यादि ॥ च
व्युष्टिकायात्तं ॥ यद्यसनायन
मश ॥ अधानमूल यर्तुगनसंयु
क्त ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां तिडाकलसायन
मश ॥ आवाहन ॥ धनमूदा ॥ ॥
भिन्नसिक्तुल ॥ ॥ ॥ श्रीकृष्णाय
नमः ॥ भिमूर्ति ॥ चक्रद्वय ॥ चक्र
नक्त ॥ भिन्नसिक्तुल ॥ भूमि ॥ भूतका
॥ धर्म यागवतु तिडाकलसयुजा
॥ ॥ मूलमक्तुल ॥ राग ॥ ३ ॥

कल्याण ॥ खानतंभ ॥ लिंगसु वक्रवि
षु नूड कृशवसताथर्थ ॥ यर्तुगन
संयुक्त ॥ ॐ वायुवेनम ॥ तिडायातं
आकृति ॥ वाकृति ॥ श्रीकृष्णाय ॥
दवर्तुशर्मा ॥ नाडीसंभानदव ॥ द
वर्तुयवेनमूल कानधर्मा साधनया
य ॥ ॐ तूलसा ॥ वक्रयज्ञान ॥ वा
द ॥ ॐ तूलसा ॥ ॐ विष्णुलला ॥
नाति ॥ ॐ तूलसा ॥ ॐ नमः ॥ ४ सं
वाय ॥ भिन्न ॥ भिन्नसिक्तुल साधन ॥ म
क्तुल सहयादनभिन्नसिक्तुल भिन्नसिक्तुल
धर्मा ॥ वादनभिन्नसिक्तुल साधन ॥ आ
कृति धर्ममक्तुल ॥ धन ॥ धनसंयु
वानधिधीयंन ॥ दवधर्मा तिडाक
लसादकन श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण ॥
ॐ समकृदया ॥ ॥ दवाग्य
वेनवलिल्लय ॥ मूलन ॥ ॥
दवमदसंक्रियायाय शर्मा ॥ ॐ ॐ
साहा ॥ ॐ कृष्णसायानि ॥ यानिकला

ना॥ ॐ ह्रस्वादा॥ ॐ गर्शं श्रुत्या॥ ग
 र्शं श्रुत्या॥ ॐ नमोस्तु सूर्य॥ सर्वश्रुति
 रुक्ति कल्याता॥ ॐ मूलमस्तु॥ ॐ
 र्यं कामं कामय धव तम वाया सम
 द्यय॥ ॥ कामकल्याता॥ मूल॥
 ॐ शुभं कर्जजा॥ विष्णु॥ मूल॥ ॐ
 विश्वतश्चक्र॥ श्रुति॥ मूल॥ ॐ नमः
 सरुवाय॥ त्वच॥ मूल॥ ॐ सहस्र
 भीर्वा॥ भिनमूल॥ ॐ तनस्र मन्दी
 आवति आवा सूरस्या न्य सहतन
 त्सम आवति॥ कम॥ मूल॥ ॐ त
 निरु स्या॥ ललाट॥ मूल॥ ॐ उवा
 दिवि॥ मूकट॥ मूल॥ ॐ यावमा
 नि॥ श्रुति॥ मूल॥ ॐ श्रुत्य सहसा
 कर्मात्तमूर्ध्वं गंगया क्ष॥ सहस्रं
 याना॥ त्व० साहस्रस्य नाय णीमि
 यतमेतविधमवाजाय स्वादा॥ न
 ॥ मूल॥ ॐ श्रुति श्रुति॥ दृष्टि॥
 मूल॥ ॐ श्रुति श्रुति॥ दृष्टि॥

नी २ उवादि धुत॥ श्रुति श्रुति श्रुति
 सा श्रुति समस्त वादय॥ नामिका॥ मूल॥
 ॐ उवादि धुत॥ श्रुति श्रुति श्रुति
 वीनहस्त उवादि धुत॥ स्वस्ति यडा मा
 नस्य गृहा गङ्गा॥ डा ह॥ मूल॥ ॐ यत्तु
 वक्तु मृगं श्रुत्या दत्ता॥ गति॥ सप्तधा
 यति श्रुति॥ यज्ञानन॥ सक्त विवड
 वक्ति तन्नाम त्वमिषद॥ मर्म० सत्त॥
 दभन॥ मूल॥ ॐ तदवाति॥ डि का
 ॥ मूल॥ ॐ रुडं क॥ क॥ मूल॥
 ॐ नीलपीवा मिति क॥ गी वा॥
 मूल॥ ॐ वल विज्ञायक॥ स्क॥
 मूल॥ ॐ यावा युधि वृत्ति कारो
 चकंचनकृति॥ श्रुति श्रुति न० सि
 ० सनं यात्त० हस॥ शुद्धमय॥ मूल॥
 ॐ उवादि धुत॥ कर्मा॥ मूल॥ ॐ च
 लमा श्रुति कर्मा॥ श्रुति नीत स्वा॥
 मूल॥ गायत्री॥ ॥ हृदय॥ मूल॥
 ॐ उवादि धुत॥ जेवा दृष्ट श्रुति
 ॐ काष्ठ काष्ठ ३॥ श्रुति॥ मूल॥ १
 ॐ या गायत्री॥ कर्मा॥ श्रुति मूल॥ २

नक्त ४८॥ आसिकल्यतां द्यावापृथिवी
कल्यतामाधाडाषवयः ४ कल्यतामस
यः ४ समना नाद्यावापृथिवी ॥ ० ॥
ॐ आ दृष्टं श्रीकल्यमाना ॥ ० ॥
वदवा श्रीविभक्तुगया दवताया
शिवस्वदुवसीदगी ॥ कलिदय ॥
मूल ॥ ॐ ॥ दनति ॥ वका मूल ॥ ॐ
विष्णु ललाट ॥ मतो ॥ मूल ॥ ॐ वन
त्यतिवव सृष्टीनया ॥ ॐ समन्या समउं
कर्मितादव ॥ ॐ सुसदवो ॥ ० ॥
ॐ न ४ स्वदायकं मधुना दृष्टन ॥ ॐ
० न ॥ मूल ॥ ॐ मानसाक ॥ श्रीकृष्ण
॥ मूल ॥ ॐ श्रीविभक्तुगया दवताया
मयजयक मूळ ॥ ॐ मयिनी द्यकनल
द्विषदा मनूयानूयजयतां तानूक्य
विष्णु शकनल ॥ ॐ कानूदजयता
नूक्य ॥ ॐ न ॥ मूल ॥ ॐ वदय
कान ॥ नालि ॥ मूल ॥ ॐ दूया यवेश

कनल यवेश दिग उदजयता मूळ
ॐ सविता यकनल सकणम्यात्य
नूदजयता नूक्य ॥ ॐ दृष्टतिव द्यक
नल मयजयता मूळ ॥ ॐ व
क्ति ॥ मूल ॥ ॐ आनारुडा ॥ गुह्य ॥
मूल ॥ ॐ दिवत्तयन दार्ज ॥ मखं गु
ह्य ॥ ॐ मूल ॥ ॐ मुर्कित मय्य
जगत्त मय्य मय्य निविष्ठादिमा
या मय्य मय्य ॥ रुडाग यूसानी दनागी
नक्त ॥ मुक्त ॥ मूल ॥ ॐ आनामिग
वद्वल दृष्टं गयति मूळ ॥ मय्य न
जाति मूळ ॥ ॐ उदय ॥ मूल ॥ ॐ
श्रीविभक्तुगया मय्य मय्य ॥ ॐ द्यक
मायमव द्याहामि ॥ श्रीविभक्तुगया मय्य
नगाया मय्य द्यक्य ॥ ॐ द्यक्य
मय्य मय्य द्याहामि ॥ ॐ नूदय ॥
मूल ॥ ॐ सन्ना द्यवी ॥ गुह्य ॥ मूल ॥
ॐ मय्य ॥ ॐ द्यवी ॥ मूल ॥ ॐ ॥ द्यवी

विष्णु ॥ वादगलो ॥ मूल ॥ ॐ यकेनय
 ॥ वादीगुलि ॥ मूल ॥ ॐ गजासि ॥ वा
 दीगुलिनखा ॥ मूल ॥ ॐ श्रीमिद ॥ ला
 मानि ॥ मूल ॥ ॐ अदीदहि नवकी द
 क मूले मृदमन्वेक गमन् ॥ ॐ ह्या ॥
 सनसत्या ॥ ॐ जि ॥ जि काया ॥ ॐ त्सा
 दनवकन्दनगालूबाज ॥ ॐ हनूत्याम
 य श्रीमन्वदयधमाया मादित्या ॥
 ॐ लि ॥ यन्मन ॥ ॐ र्या द्यावापृथिवीव
 र्माया विद्युर्कनीनकाया ॥ ॐ शुक्राय
 स्वाहा कृष्णाय स्वाहा वार्यानि यन्मा
 धवाया ॥ ॐ कृष्णवाया नि यन्माधिया
 र्या ॥ ॐ कृष्णवश ॥ ॐ मयूष्मि ॥ ॥

ॐ ॐ वी वामधवाय उरुनवकाय
 नमः ॥ ॐ शुक्र ॥ ॐ ॐ ध्यान ॐ उरु
 जिनमयूष्मिकदहाय नमः ॥ ॐ यूष्म ॥
 स्वाहा कृष्ण ॥ ॐ वद ॥ ॐ स्वस्ति न ॐ
 ह्या ॥ ॐ यव ॥ ॥

ॐ ॐ नृधाराय दक्षिणवकाय नमः
 ॥ ॐ स्व ॥ ॐ ध्यान ध्यान नमः ॐ कालिति
 जिस्वाय भवीननयन कल्याणाय नमः ॥
 ॥ ॐ यूष्म ॥ स्वाहा कृष्ण ॥ ॐ वद ॥
 ॐ माहिर्मा ॥ ॐ मन्म ॥ ॥

ॐ ॐ यत्ननूवाय पूर्ववकाय नमः
 ॥ ॐ गत्तविदु ॥ ॐ ॐ सर्वतसर्वसर्व
 ॐ विंगलकवचाय जातकर्मथनम
 ॥ ॐ यूष्म ॥ स्वाहा कृष्ण ॥ ॐ वद ॥ ॐ
 ॐ ध्याय स्वाहा ॥ जातकर्म ॥ कावउडा
 ल ॥ ॥ ॥ ॐ वध
 ॥ ॐ ॐ ईस ॥ ध्याय नूवाय नमः ॐ नमः
 यन्मीमीलनाय नमः ॥ ॐ यूष्म ॥ स्वाहा
 कृष्ण ॥ ॐ वद ॥ ॐ वक्रयन्मी ॥ नि
 क्रम ॥ ॥ ॥ ॐ धव
 ॥ ॐ ॐ नमः ॐ वद ॐ क्रमहाया ॐ
 यगाकाय श्रीकाय नमः ॥ मूलमन्म
 ॥ ॐ यूष्म ॥ स्वाहा कृष्ण ॥ ॐ काय

ॐ तत्सविदु ॥ ॐ कौतत्तमस्तु नूड नूयकु ४
महायात्रायामस्तु २ ॥ संयुक्त ॥

स्वाहा ॥ तामकवर्ण ॥ यथाशक्त्यनामः ॥

ॐ स्वामी नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वान्
कृपाया यत्नमः ॥ सर्वेषु ॥ स्वात्मकं कृत्वा
॥ वद ॥ ॐ या रुलनी ॥ रुलयाभन ॥

ॐ मिथा जान ॥ ॐ ज्ञां श्रुधान ज्ञां सर्व
त्मन रुद यायनमश ॥ सैयूय ॥ स्वाहा
क हूत्वा ॥ वद ॥ ॐ श्रुतयन ॥ श्रुतया
भन ॥ वनू ॥ ॥ ॥

ॐ षष्ठादयात् ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
था क मस्तु वास्तु नूतन ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
मस्तु ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
ॐ मूर्धनानि ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
ॐ ज्ञानमस्तु नूतन ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन ॥

ॐ व न ल्प ॥ ॐ ज्ञां कं ॐ श्री भनाय दुर्द्ध
व काय नमः ॥ संयुक्त ॥ स्वाहा न क दूत्वा
॥ वद ॥ ॐ वर्ग क लूत ॥ व न व न्धन ॥
य क्ता य वीत ॥ गायत्री यु दान ॥ यथा द
व स्य ॥ ॥ ७ ॥ ॥

ॐ रुद्रक (६) ॥ कर्तुं वय ॥ लूँडाहा मूल ॥ ८

ॐ रुद्रोदय ॥ ॐ ज्ञां सर्वग सर्वसर्व
 कथिं गलक वचाय नमः ॥ सर्वं यथा ॥ त्वा
 हा न कुरुत्वा ॥ वद ॥ ॐ वाग नदी का ॥
 वद दी का ॥ मनु का न ॥ ७ ॥

ॐ ह्यधीमहि ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
 ॐ ४ मस्तु या शुभतास्तु यतमस्तु ॥ सर्व
 ॐ ॥ स्वाहास्तु कृत्वा ॥ वद ॥ ॐ श्रीगुरु
 ॥ समावर्तन ॥ ॥

ॐ विद्या जानना ॥ अध्यान मूल मन्त्र ॥
 अध्यान श्रवणी ॥ संयुक्त ॥ स्वाहा नमो
 ॥ गृह्याय कनका ॥ काय रंजित ॥ ॐ श्री
 कृष्ण ॥ भगवद्गीता ॥ ॐ मित्रा नामा
 मित्र ॥ अनिनीतलाय ॥ ॐ तव वायु ॥
 हाहा ॥ वत्सावन ॥ ॐ गाना नमिन् ॥
 रुषिनी ॥ ॐ शुर्वकी जजा ॥ विवाहा ॥

ॐ यथादयात् ॥ ॐ ज्ञानमस्तु नूतन
यजः महावायुयामास्तु यजः
नमः ॥ संपूर्ण ॥ त्वादाकं कृत्वा ॥ सिद्ध

ध्वजध्वजव वक्रजिला वल्लजिला
 नतावसाधनय ॥ वक्रजिला वल्लजिला ॥ मू
 लन ॥ वक्रजिला वल्लजिला ॥ वक्र ॥ ॐ
 श्रीवक्रवक्रवक्रवक्रवक्रवक्र ॥ ॐ वक्रमंद
 वादि ॥ ॐ जौ वक्रयीभसनायनम
 ॥ ॐ जौ वक्रमूर्तियनम ॥ ॐ जौ व
 क्रयीभयनम ॥ ॐ वक्रजिलायन
 म ॥ ॐ जौ वा ददयादि संयुक्त ॥ श्री
 कृति २॥ वल्लजिला ॥ ददयादि व
 ॐ ग ॥ ॐ जौ यीभसनायनम ॥ ॐ जौ
 यीभमूर्तियनम ॥ वा ॥ वक्रग
 वक्र ॥ श्रीकृति २॥ श्रीवाक्र ॥ वक्र
 जिला वक्रन ॥ ॥ वक्रजिला वक्र
 यन वाक्र ॥ ॐ जौ वक्रमूर्तिजिला व
 य सर्वकृत्यमिताम ॥ वृथिवी वाय
 गजय वीयनाकाशभवच ॥ यावति
 क्षितिगतस्य तावत्त्वमचलाश्रव ॥ कि
 नारुवक्रधवा कृगवक्रमिवाकृ

[illegible]

श्रुतं धनमूजा ॥ ॐ ज्ञा सर्ववत्ता
 वधीत्यादि वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥
 कृष्णकंगत्वा नवदागव्यं ॥ धूम्रं ॥ ॥
 नत्तादि विसर्जुनं ॥ ॐ ज्ञा श्रुताय
 रुद्र ॥ विसर्ज ॥ ॥ गमायमिता वादा
 व ॥ नत्तादि द्यूदीदि मध्याह्नं ॥ न्यासादि
 कं कृत्वा ॥ हव ॥ लं ॥ हविता न ॥ छा ॥ उ
 मल ॥ पूर्व काथसर्ग ॥ मन्त्र ॥ ॐ ज्ञा लं
 नत्तदव्यभातु अवधी हं रुद्र विनक्ति
 गोरुवत्ताहा ॥ पूर्व ॥ १ ॥ सूर्यकान्तिमि
 जल ॥ मन्त्रमोल ॥ दामल ॥ माधव ॥ ॐ
 ज्ञा नत्तदव्यभातु अवधी हं रुद्र विनक्ति
 गोरुवत्ताहा ॥ श्रुतय ॥ २ ॥ नील ॥ कं
 मर्ल ॥ वल ॥ मास ॥ विष्णुकात्ता ॥
 ॐ ज्ञा मं नत्तदव्यभातु अवधी हं रुद्र विन
 क्तिगोरुवत्ताहा ॥ दक्षि ॥ ३ ॥ ॐ रुद्र
 नील ॥ डाहा ॥ सुवर्णमाकि ॥ मंग ॥ न
 कचन्दन ॥ ॐ ज्ञा कं नत्तदव्यभातु म
 धी हं रुद्र विनक्तिगोरुवत्ताहा ॥ ४ ॥ न

महा ॥ ४ ॥ मूर्ति ॥ लाति ॥ वाधन ॥ कठ
 तुलि ॥ श्रुत ॥ ॐ ज्ञा वं नत्तदव्यभातु
 वधी हं रुद्र विनक्तिगोरुवत्ताहा ॥ ५ ॥
 पृथ्वीनाग ॥ कंम ॥ धिन् ॥ लं ॥ श्रीखलु
 ॥ ॐ ज्ञा यं नत्तदव्यभातु वधी हं रुद्र वि
 नक्तिगोरुवत्ताहा ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ यदना
 ग ॥ धूल ॥ गन्धक ॥ ज्ञाहावा ॥ ६ ॥ काल
 त ॥ ॐ ज्ञा तं नत्तदव्यभातु वधी हं रुद्र
 विनक्तिगोरुवत्ताहा ॥ उक्त ॥ १ ॥ व
 द्य ॥ न्या ॥ हियति ॥ लं ॥ अवो ॥ कूट ॥
 ॐ ज्ञा हं नत्तदव्यभातु वधी हं रुद्र वि
 नक्तिगोरुवत्ताहा ॥ ७ ॥ ॐ भान ॥ ८ ॥
 लं सर्ववादि ॥ वाधन ॥ गालक ॥ नैख
 पृथ ॥ सदयवा ॥ ॐ ज्ञा ज्ञा नत्तदव्यभा
 तावधी हं रुद्र विनक्तिगोरुवत्ताहा ॥
 मध्य ॥ धर्मेन धर्म ॥ ९ ॥ ॥ यून ४ य
 जनयाय ॥ मन्त्र ॥ ॐ ज्ञा न न्याये नम
 ४ ॥ पूर्व ॥ ॐ ज्ञा रुद्राय नम ४ ॥ दक्षि ॥
 ॥ १ ॥ ॐ ज्ञा ज्ञाय नम ४ ॥ दक्षि ॥ ३ ॥
 ॐ ज्ञा वि कारये नम ४ ॥ उक्त ॥ ४ ॥ ॐ

[illegible]

धियतय भवा नूराय नमः ॥ नमः ॥
 ४॥ ॥ ॐ जौ वाँ वाँ वूँ वाँ वनूँ शयया
 भद्रकाय जलाधिया ॥ धूय मकरा
 सनाय नमः ॥ ५॥ वनूँ ॥ ॥ ॐ जौ वाँ
 यौ यूँ यौ वायय धजद्रकाय यवता
 धियतय धूय मृगनूराय नमः ॥ वायय
 ॥ ६॥ ॥ ॐ जौ सौ सौ सौ सौ वै शवना
 यगदाद्रकाय धनाधिया ॥ धूय भवा
 नूराय नमः ॥ कवना ॥ ॥ ॐ जौ सौ
 सौ सौ सौ शानाय शिबुलद्रकाय त्र
 ताधि धूय यतय भवा नूराय नमः ॥ शी
 भन ॥ ७॥ ॥ ॐ जौ जौ सौ सौ सौ सौ
 मलारुनवाय नमः ॥ मध्य ॥ ॥ ॐ जौ
 हदयाय नमः ॥ ॐ जौ भिनस स्वाहा ॥
 ॐ सौ भिस्वाय वायट् ॥ ॐ जौ कववाय
 सौ ॥ ॐ जौ नकुग याय वायट् ॥ ॐ जौ
 श्रुकाय रुट् ॥ ॐ जौ गनसंयुक्त ॥ श्रावा
 द ॥ ॐ जौ मूजं यदभय ॥ ॥ ॐ
 वसु भिलानत पूजनं ॥ ॥ ॥
 तमापूर्ववत् ॥ वामादिता ॥ वा मावर्क

न संयुक्तः॥ यत्नः ददयादि संयुक्तः॥ आ
 वाहनादि संयुक्तः॥ लूयतिनयाय॥ अथ
 वाभिडल यतिनः॥ अथवा नायूकायाल
 नः॥ वक्रमिलायायूयावः॥ लिंगकायन
 याय॥ आधनः॥ लूकर्षमस यजमान
 नयनागशुकनदयक श्रीगुलिः॥ थपू
 जा भक्तिमल्लूकूटनः॥ संते॥ संददया
 यतमः॥ रूपादिषु उगनसंयुक्तः॥ आ
 वाक् यातिमूजा॥ आकृतिः॥ ३॥ पूर्वः॥
 अद्वासनः॥ धवर्त्तः पीठिकाती॥ यत्न
 मल्लू॥ उं कानासनायतमः॥ आमल्लू॥
 उं आधनभक्तयतमः॥ अतकासनः॥
 कीदा॥ नाला॥ यजा॥ कभना॥ कर्षिका
 ॥ उं कौ वल्लू मल्लूलायतमः॥ उं वल्लू
 मल्लूलायितय वक्रः॥ तमः॥ उं कौ सूर्य
 मल्लूलायतमः॥ उं कौ सूर्य मल्लूला
 यितय विष्णुवतमः॥ उं अग्निमल्लू
 लायतमः॥ अग्निमल्लूलायितय नू
 दायतमः॥ उं कौ मल्लूलायतमः॥

कौ ३

उं कौ मल्लूलायितय रूपाय
 तमः॥ उं कौ भक्तिमल्लूलायतमः॥ उं
 कौ भक्तिमल्लूलायितय सदाभिवा
 यतमः॥ उं कौ वृषासनायतमः॥ अथ
 मध्वस आसनयूजा॥ जलदलितक
 ॥ पीठिकासयूजा॥ धर्मादिः॥ ४॥ पूर्व
 दक्षिण वक्षिभावनः॥ अथमादिः॥ ४॥ अ
 ग्निनेमल्लू वायू रूपायतमः॥ ४॥ उं कौ वा
 मायतमः॥ उं कौ अश्वीनमः॥ उं कौ
 श्रीडीतमः॥ उं कौ अग्निकार्यतमः॥ उं
 कौ कालीतमः॥ उं कौ वल्लूविकल्लूत
 मः॥ उं कौ वल्लूयमथनीतमः॥ उं कौ
 सर्वरूपादमनीतमः॥ उं कौ मनीतमः॥
 तमः॥ पूर्वदि मध्वर्त्तः॥ ॥
 तमा रूपादिः॥ उं लू रूपायतमः॥
 रूपादि पूर्वदि रूपायतमः॥ ददया
 दिसंयुक्तः॥ कल्लूर्त्तः सातवी॥ ॥
 कल्लूभा॥ ४॥ उं कौ काना रूपायतमः
 ॥ उं कौ काना रूपायतमः॥ पूर्वः॥ ॥

ॐ कौं दक्ष ऋवाय १॥ ॐ कौं सूर्य ऋ
नमः॥ दक्षिण॥ ॥ ॐ कौं ऋ ऋवा
य १॥ ॐ कौं मध्व ऋवाय १॥ यक्षिमा॥ ॥
ॐ कौं गर्ग ऋवाय १॥ ॐ कौं मित्रा
ऋवाय १॥ उक्तन॥ ॥ गङ्गा॥ उक्त
ना॥ सनखी॥ गन्दावनी॥ ४॥ पूर्वा
दि॥ ॥ श्री कृष्ण॥ भक्तन॥ नक्त॥ सा
दाक्ष॥ ४॥ पूर्वादि दद्यादि॥ ६॥ आ
वाहतादि कलस पूजा॥ अथानमू
लमकुलसायनं॥ ॐ कौं ॐ अथान
कौं थथान कौं थथान नक्तनं ॐ ॐ स
र्वत सर्व सर्व ॐ ॐ स ॐ नूद वृष ४८
थी स्वच्छन्दमहादेव वाय सदा मित्राय
स्वायनसमूहोक्तु॥ स्वस्ति वाचन॥ ॥
॥ ॥ सप्तलहरी वादिनं॥ ॥
यी० कास्तयन॥ ॐ कौं भक्तत्रिपूज
य १ स्वादा॥ यी० कास्तय॥ मध्वका
स्तनरावनं वीकलिलिगस्तय॥ वदा
दि य० ७॥ यी० कास्तय॥ ॐ कौं कौं

ॐ कौं भक्तयनमः॥ ॐ कौं कौं कौं कौं
कय १॥ ॐ कौं कौं कौं कौं कौं कय १
॥ ॥ यत्तः शक्तिगपूजन॥ विष्णुमित्रति
॥ ३॥ अथानमूल॥ वक्तृन्यास॥ वक्तृ
मन्यामनविद्यमत्त॥ वृषयतिमन
दत्ता॥ कृष्णकर्तृतातयं यथस्तन
स्तु॥ ॥ तातः शक्तियवक्तृकनविद्य
मत्त॥ ॐ कौं दक्षिणत्वाय १॥ ॐ कौं द
क्षिणत्वाधियतयवक्तृ (११॥ वाद॥
॥ ॐ कौं अथानत्वाय १॥ ॐ कौं अथान
त्वाधियतयविद्यवतमः॥ १॥ जान्
॥ ॥ ॐ कौं गङ्गात्वाय १॥ ॐ कौं गङ्गा
त्वाधियतयवक्तृय १॥ ३॥ नास्ति॥
ॐ कौं वायुत्वाय १॥ वायुत्वाधिय
तयवक्तृय १॥ ४॥ दक्षिण॥ ॥ ॐ कौं
आकाशत्वाय १॥ आकाशत्वाधिय
तयसदा मित्राय १॥ ललाट॥ ७॥ गंगा
न्यासपूजयतिमनं दत्ता॥ कृष्णकर्तृ
गत्तास्तयं॥ ॥ दक्षिण॥ यत्तः शक्त

लायादिवादयर्थक ॥ यथ्युति सर्वद
 लाविन्यसत् ॥ कृष्णकर्म गत्वा सातव्यं
 ॥ सृष्टिकर्म ॥ यवसमीयगत्वा ॥ त
 त्वयन न्यसत् ॥ मूर्तिसह ॥ ॐ ज्ञा
 आत्मतत्वाय ॥ ॐ ज्ञा आत्मतत्वाधि
 यतय उक्त ॥ ॐ ज्ञा आत्मतत्वाधि
 ॐ ज्ञा आत्मतत्वाधि यतय सर्वय ॥
 ॐ ज्ञा वक्तिमूर्तिय ॥ ॐ ज्ञा वक्ति
 मूर्तिय विवतय यथ्युति ॥ ॐ ज्ञा
 जजमानमूर्तिय नम ॥ ॐ ज्ञा जजमा
 नमूर्तिय विवतय उक्तय ॥ ॐ ज्ञा मू
 र्कमूर्तिय ॥ ॐ ज्ञा मूर्कमूर्तिय विव
 तय नूजाय ॥ ॐ ज्ञा जलमूर्तिय ॥
 ॐ ज्ञा जलमूर्तिय विवतय रुवाय ॥
 ॐ ज्ञा वायूमूर्तिय ॥ ॐ ज्ञा वायूमू
 र्तिय विवतय ॐ भनाय ॥ ॐ ज्ञा
 ॐ लुमूर्तिय नम ॥ ॐ ज्ञा ॐ लुमूर्त
 य ॥ ॐ ज्ञा ॐ लुमूर्तिय विवतय स
 साधवाय ॥ ॐ ज्ञा स्वमूर्तिय ॥ ॐ

ज्ञा स्वमूर्तिय विवतय रीमाय ॥ विन्य
 साय यथ्युति सर्वदला ॥ वादादिनाति
 यर्थक ॥ उक्तय ॥ ॐ ज्ञा उक्तय
 यादादिमूर्तिय तत्वा ॥ यंमादिधाम
 निर्मक ॥ यावत्य ० गिनूयत ॥ तावत्का
 लं त्वया कृणु क्ताय चै मिवाकृया ॥
 आत्मतत्वा ॥ ॥ ॐ ज्ञा विद्यातत्वाय ॥
 ॐ ज्ञा विद्यातत्वाधि यतय विबुध ॥
 ॥ ॐ ज्ञा आत्मतत्वाय ॥ ॐ ज्ञा
 आत्मतत्वाधि यतय सर्वय ॥ ॐ ज्ञा
 दि मूर्तिय ॥ ॥ ॐ गिनूतिय य
 यथ्युति सर्वदला विन्यस्य ॥ नात्यादि
 शिवार्क ॥ ॐ ज्ञा विद्यातत्वा दद
 मूर्ति मूर्ति यव सत् ॥ यंमादिधाम
 निर्मक ॥ यावत्य ० गिनूयत ॥ तावत्का
 लं त्वया कृणु क्ताय चै मिवाकृया
 ॥ कृष्णकर्म गत्वा सातव्यं ॥ विद्यात
 त्वतत्वा ॥ ॥ ॐ ज्ञा मिवतत्वाय

[illegible][illegible]

ॐ ज्ञां प्रकृतिरत्नाय १॥ ७॥ ॐ ज्ञां ॐ
 श्वनरत्नाय १॥ ॐ ज्ञां आसूक्ति १॥ ॐ
 ज्ञां आसूक्ति विषयसर्वय १॥ मूर्ति
 ८॥ इति ॥ कृष्णकर्णगत्वा हातव्यं ॥
 ॐ श्वशग ॥ ७॥ ॐ ज्ञां प्रकृतिरत्नाय
 य १॥ ॐ ज्ञां यनूयत्नाय १॥ ॐ ज्ञां
 नागत्नाय १॥ ॐ ज्ञां नियतिरत्नाय
 नमः १॥ ॐ ज्ञां असूक्तिरत्नाय १॥ ॐ ज्ञां
 विद्यात्नाय १॥ ७॥ ॐ ज्ञां भद्राशिव
 रत्नाय १॥ ॐ ज्ञां आसूक्ति १॥ ॐ ज्ञां
 आसूक्ति विषयसर्वय १॥ मूर्ति ॥
 ८॥ ललाट ॥ कृष्णकर्णगत्वा हातव्यं
 ॥ भद्राशिवशग ॥ ७॥ ॐ ज्ञां कला
 त्नाय १॥ ॐ ज्ञां कालरत्नाय १॥ ॐ भ
 वात्नाय १॥ ॐ ज्ञां संज्ञाविद्यात्नाय
 य १॥ ॐ ज्ञां ॐ श्वनरत्नाय १॥ ॐ ज्ञां
 सदाशिवरत्नाय १॥ ॐ ज्ञां भक्तिरत्नाय
 य १॥ १॥ ॐ ज्ञां निनउरुन श्वनायस
 र्वरत्नाय १॥ ॐ भन मूर्ति ॥ ॥

कृष्णकर्णगत्वा हातव्यं ॥ ॥ निनउरु
 न ॥ बट्टिभतिरत्नाय ॥ लिंगमा ७
 य १॥ ॥ ॐ ज्ञां शिवरत्नाय १॥
 कृष्णकर्णगत्वा ॥ पूर्विकविधिना
 ॥ ॥ शिवरत्न ॥ अष्टमूर्ति ॥ ८ ॥
 जिन १॥ विद्यात्न ॥ अष्टमूर्ति ॥ ८ ॥
 इति ॥ आन १॥ अष्टमूर्ति ॥ ८ ॥
 आधनरुद्रि ॥ मूलमक्तं भिनति
 पूजनयाय ॥ वक्तृत्वा ॥ दद यदि
 बर्णगत्वा सर्वय ॥ कृष्णकर्णगत्वा हा
 तव्यं ॥ ॥ यन १॥ धीका पूजा ॥
 ॐ ज्ञां पृथीरत्नाय विषयसर्वय १॥
 ॐ ज्ञां श्वनरत्नाय विषयसर्वय १॥
 ॐ ज्ञां रत्नरत्नाय विषयसर्वय १॥
 ॐ ज्ञां वायुत्नाय विषयसर्वय १॥
 ॐ ज्ञां आकाशरत्नाय विषयसर्वय १॥
 ॥ कृष्णकर्णगत्वा हातव्यं ॥ धीकाय
 न १॥ लिंगमसर्वय ॥ ॐ ज्ञां ॐ श्व
 नमः १॥ पथम ॥ ॐ ज्ञां कालाय १॥ न

मूल षष्ठं गताद्यं यातुं सूक्तं ॥ आवाह
यन्मूला ॥ आवाही न रूपादि ॥ ॐ ज्ञा
मिरवाताथयविद्युदं स्वच्छत्यायधीम
हं गता नूतयुवाद्या ॥ गतात्मादिस
र्वथाकृत् ॥ अर्थया ॥ रूपादि ॐ ज्ञा
षट् ॥ ६ ॥ आवाहादि मूला न मूलनमू
ला मूला ॥ चन्द्रनादि रूपा ॥ धवस्व
नूवात्मानं विविच्य ॥ ॐ ज्ञा धर्माय ॥
रूपादि ॥ सूक्तं ॥ ॥ गताद्यानमू
ला ॥ ॐ ज्ञा नन्दि न नमः ॥ ॐ ज्ञा महा
कालाय ॥ ॐ ज्ञा रूपाय ॥ पूर्व ॥ ॥
ॐ ज्ञा विनायकाय ॥ ॐ ज्ञा विद्यादा
नाय ॥ दक्षिण ॥ ॐ ज्ञा वृषासनाय ॥
॥ ॐ ज्ञा स्वत्याय ॥ ॐ ज्ञा निवृत्तिदा
नाय ॥ पश्चिम ॥ ॥ ॐ ज्ञा धर्म ॥
ॐ ज्ञा चतुर्थ ॥ ॐ ज्ञा पश्चिमाद्याना
य ॥ उत्तर ॥ ॐ ज्ञा लू रूपाय ॥ रू
पादि ॥ १० ॥ ॥ ॐ ज्ञा कीर्त्यादाय
वाय ॥ ॐ ज्ञा कूर्मासनाय ॥ ॐ ज्ञा

आवाहनकथ ॥ रूपादि ॥ ॐ ज्ञा च
तुमलुलाय ॥ ६ ॥ ॐ ज्ञा च तुमलु
ला विषय वक्ता सनाय ॥ ॐ ज्ञा
सूर्यमलुलाय ॥ ॐ ज्ञा सूर्यमलुला
विषय विष्णु सनाय ॥ ॐ ज्ञा व
क्तिमलुलाय ॥ ॐ ज्ञा वक्तिमलुला वि
षय नूतय सनाय ॥ ॐ ज्ञा भक्ति
मलुलाय ॥ ॐ ज्ञा भक्तिमलुला वि
षय रूपाय सनाय ॥ ॐ ॥
ॐ ज्ञा च तुमलुलाय ॥ ॐ ज्ञा च तु
मलुला विषय भक्तियोग सनाय
नाय ॥ ॐ ज्ञा वृषासनाय ॥ ॐ ज्ञा
सिंहासनाय ॥ ॐ ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा
स्वभय आगच्छ ॥ साक्षात् ॥ ध्यान ॥
यत्केवकुं दमलुला विषय नयभा
वर्त्त ॥ पूर्वपीठान्तरात् दक्षिण
नीलमालिनी ॥ उत्तरनकावर्त्तुके
पश्चिम स्वतः समुद्र ॥ उत्तरदिक
संकाशं यत्केवकुं महेश्वरं ॥ कथ

दू बाल चन्दन (धारा) सर्व सुख
 मूलं उमल यद्विच भक्तिमाला रुदकि
 (ला) वाभारय वनद वर वीज खर्षी
 ग वाम धा । महागड मधुभर्त सचि
 द्विचैर कानर्षी । सर्व या य विनिर्मुक्त
 मिखा स्रुतु रैनव । उर्व आत्मा म
 हाधर्व सर्व काम रुतु यद्वि । ध्यान
 मूलमकुल संपूष्य । तगा कभन वू
 ॐ जां वामाय १ ॥ ॐ जां अष्टाय १ ॥
 ॐ जां नोडी १ ॥ ॐ जां अम्बिकाय १ ॥
 ॐ जां काली १ ॥ ॐ जां बलविकर्षु
 ये १ ॥ ॐ जां बल प्रमथनी १ ॥ ॐ जां
 सर्व सुख दमनी १ ॥ ॐ जां मनात्मनी
 नमः ॥ मूलमकुल ॥ ॥
 ॐ जां अंबिकायली अमितांग रैनवा
 य १ ॥ ॐ जां कं माधुवनी वरु रैनवा
 य १ ॥ ॐ जां वं कामानी वरु रैनवा य १
 ॥ ॐ जां टं वैशुवी काध रैनवा य १ ॥ ॐ
 जां गं वानाही उन्नत रैनवा य १ ॥

ॐ जां यं नृ तायली कयाली रैनवा
 य १ ॥ ॐ जां यं वामधु रीव रैनवा
 य १ ॥ ॐ जां मं महालक्ष्मी सदान रैन
 वा य १ ॥ अष्टय वू ॥ ॥ तगा वनी
 सि ॥ वनी भीषण वू ॥ ॐ जां अत्रधुय १
 ॥ ॐ जां धा वधुय १ ॥ ॐ जां नमस्तना
 भय १ ॥ ३ ॥ ॐ जां जां सुमखाय १ ॥
 ४ ॥ ॐ जां थदु मूखी १ ॥ ५ ॥ ॐ जां धा
 वलाय १ ॥ ६ ॥ ॐ जां न ववनी १ ॥ ७ ॥
 ॐ जां की धा प्रमथनाय १ ॥ ८ ॥ ॐ जां
 धा धा नाय १ ॥ ९ ॥ ॐ जां न सा म्याय १
 ॥ १० ॥ ॐ जां धा री माय १ ॥ ११ ॥ ॐ जां
 - - - - - ॥ १२ ॥
 ॐ जां न जयाय १ ॥ १३ ॥ ॐ जां नं विज
 याय १ ॥ १४ ॥ ॐ जां नं अडिताय १ ॥
 १५ ॥ ॐ जां नं अवनडिताय १ ॥ १६ ॥
 ॐ जां समहालक्ष्मीय १ ॥ १७ ॥ ॐ जां व
 विनूया काय १ ॥ १८ ॥ ॐ जां न भुक्ताय १
 ॥ १९ ॥ ॐ जां सचा काम मात नाय नमः ॥

१०॥ ॐ ज्ञां सर्वसंनिधी १॥ ११॥ ॐ ज्ञां
संज्ञासंनिधी १॥ १२॥ ॐ ज्ञां सर्वदृष्टाली १
॥ १३॥ ॐ ज्ञां सर्वसूक्ष्मवर्गी १॥ १४॥ ॐ
ज्ञां विविचिती १॥ १५॥ ॐ ज्ञां सर्वव्यस
निधी १॥ १६॥ ॐ ज्ञां सर्वमनी १॥ १७॥
ॐ ज्ञां सर्वसंनिधी १॥ १८॥ ॐ ज्ञां सर्व
रुजये १॥ १९॥ ॐ ज्ञां सर्वरुजय १॥
२०॥ ॐ ज्ञां सर्वरुजयमाय १॥ २१॥ ॐ
ज्ञां क११ सर्वरुजय १॥ २२॥ वतिनी
यागिनी ॥ मूलमनु ॥
ॐ ज्ञां यदि यदादि तिथिस्था १॥ ॐ ज्ञां
मृष्टविभक्तिनकृष्ण १॥ ॐ ज्ञां विस्त
रादि यागस्था १॥ ॐ ज्ञां आदि त्यादित
वगृहस्था १॥ ॐ ज्ञां मूद्रकस्था १॥ मूल
मनु ॥ ॥ ॐ ज्ञां लूँ रूँ द्याय १॥ रूँ
त्यादि ॥ १०॥ ॥ ॐ ज्ञां जयावदभ
भनाय १॥ ॐ ज्ञां कालदक्षभभना
वियतय १॥ ॐ ज्ञां कालवाभभभना
वियतय १॥ ॐ ज्ञां लक्ष्मीवनभभना

वियतय १॥ ॐ ज्ञां ॥ पूर्वदक्षिणव
द्विभाजन ॥ ॥ ॐ ज्ञां धूमाकृतभ
भनाय १॥ ॐ ज्ञां अभियतभभना
य १॥ ॐ ज्ञां महाभभभनाय १॥ ॐ ज्ञां
रुतनाथभभभनाय १॥ अग्निनेमत्यवा
यूय रूँ भन ॥ दानवसूय ॥ ॥
वत्तनाकृतमादाय ॥ अग्निनमूलमनु
न ॥ सीमिस्वास्त्युक्तमहादेववायस
दामिवाय १॥ प्रियाडेती ॥ ३ ॥ दाना
त्यक्तन ॥ ॐ ज्ञां ददयाय १॥ रूँ त्यादि
वर्तुग ॥ नेमत्य अग्नि वायू रूँ
भन ॥ रूँ द्याय ॥ आवाह ॥ लिंगयानि
मडा ॥ ॥ ॐ ज्ञां नेवर्द्यगृह १॥ स्वा
हा ॥ वलिर्क ॥ वलिर्पचर्क ॥ ॐ ज्ञां क
व्यालायवलिर्गृह १॥ स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां स
र्वस्थास्तथावलिर्गृह १॥ स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां
वैवदकायवलिर्गृह १॥ स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां
सर्वयागिनीयावलिर्गृह १॥ स्वाहा ॥
ॐ ज्ञां पूर्वदिगीभमाहगलवूदया

गिती एत न कृत्वा नी यक न कृ गन्ध
 वृषा विभाचय ४ ॥ १०४ ॥ वलि पूजां गृह
 नमः स्वाहा ॥ ॥ कृष्ण कर्ण गला
 हातय ॥ ॥ स्त्रिनाश्रुति ॥ १०५ ॥ ॐ स्त्रिना
 रुव विष्टुंग ४ ॥ सुवला दुनदाव स्त्रिन
 हल ॥ बाक्ष ६ ॥ ॐ स्त्रिना वा माचार्य क
 मिमालका यक मान थगस्य ॥ वाला
 हा कल्य ल्यादि ॥ मासन कृत्वा ॥ ॐ नभा
 वापिन स्त्रिन मूल लक्ष्म व जी लं जी ला
 हा ॥ वक्रादि ४ यनम श्रवा विजयत द
 वासमला गथा सूर्यादि गृह ला कया
 लविज याशी ता गद ला दया ॥ काय
 ॥ ॐ वक्रादि ४ यनम श्रवा विजयत द
 दिदा ४ ॥ ॐ वायव्य वक्रु श्रवा सून गु
 रू ससाव कृत्वा जिव ४ ॥ याव च लु सूर्य
 य याव द्वादि लम दिनी ॥ ताव रुव रु
 मनिर्त्य कृत्वा यं मि वा कृत्वा ॥ ॐ स्त्रिना
 रुव रुव वलं दवा ता मधिथा कर्म ॥
 याव च लु कर्म दिन्या ताव लं मचला
 रुव ॥ निर्विष्टुं कीयत नायि सदा कला

न सूरव ॥ आयुष्टिक न निर्त्य सदा
 स्वस्ति वृक्षं कृत्वा ॥ न च माना के दूरि
 कं नना गमनि रू रुवत ॥ नना रु
 रुयरी ग ४ यन च कृत्वा यं तथ ॥ १०६
 रुज न रुव लगी यन रु च निर्वीग
 ति ॥ जय मान गृह यमिन् याव च लु
 कर्म दिनी ॥ ताव लं सुस्त्रिना रुव ४ ॥
 ॐ स्त्रिना रुव वीष्टुंग ॥ मूल न स्त्रिना
 रुव २ नमानम ४ स्वाहा ॥ ला जाद्वी
 कृत्वा दव सक लय ॥ ॐ कृति मूल न
 ॥ १०७ ॥ ॐ या न रुव ॥ ॐ कृति ॥ १०८
 ॥ ॐ कृति स्त्रिना मिद वम महा दवम
 हात न ॥ दव दवा विष्टुं श्रव रुव
 नाति च रुद मं ॥ ॐ कृति स्त्रिना विष्टुं
 लं मर्म रू रुत मर्म ॥ सर्व याव
 विनिर्मूकं कृत्वा यं च निवा कृत्वा ॥
 यत्पुष्टं सर्व मेश्रव्यं सर्व लक्ष्मी के
 रू तति ॥ यन च कृत्वा स मर्म महा
 कर्म यन ॥ महा सो रा ग्य कृत्वा म
 हा श्रमि रुव रुव ॥ यन रुव नम मा

सिं लं साय ॥ निवर्द्धनादि ॥ यक्ष मधु
 यक्ष ऋषीभन ॥ विविध तन्त्रा नयाय ॥
 ला सा लाय यक्ष मधु यक्ष ॥ दमक
 म विविध तन्त्र ॥ यति शास्त्र ॥ राग सगथ
 त ॥ यक्ष नत्त लं उहा वली त ॥ यू
 जन ॥ आधन न क त्या दि ॥ कूमी त्ना
 य ॥ उं बुद्ध य क्षा तं ॥ स्वर्ग स्वर्ति
 तं न ॥ यूजन ॥ दह त्या सताय ॥
 दहली मूर्ति य ॥ दहली ॥ ०० द
 विष्णु ॥ जीं श्री या सताय ॥ जीं श्री
 मूर्ति य ॥ जीं श्री ॥ उं समित ॥ जीं
 लक्ष्मी सताय ॥ जीं लक्ष्मी मूर्ति य ॥
 जीं लक्ष्मी ॥ उं श्री यत्त लक्ष्मी ॥ जीं
 वा ह्या सताय ॥ जीं वा लु मूर्ति य ॥
 श्री वा ह्या विद्य तय बुद्ध ॥ ॥ उं बु
 द्ध सताय ॥ मूल मक्त ॥ उं विष्णु ल
 ला ट ॥ उं वाव कान ॥ धूय दीय अ
 गं ॥ दि ॥ आरुति ॥ उं बुद्ध य क्षा तं
 ॥ उं विष्णु लला ट ॥ सुल गत स ॥
 २

हिन हात ॥ मृदादि ॥ उं बुद्धा दिव
 नम मृदा ॥ ०० त्या दि ॥ हिन रव तु ॥ ००
 त्या दि ॥ उं हिन रव वीर्ण ग ॥ लाजा
 मृकत यथा रिष क ॥ विविध यक्ष
 धून क ॥ ॥ नाणो कामा नी याग शा
 ०० ति दहली दान युति ॥ ॥

मृथ वृलिका लय न ॥ यी ० यूजा दि
 यूव वत विविध यक्ष याय ॥ स र्या
 रुति ॥ ॥ स्तान ॥ दमकर्म ॥ युति ॥
 ॥ ॥ वृलिका दीक वसु ति स नव का
 थ दयक ॥ थ न थत ॥ हन ॥ लं ॥ ह
 विगल ॥ ॥ ॥ उमल हा ॥ थ न यूव का
 थ स ॥ ॥ ॥ सूर्य कानि ॥ जिजल ॥ म
 न नील ॥ हा मल ॥ माधव ॥ आरुति ॥
 ॥ नील ॥ कं म वं द ॥ वलत ॥ मा स ॥
 विष्णु कानि ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॥ ०० लु नी
 ल ॥ उहा ॥ सुवर्ण माकि ॥ मंग ॥
 न क वं द न ॥ नैज स ॥ ॥ ॥ मूर्ति ॥ स्व

वसुत्व ॥ हिगुवि ॥ कठगुवि ॥ युगुनि
 ॥ यद्विमसं ॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 यन ॥ लंका ॥ श्रीखलु ॥ वायुय ॥
 ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ल ॥ गन्धक ॥ नाहावा ॥ दूकालस
 ॥ डकवस ॥ वेदय ॥ न्या ॥ हियति ॥
 लंभावा ॥ कूट ॥ ७ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 सवेवीदि ॥ वायव ॥ गालक ॥ भंखि
 नी ॥ सहयव ॥ मध्य ॥ त ॥ ॥
 पूजन ॥ मूलावमाविक ॥ लादि ॥ जा
 लं ॥ लाय ॥ १ ॥ लादि ॥ ८ ॥ ॥
 गानमिल ॥ लादि ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 धमूलमकुल ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 गनूड ॥ ॥ श्रीमाल ॥ ॥ वसुधम ॥
 वमतिप्रम ॥ धूयदीवादि ॥ मूय
 गंधादि ॥ मूदि ॥ वदनसह ॥ ॥
 वूलिका लाय ॥ नासाक यतनवा
 य ॥ कायाठ लयिन ॥ न्यासादियूज
 नमूलमकुल ॥ ॥ नम ॥ १ ॥ रवाय ॥

॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 ॥ ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ॥ ८ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 ॥ ८ ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 ॥ ८ ॥ वसुधम ॥
 ॥ ८ ॥ वदनसह ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ नासाक यतनवा
 ॥ ८ ॥ न्यासादियूज
 ॥ ८ ॥ रवाय ॥

॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 ॥ ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ॥ ८ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 ॥ ८ ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 ॥ ८ ॥ वसुधम ॥
 ॥ ८ ॥ वदनसह ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ नासाक यतनवा
 ॥ ८ ॥ न्यासादियूज
 ॥ ८ ॥ रवाय ॥

॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 ॥ ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ॥ ८ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 ॥ ८ ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 ॥ ८ ॥ वसुधम ॥
 ॥ ८ ॥ वदनसह ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ नासाक यतनवा
 ॥ ८ ॥ न्यासादियूज
 ॥ ८ ॥ रवाय ॥

॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 ॥ ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ॥ ८ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 ॥ ८ ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 ॥ ८ ॥ वसुधम ॥
 ॥ ८ ॥ वदनसह ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ नासाक यतनवा
 ॥ ८ ॥ न्यासादियूज
 ॥ ८ ॥ रवाय ॥

॥ १ ॥ यथवाग ॥ कंम ॥
 ॥ ६ ॥ यनवाग ॥ मूलावमाविक ॥ म
 ॥ ८ ॥ भन ॥ ८ ॥ लं ॥
 ॥ ८ ॥ जयादि ॥ म
 ॥ ८ ॥ ददयादि ॥ ॥ या
 ॥ ८ ॥ वसुधम ॥
 ॥ ८ ॥ वदनसह ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ नासाक यतनवा
 ॥ ८ ॥ न्यासादियूज
 ॥ ८ ॥ रवाय ॥

गङ्गा विस्तृतयाथ ॥ ॥ मधुय
 ना दवना प्रदक्षिण ३ याचकाव ॥
 थं तीर्थना ॥ गङ्गा दूवत सिञ्जल
 घटचास धलधंदाव ॥ सूरल
 नस हिनना ॥ बालाहा कल्पेया
 दि ॥ मृद्यादि ॥ वृक्षादियनमभ्रना
 ऋत्यादि ॥ ॥ ॐ ह्रीं नारुववीर्ण
 ग ॥ लाजा मृकतयथ ॥ ॐ मातु
 लय ॥ धजान दवल स्वचाक यि
 न ॥ धजा ईत ॥ बालाहा कल्पे मृ
 द्यादि ॥ ॐ रुगवत्तदवधं वम जेला
 कर्जंतु रुड ॥ यथ मका धर्जद
 र्क पीयतां यनमभ्रन ॥ स्वर्ग महा
 धर्जदद्या त्कत्वाय चै - नक्षिर्ग
 किं किं तीयुगसंयत्ता मयून रुग
 रूषिणा ॥ ॐ नैव विमानत सर्व
 दवाय निक्षिर्ग ॥ समस्त न सदसु क
 मादगदिवि नूयवत् ॥ धजामाला क
 लं कुर्या यथ वासादमानत ४ ॥

यथ धजा ऋक् वायि दिवि दिक्
 निवदय ७ ॥ यदा दिव सुतलुनी या
 वत्तं स्वा युवि द्यत ॥ तावद्वयसह
 मासि नूडलाक मदीयत ॥ धजा
 ईत दवधियक ॥ ॐ कादात व
 ८० त ॥ मृगर्ग वादि ॥ मृदुति गङ्गा
 रियातं ना ॥ धजा यात ना ॥ दव
 कर्ता ॥ वृत्ति ॥ यजमान वृत्ति
 वा ॥ विविधं यक् धनक ॥ कल
 सा शिषक ॥ सूर्य साक्षि ॥ दवल
 प्रदक्षिण ॥ ३ ॥ ॥ ध्वजत ॥ ना
 जो कामानी याग कानया ॥ ॐ ति
 सुवर्ण कलस धजा नाहन विविध
 समाक ॥

चतुर्थी कारु या विधिः ॥ यक् मृत्तू
 यतमालसाय कुर्याय ॥ दिगस्य यथ गथ
 त ॥ धजा विस्तृत ॥ धजा काय उद्यत ॥
 दवसक स्नान काकाय ॥ ॐ ति चतुर्थी
 विधि समाक ॥ ॥ ॥

१ अथ नकादूति ॥

१ तुं नमः ४ निवाय ॥ अथ लकादूतिक
 मीविलिख्य ॥ यत्न मधुय (मयवि
 वि ॥ सूर्यार्घ्य ॥ न्यास ॥ कलमयूजा ॥
 तुं नत्वो जामीत्यादि ॥ आदित्योदि ॥
 ॐ त्यादि ॥ अथ स्नामादि ॥ मासादि ॥
 वदसद ॥ रूपस्नान अकृत इर्वा
 (ममय जयका युका धनयूजनी ॥
 तुं नकादूति ॥ तुं लीजविष्टदा ॥ व
 लि गल (मे कोमावीयूजा ॥ स (म
 न ॥ धूय दीय जायका ॥ वामावा
 र्यनभक्ति वलिविय ॥ वाक्मल यू
 जा ॥ भक्ति कं य (०७ ॥ ॥
 वाक्मल य ॥ आ (मयादि मक्षार्क ॥
 अकृतमकुल ॥ (थर्थन ॥ यूजायादक
 या रूपस्नान आदिनर्थन अकृतमकु
 ल ॥ मंदवानयथ ॥ तुं नकादूति ॥
 कश्चिदधूनकाव ॥ अथावलिसगया
 व ॥ आसासवाचक जाय ॥ ॥ का
 यपू १२ ॥ दहायककू ६ ॥ कायपू ४
 ॥ दहायककू १० ॥ चलकू (मा ७ २
 १ थवमा गुरु १ दहायककू ६

कृ० ॥ ॥ ॐ नमो हर्ष ॥ ७ का सुका
 नमस्तु ॥ यं चामृतं तत्तान ॥ अथ वा
 दकन अथ कर्ष ॥ तत्तु एयं मूल
 मक्तु एव ॥ अथ ७ ॥ यिं थ काय ॥ ॐ
 तत्ता जामी त्यादि ॥ ॐ त्यादि ॥ १० ॥
 गुन गंध ॥ ॐ गुणानमिस्तु त्यादि ॥
 ॐ गंध ॥ ॐ दृष्ट्यं ॥ नूजादि
 द्वादश ॥ ॐ नमस्तु ॥ ॐ त्यादि ॥ १२ ॥
 दं थ काय सचतुर्थ ॥ ॐ अथ ना
 जाय ॥ ॥ सधा जातादि ॥ ॥ ॥ ॐ स
 धा जाता ॥ ॥ जवचलक ॥ ॐ वक्र
 क्षतम ॥ ॐ वक्रयक्त ॥ ॥ खवच
 लक ॥ विष्णु वनम ॥ ॐ विष्णु वना
 ट ॥ थं चमा ॥ सनामि वाय ॥ ॐ न
 मस्तु रवाय ॥ मूर्ति ॥ नास्य नमस्तु ॥
 ॐ अथ कु व ॥ ॥ ॥ ॐ नमस्तु ॥
 सर्व वेदाय नमस्तु ॥ ॐ अथ स्थाता ॥
 धूयादि ॥ अथ गन्ध ॥ ॥ थं धूतका
 व काययागं मखक्य ॥ लंकाट
 टि ॥ तक्रुणाय ॥ ॐ तक्रुणाय ॥ लूति ॥
 नागय ॥ तमा मुस्य ॥ ॥ ॥

डाहा काट वालसगमाल ॥ कायस्वा
 य ॥ दावा सक्तिवा माल धन ॥ दावा
 स र्यं वा ल्वचकी ॥ सकलं द थ ॥ थं
 द स्वाय ॥ धूजन ॥ अथ य स्य डक
 थ ॥ ॐ त्या ॥ ॐ गुणानमिस्तु ॥ नूजा
 य ॥ ॐ नमस्तु नूड ॥ वलि ॥ वलु स ॥
 दृष्टक कृणवा लायनमस्तु ॥ ॐ नमस्तु
 रवाय ॥ धूय दीय ॥ अथ गन्ध ॥
 ॥ १ ॥ अथ य ॥ अथ य नमस्तु ॥ ॐ
 धवाय नमस्तु ॥ ॐ अथि दूर्त ॥ ॐ ॐ
 मानूजाय ॥ वलि ॥ थि य नाक्त क क
 णवा लायनमस्तु ॥ ॐ थि य न्वकी ॥ १ ॥
 अथ य स्य यश्चि म ॥ गुन वनमस्तु ॥
 गुण काय नमस्तु ॥ ॐ दृष्ट्यं ॥ ॐ
 गुण की जजा ॥ वलि ॥ अथि ती गले
 नवाय नमस्तु ॥ ॐ अथ स्थाता ॥ ३ ॥
 नमस्तु स्य धूव ॥ यमाय नमस्तु ॥ नीला
 यनमस्तु ॥ ॐ यम नदक ॥ ॐ नीला
 वाय ॥ वलि ॥ अथि वगाल कृणवा ला

अथोमंगलविषयमाह आहुं वंकारयेत् ॥ हो
तु श्रु पजमान श्रु यागकर्म समाधितः ॥ मृतका
दि निवृत्तिस्त्यात्तस्त्याकार्ष्य ययो र्दक ॥

गङ्गातिथिं दूयाथर्थम् ॥ अमिकुलुया
उक्तनम नञ्जालादयक ॥ द्वाक्
वृत्ताव ॥ आक् ३ यंताव ॥ ॥ वृत्ति
यक्तमष्टयविभिः ॥ ॥

तथादिवसान्कर्मसु ॥ यजमानयागृ
हसद्विभक्त्या यज्ञं दक्षिणशुक्राम
यास्य धनकान्तक ॥ यूजन ॥ ॐ गङ्गा
सि ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ धननया दकया द
क्षं यश्व श्रीरुद्रस यजमानस्य धनका
य यजमानोस गार्धो धसुतयाव द्र
सथात् श्रीरुद्रसुतयन ॥ वाङ्म ॥ ४४ स्व
लिवाचनं य ॥ ०७ ॥ श्रीरुद्रसुतया धन
भानासुतयनादियुक्त ॥ यूजन ॥ ॐ
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ सुकसमय ॥ धनवसुध
नाविधि ४ ॥ ॥ ॥

गंगा १ कृ नार्थ १॥ वाक्मलस्य मलाव ७
१२ नदी गी न मृ लिका ^{द्वय} वास हान ॥
॥ २२ ॥ कृ पुर व ॥

ॐ श्री कृष्ण जाय ॥ ॐ वा नमः ॥ वलि ॥ क
वाली मरु नवाय २ ॥ ॐ य नय न्का ॥ २ ॥
वायवा ॥ वायवयुगमय २ ॥ मूढा नाय २
॥ ॐ श्री कृष्ण जाय ॥ ॐ जा नूड ॥ वलि ॥
शिवल नवाय २ ॥ ॐ य नय न्का ॥ ३ ॥
॥ ॐ श्री मत्त ॥ कलियुगमय २ ॥ गत्य नूवा
य २ ॥ ॐ श्री कृष्ण जाय ॥ ॐ य नय न्का ॥
वलि ॥ सहा नवाय २ ॥ ॐ य नय न्का ॥
क ॥ ४ ॥ वृषादि मूढगन्धदि ॥ धर्म
काय स्वादाव ॥ मूढा विधि ॥ धर्म मा
चलूक गयाव मधुयदयक ॥ वाक्म
दक्रिष्ण दान ॥ यजमान कल सावित्र
क ॥ को माना दान ॥ सूर्य सावित्र
य ॥ मधुयचतुनस कू १६ ॥ धर्म सव
दीकू २ श्रीगुलि ७ ॥ ईगल कू १३ ॥ श्री
गुलि १७ ॥ वदीश कथं थ्व चक माल
॥ लका रुति डिम न्का या थर्थ ॥ ॥
कू १४ धर्म सवदि कू २ ईगल १२ मूय

८ धर्म स्वतः ॥ त्वानवा ॥ स्यं क ॥ मंग ॥ ति
 ल ॥ सिनियू ॥ मर्वय ॥ कालात ॥ ययं शु
 मास ॥ मूल मरु ॥ धर्म हल ॥ मङ्गल
 य ॥ ० ॥ हल तिल स्वविय ॥ कायलन
 याय ॥ मलावकायक ॥ पूर्वदिन ॥
 ॐ हृगस्थानम ॥ लाजा ॥ तिल हल तिल द
 वि धर्म हृगया ॥ ॐ विहृगस्थानम ॥
 तिल तल्लुल धर्म विहृगया ॥ ॐ यका
 य ॥ कलंरु लाजा नालिकल ॥ धर्म
 यकाया ॥ ॐ नागय ॥ ॐ चूत मारु
 धर्म नागया ॥ यद्य मरुत धर्म वका
 या ॥ ॐ निवाय ॥ ययण मारु धर्म
 निवया ॥ ॐ विष्णुव ॥ गुणदत ध
 र्म विष्णुया ॥ धर्म विविनयष्टि दिभं
 गृहसुत ॥ धर्म मरु नार्यल विविध
 ॥ दक्षिण विविवत ॥ यादक धूनक
 ॥ अग्निस्वयन कथं काङ्गो यवाद
 क माल ॥ लकाङ्गि धूनकाव जवद

क मालव काय सलावका दिन यात ॥

अग्नि कृष्ण दलायन ॥ विविवत्कल
 स पूजन ॥ आचार्य वलिंदशा ॥
 वाक्कल पूजन ॥ भक्ति क य ॥ ० ॥
 कं व मरुत ॥ धर्म काथय ॥ वाग्म
 उका ॥ लूडाहायलं ॥ ॐ वचनन
 ॥ ॐ अटस कायात्तान ॥ यं वा मरुत ॥
 मरुत याण दकनत्तान ॥ अटया र्यस
 ॥ मरुत वन विरुत विवनी तस्वलि कवा
 य ॥ ॐ हृगवर्क ॥ पूजन ॥ ॐ गत्वा
 या मीत्यादि ॥ नन्दा ॥ ॐ नाहिभम ॥ रु
 डा ॥ ॐ रंडं क ॥ ॐ जया ॥ ॐ याग न
 डा ॥ मका ॥ ॐ मका मया ॥ नित्यरु ॥
 पूरु ॥ ॐ पूरु दधि ॥ पूवादि ॥ मरु
 गन्धदि ॥ अग्नि कृष्ण तात धय सखि
 याग यं काव धानकयंक धवा वलि
 सगयाव कासा स वाचक काय ॥ रि

घना १० पावा १२ विलज २४ १६ का २४ नो १६ का
म १८ राज के २० सुपे सो २२ पेस लो २६ द २०
न वानो न व म ल ६ वा

द म र्ति क लू व दान भक्ति या य ॥ माल
का कू य का व वा द लं न ॥ मूट वा वि
सु र्ज न या य ॥ क र्मी यू जा या य ॥ द क्रि
ष्ण ॥ य ज मान स्य मूट वा क र्मी क्रा य
॥ सू व ला रु न वा व वा ला या व लू ड
हा व ल्यं प र्श व न न ग या व मूट लं न
क ॥ आ ग न या दि म धा र्मी यू ज न ॥ न
न्दा दि न ॥ ५ ॥ म ध स मूल म ल ६ ॥
ह द या दि ॥ धू या दि ॥ मू ण ग ल्हा दि ॥
लि न सान ॥ मू या दि ॥ ७ ॥ जं नि वि
धू य क क र्मी सि कू षु ता वा द न मु
रं ॥ या व का र्थ क र्म क र्म ता व ल्यं
व लि ना रु व ॥ ७ ॥ लि ना रु व वी ण ग
॥ वा क ल द क्रि ष्ण दानं ॥ य ज माना
शि य क ॥ व न्द ना दि ॥ स ल्म न ॥ न ज
माल स थ थं ॥ ॥ ७ ॥ नि कू षु वा द
लू य न वि वि १ ॥

कू षु या म ख ला वा दि क न वा ग या

द ती का हा व ती का हा व ती थ ग ॥ ल
क ल मू गु ली न मू गु ली २४ ॥ म ख
ला मू गु लि २ क थ ॥ मू गु ली ३६ ॥
मू गु ली ४ थं थ ॥ थ ग म ख ला ॥ मू गु
ली १ क थ ॥ मू गु ली ५ ज व २६ ॥ मू
गु ली ४ वा ॥ मू गु ली २ थं जा व ॥ थ ग
थानि ॥ द थ स ग व ल्यं व नि ६ ॥ मू गु लि
॥ थ ग स रु हा रु ति मू हा ना ण या ॥ ॥

मू गु लि ३४ कू षु ॥ मू गु लि ३ क थ ॥
मू गु लि ४ द थ ॥ मू गु लि ५ थ थ म
ख ला ॥ मू ग लि १ य व ४ क थ ॥ मू गु
लि १ य व ४६ ॥ मू गु लि ४ य व ४ वा
॥ मू गु लि ३ थं जा व थानि ॥ मू गु लि ६
य लं ॥ थ ग मू य ता नि र्थ कू या ॥ मू गु
लि ४६ कू षु ॥ मू गु लि ४ क थ ॥ मू गु
लि ५ द थ ॥ मू गु लि ६ थं थ ॥ म ख ला
॥ मू गु ली २ क थ ॥ मू गु ली २ य व २६ ॥
मू गु ली ३ वा ॥ मू गु लि ४ थं जा व थानि ॥

कू ज

वतोदम्बरम् अवस्थं पितृनीति कलादिदिशि कदरीदाहपताकादशादिज्जुमात्र ॥ इन्द्रावधो
पमोपुर्वं कृमाग्नेयगोवरे ॥ पृथग्जुमो फलाभातिदक्षिणेवैवकेदुर्ग ॥ नेम्योपुमोप्रो
क्तोवाहृणीप्रीतिरथा ॥ वायव्याहृतिरवर्गोसोन्यपीतमथोप्यते ॥ ईशान्याभुक्तभा
लं ब्रह्मस्थाने प्रकीर्तिता ॥ हृदितातयोरेकुपपञ्चवर्गानदुर्ध्वके ॥ इति लोकापनापिपात्र

श्रृंगुलिः ५ पर्ल ॥ धातुलकादिमिजिम
नद्रया ॥ वृत्तिकुलकाविमि ४ ॥

अथ गानधविमि ४ ॥ पूर्वगानधवद
वृक् २ श्रृंति २ कलिल २ अविधविग
॥ यतायपीतवर्धु १ इक् २ यार्गुलि ३
॥ यार्द्रया ॥ कृ ४ इ श्रृंगुलि १२ यार्गुलि
कादिकिया ॥ विद्रवज ॥ कृ ४ ॥ गान
धयायासिधुल ॥ न्यानकाय ॥ ॥
दक्षिणाधुमलि २ श्रृंति २ कलील २ ॥
यताकाकृषुवर्धु ॥ विद्रयमदधु कृ
कमानधयायासिधुल ॥ ॥
यष्टिम अष्टक २ श्रृंति २ कलील २ य
ताकायत ॥ विद्रनाग ॥ कृ ४ ॥ गानध
यासिधुल ॥ ॥ उरुययुक् २
श्रृंति २ कलील २ यताकायात ॥ विद्र
कलस ॥ कृ ४ ॥ गालधयासिधुल ॥
॥ ॥ आश्रयययनर्ति १ यताका
वक ॥ विद्रमकि ॥ कृ ४ ॥ ॥ नेम्य

अथ स्थवदि १० वलोक्त चन्दनमेव च वरदं
नेम्यनञ्चैव अशोक अश्वत्थ ॥ यत्रोव
ते १० कालकार्यं यमीडिता ॥ इति की

दवदान ॥ यताकाधुम ॥ विद्रवज ॥
कृ ४ ॥ ॥ वायव्या ॥ अमर्ति ॥ यता
कानील ॥ विद्रवज ॥ कृ ४ ॥ ॥
श्रीमत नूयसातर्ति ॥ यताकाधुम ॥
विद्रशिधुल ॥ कृ ४ ॥ ॥ अथ अम
कर्ति ॥ यताकाहवित ॥ विद्रवज ॥ ॥
उर्ध्वं यसातर्ति ॥ यताकायात ॥ वि
द्रकमधुल ॥ कृ ४ ॥ ॥ वृत्तिगानध
विमि ४ ॥ ॥ ७ ॥

अधिकुयाथवन प्लुन यिलान
दयक ॥ वायवायवियर्ल ॥ लाकवा
ल्यामकुथव २ सदिगस ॥ ॥ कृ
यादवन अमिकास यभावर्क अ
मिमुर्कियाय ॥ वादानमकिनसहित
॥ दधुकोरु कूनयायमालकास ॥
हानादि ॥ यवावर्तन ॥ यवादकयाय
॥ मतवृत्तिका वास्यताथ कूरुनडा
यार्ग ॥ ॥ अकिहामकीसि ॥ सु

साधवृक्षं अलिहिससारसंगति ॥ तिमितो
मरुतः सज्जिथावेवागुनदुर्ग ॥ पूनागीयेनि
कविधान ॥

र्थाद्य ॥ त्वाप्त ॥ अर्घ्याय ॥ आत्मयु
 जा ॥ वन्दनादियुष्य ॥ कलसयुजा ॥ श्री
 अन्नमकराद्यादि ॥ ॐ ५८ तमस्तु
 ५८ य ५८ महावायुयतास्तु ५८ दया
 यतमस्तु ॥ ॐ ५९ द्यादिषु ५९ त्वावायुसं
 युक्त ॥ वद ॥ ॐ ६० वस्यत्वा ॥ श्रीधरल
 क्ती ॥ गणान्तिकार्य ॥ श्रीकृष्ण ॥ खनन
 ॥ १ ॥ युवर्ष ॥ सचन ॥ ३ ॥ कूटन ॥ ४
 ॥ सम्मार्जन ॥ जलयन ॥ ५ ॥ वदुष्यथ
 ॥ १ ॥ वदुष्यथ ॥ २ ॥ आकृष्य ॥ ३ ॥
 नवर्ष ॥ नवर्ष ॥ कीर्ति ॥ वद ॥
 ॐ ६१ द्यादिषु ॥ कूटनयविर्वा
 दन ॥ ॐ ६२ मानस्तु कनलयन ॥ ॐ ६३ त्वा
 जा मीति ॥ श्रीकृष्ण ॥ ॐ ६४ तदस्तुत्याति
 ॥ अन्यस्तु ॥ ॐ ६५ वीर्ययधमति
 ॥ वीर्ययधमति ॥ ॐ ६६ वस्यत्वा ॥ कृष्ण
 सन ॥ ॐ ६७ त्वा मीति ॥ वद ॥ ॐ ६८
 धर्मलक्ष्मीति ॥ वदियुजन ॥ ॐ ६९ न्त
 त्वति ॥ काष्ठयुद्ध ॥ शुवलाकात्या

दि॥ नवकं० जातिर्गितं॥ ॐ सतव
 हति॥ कृष्णयूजनं॥ ह्रीं मन्त्रिमादा
 य॥ श्रृं वरुणं गनसं वृक्षं॥ श्रृं क
 यादाग्रय स्वाहा॥ वद॥ ॐ कयादाग्र
 यति॥ श्रृं मिस्तुयन॥ ॐ दवमिस्तुति॥
 वहुर्वदीयूजनं॥ यून॥ वदीयूजनं
 ॥ लाकयालपूजा॥ ॐ कात्याकात्य
 ति॥ मक्तुलपूर्वाहाम॥ मक्तु श्रृं क
 सकलर्क॥ ॐ शातानमिस्तु॥ ह्रीं
 हाम॥ ॐ नूमानूजागव॥ नवयम
 तु॥ ॐ मानसाक॥ तिलमक्तु॥ ॐ
 श्रृं ववावदवि॥ वचमक्तु॥ ॐ कया
 नमिस्तु॥ ॐ वमक्तु॥ ॐ विकिनि
 डवि॥ वालाठमक्तु॥ ॐ यजायान
 ॥ गलुलमक्तु॥ ॐ यायमय॥ श्रृं
 मार्ग॥ ॐ सत्तादवी॥ समिधमक्तु॥
 ॐ खादयागुद॥ श्रृं वयमक्तु॥ ॐ
 यतद्विष्टुक्त॥ यायसमक्तु॥ ॐ ययय
 थिया॥ दूदमक्तु॥ ॐ गुन्तकं डका॥

ततो मू० वा॥ ॐ श्रुतशील गुणस्त्रिभिर्विद्वान्तये च
सम्भव॥ अनुग्रहो यविपेन्द्रो होता भवमाप्स्यते॥ ॐ
भवामि॥

छावियमाल॥ ॥ धनं धनं वाव
 मधुपनिर्वृत्तं नयाय ॥ दीपलाहन
 का ॥ न्यासयाय ॥ वरु ४ संस्कारयाय ॥
 मूलचर्च (गणमधुपपूजनं) ॥ ॥
 तगा नञपूजनं ॥ पूर्व ॥ दक्षिण (धन
 दक्षिण) ॥ ॥ पश्चिम ॥ धीतानक
 डहन ॥ ॥ ॥ मध्य ॥ ॥
 कुभनस्विधातदयक ॥ यकेरुका
 ॥ श्रीसिक्किल ॥ श्रीगुलि १२ य १२ ॥
 दुयस्वानादि रुक् आचार्यनदय
 कयिव ॥ तुर्यार्थ ॥ न्यास ॥ पूजन ॥
 उं तत्वा कामिण्यादि ॥ पूर्व ॥ जौं यं
 तत्पूजाय पूर्ववकायनमः ॥ ॥
 दक्षिण ॥ जौं नं अधा नाय दक्षिणव
 कायनमः ॥ ॥ डहन ॥ दूँ वौ वाम
 दवाय डहनवकायनमः ॥ ॥ प
 क्षिम ॥ जौं लं सधा जागाय पक्षिमव
 कायनमः ॥ मध्य ॥ जौं र्कं व्री मना
 य डहनवकायनमः ॥ अकिमनु ॥

॥ ततो कर्माणां ॥ ॐ मच्च विश्वासमोपेत सर्वविष्य
विमर्दकः ॥ देवदेत्याद्यं शक्तिशक्तार्चय
ममाहूय ॥ ॐ भवानि ॥ प्रतिवचनं ॥

मयजी ॥ ददयादि ॥ ॐ सधा जाताय
मिमीत्यादि ॥ ॐ दामाल ॥ शिवाय
ॐ सुग का रुमि ॥ मूधानमकुलम
यजीन ॥ ददयादीन ॥ जयनय ॥ वद
॥ ॐ नकाहर्त ॥ ॐ लंडविहदा ॥ ॐ मि
वातामासि ॥ ॐ मूचमूची ॥ वलि ॥ ॐ
नभावजू ॥ ॐ धूयदीय ॥ प्रतिष्ठा ॥
मूगगत्यादि ॥ नऊनी शिवाय ॥ नवि
मऊन ॥ ॥ ॥

दवयादास नऊथविधिवत ॥ ॥
नऊकाधूनकाव यूजन ॥ थंदिलिस
दकाव ॥ मऊनी वंदनी यूजा ॥ धूप
दीयजायकुति ॥ थंदिलि मूसिकुलु
सं पूर्वकुत्वा ॥ ॥ रुमिकिलखा
य ॥ ददयमकुल ॥ विंधकायउति
॥ शिवायनी यचैसूगकानी यिन
॥ मूचार्यया मालकोदयक ॥ क
लभवायविधिथ ॥ मलुयनिवर्क
न ॥ नऊसालास ॥ वाकलसनीक

मूचार्यनी कर्मचैल साकायान
दवाचैलयाय ॥ साधनमातयाय ॥
थकाऊडयवाकायना ॥ थगमूचि
वासकायनविधि ॥ ७ ॥

नत १ यराग आरकात ॥ निलय
वाचैलकुत्वा ॥ मलुयनेमलुदान
वाक ॥ वलिविथ ॥ वाग १ ॥ गुन
सनल ॥ न्यास ॥ लिदव ॥ वकात्या
२ दि ॥ ॐ दूले चंटाकायवलिगृह २
खाहा ॥ ॐ दूले सर्वरुगयावलि
१ गृह २ खाहा ॥ ॐ सां सर्वथागिनीया
वलिगृह २ खाहा ॥ गंधाउदिथव
लिगृह २ खाहा ॥ ॥ धूपदीय
जायकुति ॥ पूर्वदकिलयकुमाकन
त्यादि ॥ मूगगत्यादि ॥ विसऊन ॥
वलिमलुयकायकावदान ॥ ली
ककानसवाय ॥ ॥ मलुयनम
कानयाकाव दूहाय ॥ नेमलुदि

सि वलि वदार्त्तं ॥ क्लानविभषणवलि
 विथ ॥ नामाकन ॥ स्वस्वमकुल ॥ वलि
 मकु ॥ अजनादि ॥ ववसठिथागिनी ॥
 समयवलि ॥ त्वाक माहावलिनधून
 क ॥ यवावने ॥ गल ॥ उं गल ॥ गल ॥ व
 दूक ॥ उं जातवदस ॥ यागिनी ॥ उं अ
 म्ब अम्बिक ॥ रूतवलि ॥ उं य रूत ॥
 क ॥ उं नमावकु ॥ उं अमंकागा ॥
 समरु ॥ उं समरुदया ॥ धूयदीय ॥
 जाय क्का ॥ पूजनयाधान ॥ थवर
 थयसवलिकाय ॥ ॥ तगाज
 लजाग ॥ गंदानवर्षसनदीजलकया
 व पूजा ॥ अर्धन्यास ॥ गयणी ॥ अ
 र्धयाग ॥ आत्मपूजा ॥ गार्थ आवाहन
 मकु ॥ उं गं गवयमनावेव महामा
 नर्मदातथा ॥ सिन्धुसुनस्वतीवेव अ
 चणीथ ॥ मिमिता ॥ उं समुद्रगकु ॥
 उं सकमयय ॥ उं ॐ दीवि ॥ उं ॐ वा
 वती ॥ उं यावकान ॥ उं यवेरनद्य ॥ उं

आया अस्मा ॥ उं यतीथति ॥ ॥
 नागनाज पूजा ॥ उं ईस ॥ अतकायन
 म ॥ तक्रकोय ॥ कलिकाय ॥ य
 घाय ॥ महायघाय ॥ अस्ववालाय
 तम ॥ अस्तिकाय ॥ कर्कोटिकाय ॥
 सहस्रभीषाय मूर्ध्नि ॥ आवाहना
 दि ॥ यवेरनत्त ॥ पूर्ववृष्य ॥ दग्धवृ
 हि ॥ सुवर्ण ॥ तीर्थदकथंनथ ॥
 अगन्ध ॥ विसर्जन ॥ थकलस यज
 मानस्यं जान ॥ वाक्कलस्यं स्वर्णिवा
 कय ॥ मधुयसवाक्क कलसथं
 न ॥ मूलकलसादि ॥ यवेरयल्लवक
 लभविधि अलंकालं कला ॥ ॥
 तगा यवेरगवसाधन ॥ दविमु पूर्व
 गारुया ॥ गममूर्धदक्रि ॥ लनतु ॥ यकि
 मययसाहुया दृग ॥ येवाकननतु ॥
 आग्नेयालिङ्गमित्याहु नेमयीयथ
 राजनी ॥ वायुयी ॥ गमयसाहुयी ॥
 भान्याहुकु ॥ गदकी ॥ म ॥ अहु वक्रया

ॐ कं ॥ सूर्याय ॥ न्यास ॥ सूर्यवाय ॥ श्री
 सूर्याय ॥ ॐ सूर्ये नमः ॥ वलियदा
 नं ॥ श्रीवाहनाय ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥
 याय ॥ ॐ कं ॥ सूर्याय ॥ सर्वस्मिन्
 दयाय वद्विदवाय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 य ॥ ॐ जलवर्जि सिंदूरान्नविगदं
 ॐ वाक्चक्रं धरं धरं हविर्मानसि
 सदा ॥ नमः ॥ ॐ सूर्ये नमः ॥ सुति
 ॥ देवस्य नमः ॥ लाहिताय नमः
 सनं ॥ कालिनाय नमः ॥ याम्यव
 क्षिप्तमाय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 ॐ कं ॥ सूर्याय ॥ वद्विदवाय नमः
 नाय ॥ नमः ॥ ॐ चतुर्विंश
 धरं धरं लक्ष्मीवामासु सक्तिं ॥ स
 दादेत्यानं कंदवं ॐ नमः ॥ ॐ
 ॐ गत्व दाना ॥ सुति ॥ द्विजनायास
 तीविष्णु दूर्वासीति विगदं ॥ नमः ॥
 गदायासि वददं मानादिभिः ॥ ॥

ॐ कं ॥ सूर्याय नमः ॥ कालिनाय नमः
 याम्यवदवाय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 यं दव नाहिनी सदितां सूर्यं ॥ दंतुर्व
 धरं यदं कानवचुर्विगदवाय ॥ ॐ
 यदधिवा ॥ सुति ॥ नागयो ॥ ॐ
 वं कुरु कर्तुं विगदं ॥ नाजीवचं धरं
 सोमं वददं सागनासु ॥ ॥
 ॐ कं ॥ सर्वगं सर्वं ॐ कवचाय नमः
 नयद ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ दधिधरं
 सनदवं याचामी ॥ नमः ॥ चतु
 वमहिर्नमीर्षं सूर्याय नमः ॥
 ॐ दधिधरा ॥ सुति ॥ ॐ दधुटिक
 संकाशं चतुर्विंशतसु ॥ नमः
 मि ॥ नमः ॥ निविजाया नमः
 कं ॥ ॐ कं ॥ सूर्याय नमः ॥
 नमः ॥ कं ॥ सूर्याय नमः ॥
 यिध ॥ ॐ नमः ॥ यदवागतिरुद
 दं द्विजुर्धनं धरं ॥ ॐ नमः ॥

॥ पूजनं च ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्री
 र्वायु लंख ॥ ॐ नमो देवि विष्णु वि ॥ यथा
 यदानीं ॥ ॐ मानसा क कृत ॥ आयु क
 यनं ॥ ॐ यथा यनं तत्त्व ॥ उच्यते यनं
 ॥ ॐ तच्च कृद्देवसि ॥ निना कृत् ॥
 ॐ विष्णु देवता ॥ सर्ववला कर्त ॥ श्री
 चम्य ॥ ॐ नि चतु ॥ संस्तुत ॥ शिराग
 कृत्वा ॥ एक रागत लिंग स्तुत ॥ ॐ
 हस्तु व ॥ दक्षिण राग ॥ ॐ तम ॥ संस्तु
 वाय ॥ एक उक्त न राग श्रीनि ॥ ह
 तीय राग श्रीनि ॥ ॐ नमो देवि विष्णु ॥
 मयरा न उच्यते यथा न ॥ १० ॥ यति ॥
 ॥ ॐ मना कृत् ॥ निव स्तुत याय ॥ ॐ
 तत्त्व जामी ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ ॐ यय ॥
 दधि र्वा ॥ यं वा मृता ॥ ॐ उच्यते यत्
 न ॥ ॐ विष्णु न राट ॥ ॐ तम ॥ संस्तु
 वाय ॥ निव स्तुत मासि ॥ श्रीवाहना
 दि ॥ जायसा ॥ मयरा ॥ मयरा

शुद्ध ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ विष्णु वि
 ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥

यं च गद्य एव श्रीदिन मयरा यज
 मानविय ॥ ॥ नमस्तुदिमि श्री
 वायु मयरा कीन कृत्वा सिद्धार्थ
 निल तन्मूल काल यव मयरा ॥
 यथा यथा ॥ यथा यथा ॥ यथा यथा
 यथा ॥ यथा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥
 मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥

मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥ मयरा ॥

कलायेष्टधीतत्वायवक्त्रस्य सधाजा
 नाय ह्रींरुद्र॥ॐ जौं जौं प्रतिष्ठा कला
 ये श्रायतत्वायविष्णवे वामदवाय
 ह्रींरुद्र॥ॐ जौं ह्रीं विद्याकलाये न
 जकत्वाय नूडदवगाये श्रुधानाय
 ह्रींरुद्र॥ॐ जौं ह्रीं शक्ति कलाये वा
 यतत्वाय ॐ श्रीशुभाषिदवगाये तत्पू
 न्माय ह्रींरुद्र॥ॐ जौं ह्रीं शक्तानी
 त कलाये श्राकाभतत्वाय सदाभि
 वाय ॐ श्रुतनाय ह्रींरुद्र॥ॐ जौं ह्रीं
 १ श्राकृतक ॥ ॐ तिरुतमुद्रि १॥
 ॥ ॥ श्राचार्य १ सर्वालंकार रू
 षर्षविभय सर्वाङ्गन्यासं कर्यात् ॥
 कववकाङ्ग ॥ मालिनी ॥ भद्रनाभि
 १ श्रि विद्या ॥ ध्यानि काष्टक ॥ वाद
 श्रुत ॥ यरुङ्ग ॥ पून १ श्रुधान मूल
 विद्या कववकाङ्ग न्यास १ ॥ जिवरु
 क ॥ खवलास ॥ नासाक चित्तना ॥ ॐ

वाय ॥ ॐ पूजनयाय ॥ मूलमक्त म
 ॐ ॥ जिखासुक्त न्यदगुलि खाठया
 य ॥ श्रावाद ह्यं ॥ पूजनयाय ॥ श्रा
 वाहन ह्यायनादियाय ॥ ॐ स्वातनमा
 उस्तु ॥ पूजनया कलादागतस
 र्वीं धवकासयल ॥ सुक्त न्य न
 वत्वं धमराय ॥ श्रावाद ह्यं ॥ ॥
 ॐ तिरुवहस्तु विधि १॥ ॥

तगा क्लानख प्रसाधनं ॥ कृच्छि कृम
 य १२ संधुदा ध्यं ध्य ॥ श्रुधानाक्त
 मक्त ॥ ॐ जौं जौं ह्रीं ह्रीं १ प्रहून १ धा
 न १ तननन नन नूय चट १ खचट १
 कट १ वम १ दम १ धागय १ विद्यात
 य १ विधि १ ह्रीं क्लानख प्रसाधनम १
 पूजन ॥ ॐ जौं जौं ह्रीं ह्रीं १ प्रहून १
 हृदयाय १ ॐ जौं ध्यान १ तनन नू
 नूय १ जिनस स्वादा ॥ ॐ जौं चट १ प्र

चट् २ मिखाये वाषट् ॥ ॐ जां कहश्च
 मश्च कवचायट् ॥ ॐ जां दमश्चायश्च
 नश्च यायवोषट् ॥ ॐ जां विष्टिश्च ३
 म्भुक्तायश्चट् ॥ पूनवधानास्तु ७
 ॥ १ ॥ ० ॥ ॥ ॐ तिष्ठानस्वप्नसाधनं ॥
 स्ववलान् हानस्वप्नस्ववलान् जांदि
 त् ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

ताम्भुयः साधनं कर्त्तव्यम् ॥ ॐ ह
 नसि ह्मि ॥ ह्मिसम्मिह्मि ॥ ॐ म्
 ॥ न वाजि ॥ क्कुसुम्मिह्मि ॥ ॐ व
 सुवमवसति ॥ कर्मसम्मिह्मि ॥ ॐ अ
 षधीयुष्मि ॥ यहुडयतिना क्कु ॥ ॐ
 ल्हे ॥ विष्टिदा ॥ लाजाय क्कु यल ॥ ॐ
 बीहधम ॥ वादि क्कु यन ॥ ॐ यत्नाम्
 च्छमि वनू ॥ स्यात्तन्वा वदना
 नविता सुवात्त ॥ अग्यातो सुकृतस्य
 लाक म्भुयश्च क्कु यत्त दक्षामि ॥

वासादयतिष्ठ ॥ ॐ वायवायाद्वी
 तयं वृणाना हव दातय ॥ विवात्
 तस्य वन्ता म्भुयश्च ॥ म्भुयश्च
 तं ॥ ॐ वदतिष्ठन ॥ वदीत्तयन ॥
 ॐ म्भुयश्च म्भुयश्च ॥ क्कु यतिष्ठ ॥ ॐ न
 जम्भवाय ता सुयुग्म पूनवयता ॥
 म्भुयश्च म्भुयश्च कामाय ग्कु मा ॥ वदिय
 ४ यमात्त ॥ म्भुयश्च म्भुयश्च ॥ ॐ म्भुय
 वाजि ॥ क्कु म्भुयश्च ॥ ॐ
 यत्त यत्त म्भुयश्च ४ यत्त म्भुयश्च ॥
 वत्त म्भुयश्च म्भुयश्च ॥ ॐ म्भुयश्च
 थिवात्त म्भुयश्च नादि ॥ ॐ म्भुयश्च
 ति म्भुयश्च ॥ वत्त यत्त म्भुयश्च क्कु
 तं ॥ ॐ म्भुयश्च म्भुयश्च ॥ म्भुयश्च क्कु
 त्त क्कु ॥ ॐ न क्कु ॥ यत्त म्भुयश्च
 वत्त म्भुयश्च ॥ ॐ म्भुयश्च ॥ यत्त म्भुयश्च
 वत्त म्भुयश्च ॥ ॐ वत्त म्भुयश्च ॥ यत्त म्भुयश्च

ॐ वत्त म्भुयश्च ॥ यत्त म्भुयश्च ॥ ३

नवदुर्ग ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥

नमो विष्णु कृष्ण ॥ लाजावदन सिद्धा
र्थरुस दूर्वा श्रुत कृष्ण विक्रम
न प्रकृष्ट कृष्ण ॥ श्रुतमकुल ॥
वद ॥ ॐ नमो हर्ष ॥ विक्रमाल ॥ व
लाखलुन कर्ष विष्णुवला रात्रय ॥

नमः पूर्वदानसमीप गत्वा ॥ अथ
दाय ॐ दमासर्तनमः ॥ श्रुतनव
टि ॥ लकाम ॥ वरु ॥ वरु ॥ नीलव
रु ॥ वरु ॥ गत्वा ॥ श्रुतया
खाला ॥ १ ॥ सुवर्ण लंकान ॥ सुव
र्ण नडन मूर्धिका ॥ वरु ॥ धनवदी
वाक वाक वनिर्ल विषय ॥ युजत ॥
ॐ दानादवी ॥ दान लायन ॥ ॐ न
मादिनध ॥ दान लायन ॥ ॐ वला
विभृग ॥ गानल लायन ॥ ॐ नमो

कमिह ४ ॥ ॥ लायन ॥ ॐ वरु
लया ॥ वरु ॥ लायन ॥ अथ द
य श्रुति गाय सा मयवता गाय
णी वरु सतमः ॥ लायन ॥ ॐ न
अथ दय दय गाय को गायणी सा म
यवता ॥ श्रुति गाय सु विषय म
लिकामन करुव ॥ विष्णुय ॥ म
अथ दामूर्ति माग सु ॐ न नील स
मयुति ॥ दिव्य गन्ध नूलिका गदि
या रनल सुमर्ष ॥ सक्तिर्ग पूर्वदि
काण दीयमान सुगड स ॥ धूव
दीय श्रुत गन्धदि ॥ धनवदी ॥ वा
यव वाक वनिर्ल विषय ॥ श्रुत ॥
याव माती ॥ नासदासि ॥ स्वाति
न ॥ वरु कवि ॥ मण ॥ धन पूर्व
दानया ॥ ॥ ७ ॥

कलि दान ॥ ययुर्व दायनमः ॥
ॐ नमो मी ॥ ॥

आसनादिसमस्तविय॥ वक्तुं
 नक्तुं॥ पूजना॥ ऐं ह्रीं वा दवीत्यादि॥
 यथर्वदाय शान्ताजस्य गणाय वक्तुं
 दवताय हस्तदुन्दुभसुनमः॥ आन॥
 यथर्वदकाकानाका उष्टुर्वक्तुं
 दवता॥ शान्ताजस्यवियं सति
 त्वममकरव॥ कृणु॥ दक्षिणेत्य
 दर्वद सुष्टुटिकसन्तिर्ग॥ दिव्य
 कृणुत्वामीच महाकायामहाकु
 ॥ ऐं वृषत्वा॥ श्रुगर्ग्यादि॥ वा०॥ न
 दसूक्त॥ पूनवसूक्त॥ सत्यथ॥ अ
 कयूनासादि॥ ध्यादक्षिणद्वानया॥

यष्टिमदान॥ सामवेदाय ह्रदमास
 नतमः॥ आसनादिसमस्तविय॥
 वक्तुं नक्तुं॥ पूजना॥ ऐं ह्रीं वा दवी॥
 सामवेदाय काथ्यय गणाय न
 ददवताय उगगीहृत्सुनमः॥

आन॥ सामवेदमुपिज्ञाका जागर्ग
 मकुदवर्ग॥ काथ्ययसुविथलुम
 त्वित्वममखरव॥ कृणु॥ ह्रिग ४ य
 ऋमदिगा ग सामवेदसुतागत
 नकाचनवनस्थीमात् यमनागस
 मयर्ग॥ हृदामहृषिर्गण पूजय
 न लक्ष्मिर्ग॥ ऐं श्रुमथत्यादि॥ न
 र्गर्ग्यादि॥ वा०॥ दववर्ग॥ पूनव
 गति॥ उष्टुसाम॥ शान्तु॥ वामदव
 ॥ हृत्वाग॥ ध्यायष्टिमदानया॥

उक्तनदान॥ अथर्वदाय ह्रदमास
 नतमः॥ आसनादिसमस्तविय॥ कृणु
 वक्तुं॥ कृणु॥ पूजना॥ ऐं ह्रीं वा दवी॥
 अथर्वदाय वेगानस्य गणाय ह्रद
 दवताय श्रुददुन्दुभसुनमः॥ आन
 ॥ अथर्वदमुवकाका श्रुदुष्ट्यानु
 दवर्ग॥ वेगानस्यविथलु सत्त्वित्व

ममश्वरुवशः॥ काण॥ अथर्विउं न
वत्सामः॥ क्लिप्तकनकसुधा॥ यिं म
का लाहितपीवीहविक॥ ममसमता
॥ उं सन्नादवी॥ अरुगन्धादि॥ वा०॥
स्तुतुक्तु॥ नीलस्तुक्तु॥ मेण॥ भिन
संदव॥ धन॥ उरुनदानया॥ ०॥
महुजनमालकावाक्कल पूजायाव
वस्तु अर्लकानविय॥ ० ॥

भिवमकि कलस चला सन पूजा ॥
न्यासयाय॥ मूलन॥ अर्थवारु पूजा
॥ उं जांचलासनायनमः॥ उं जांच
ल वृषासनायनमः॥ उं जांचल
सिंहासनायनमः॥ उं जांचमस्तु
डनूयजः॥ मस्तुयायुयताकायदद
यायनमः॥ उं नमस्तुडनूयजः॥
मस्तुयायुयताकायभिनस नमः॥
अक्राय अक्रायनमः॥ आवाहनं॥

वद॥ उं गत्वाजामि॥ उं अमिउ॥ उं
त्वममिउ॥ उं दवत्वा॥ उं व
क्तयक्तनं॥ उं ॐ दीविषू॥ उं नमः
संरुवायव॥ उं धीभक्ति॥ उं धून
सि॥ धूय॥ उं गत्वाजामि॥ दीय॥ उं
यारुलनी॥ हल गलुल॥ उं अत
वग॥ नैवद्य॥ जाय॥ काण॥ न
लावधीत्यादि॥ अरुगन्धादि॥
अरुगन्धादि॥ कलसलय॥
आचार्यस्य अर्थवारु लंखनदा
य॥ यजमानस्य भक्ति कलस यज
मानस्य भिवकलस कंदोव लंख
दायाव लंकाकदूय॥ मूलमस्तु॥
उं जांशांलाकयालाय यक्तुं
नक्तुं तार्थय विद्यातीर्थसनायव
॥ यूर्यस्वदाहनायुक्तं सनदापीमि
वाक्तुं॥ उं स्वक्तिनाममीता॥ लंख
नदास्यं जवखवदल॥ वृत्तः॥ क्लिप्ता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री॥ धानाधिवति॥
 ॐ जौं हृदि नमः॥ ॐ गलतीत्या॥
 ॐ जौं (म) वावय १॥ ॐ डय द्रवगिनी ॥
 ॐ जौं सनत्वये १॥ ॐ यावकान ४॥
 ॐ जौं यशर्वदाय १॥ ॐ वृषत्व ३॥
 ॐ जौं जगत्पुत्राय १॥ ॐ श्रुक् न जाय ॥
 ॐ जौं स्वर्लोकाय १॥ ॐ मत्तसकाम ॥
 ॐ जौं मत्तलोकाय १॥
 धानाधिवति॥
 ॐ जौं युवाय १॥ ॐ तमः ४॥ रुवाय ॥
 ॐ जौं मिशाय १॥ ॐ तन्मिश्र ॥
 ॐ जौं वनूषाय १॥ ॐ मम वनूष ॥
 विभूला ॥
 ॐ जौं वक्षाय नमः॥ ॐ डवृषत्व ॥
 ॐ जौं वरुणाय १॥ ॐ वरुणाय नमः॥
 ॐ जौं चवर्गकोमार्थ १॥ ॐ श्रीमिन्दु ॥
 ॐ जौं वरुणाय १॥ ॐ वरुणाय ॥
 दानास ॥

ॐ जौं गलतीत्या १॥ ॐ तमा गलतीत्या ॥
 ॐ जौं महालक्ष्मि १॥ ॐ श्रीधर ॥
 ॐ जौं सनत्वये १॥ ॐ यावकान ४॥
 डवृषत्व ३॥
 ॐ जौं नृधनाय दक्षिणवक्त्राय
 अमिन्तव नृधनाधिवक्त्राय हृदि नान
 धानाधिवति १॥
 ॐ याग नृधनाधिवति ॥
 ॐ जौं दक्षाय हृदि ॥ ॐ श्रीमन्मिन्दु ॥
 दक्षिणवक्त्राय काष्ठाय ॥ ॐ दक्षिणवक्त्राय
 नक्षत्राय ॥ श्रीवाहनादिकं कृत्वा ॥
 यक्षिण ॥
 ॐ जौं निवृत्तिगानधनाय १॥ ॐ द
 वस्यत्वा ॥ ॐ जौं निवृत्तिगानधनाय १॥
 ॐ चत्वारि नृग ॥
 ॐ जौं निवृत्तिगानधनाय १॥ ॐ दानाधिव
 धानाधिवति ४॥
 ॐ वृषाय १॥ ॐ यतवादि ॥

ॐ ज्ञांस्तुत्याय २॥ ॐ उराविदग्गं ॥
 ॐ ज्ञां कावेयै २॥
 ॐ ज्ञां सिन्धुवनम ४॥
 ॐ ज्ञां सामधदाय २॥ ॐ श्रुतिश्रुयद्वीति
 ॐ ज्ञां दायतयुगय २॥ ॐ श्रुक्रनाजाय ॥
 ॐ ज्ञां जनलाकाय २॥ ॐ श्रुयनाश्रुति ॥
 ॐ ज्ञां तयालाकाय २॥ ॐ ॥
 ॐ ज्ञां श्रुक्षमाय २॥ ॐ श्रुतिजमा ॥
 ॐ ज्ञां वेधनलाय २॥ ॐ तन्मिश्रस्य ॥
 ॐ ज्ञां त्वष्ट २॥ ॐ त्वष्टावीन ॥
 तिमूल ॥
 ॐ ज्ञां शुक्राय २॥ ॐ श्रुत्तायनिभूत ॥
 ॐ ज्ञां मनिधनाय २॥ ॐ सत्ताधवी ॥
 ॐ ज्ञां तवर्गनाय २॥ ॐ यत्तुर्मा ॥
 ॐ ज्ञां यवर्गं नृत्ता २॥ ॐ शानानमिदु ॥
 दनास ॥
 ॐ ज्ञां गद्युतय २॥ ॐ गद्यतीत्ता ॥
 ॐ महालक्ष्मी २॥ ॐ श्रीधर्मलक्ष्मी ॥

ॐ ज्ञां सनत्तये २॥ ॐ यावकान ४॥
 दुर्द्धुत्तनिक ॥
 ॐ ज्ञां सधाजागय यष्टिमवक्राय
 दधीतलाय वक्राधिदवगाये वलगा
 नक्षय २॥
 ॐ विष्णुननाटमसिविष्णु ॥
 ॐ ज्ञां वाभयदूरु ॥ ॐ श्रुत्ताकमित्त
 नृति यष्टिमता नक्षयूजा ॥ ॐ वाहना
 दिकं कृत्वा ॥

उरुन ॥
 ॐ ज्ञां यतिशानानक्षसनाय २॥
 ॐ ज्ञां यतिशानानक्षमूर्तय २॥
 ॐ ज्ञां यतिशानानक्षय २॥
 गानक्षधियति ४॥
 ॐ ज्ञां यथै २॥ ॐ यवीनाथा ॥
 ॐ ज्ञां वल्लुय २॥ ॐ दूर्गदृष्टयावा ॥
 ॐ ज्ञां गद्युत्त २॥

ॐ ज्ञां को भवे २॥
ॐ ज्ञां मृधर्ववदाय २॥ ॐ सन्नादवी ॥
ॐ ज्ञां कलियुग्मय २॥ ॐ मृकृ नाजा ॥
ॐ ज्ञां ध्रुवलोकाय २॥
ॐ ज्ञां सत्यलोकाय २॥ ॐ ता मृम्य भू ॥
दानमखायां ॥
ॐ ज्ञां विष्णुव २॥ ॐ दक्षिण ॥
ॐ ज्ञां सवि २॥
ॐ ज्ञां मृभुमालिन २॥
विभूल ॥
ॐ ज्ञां नाहव २॥ ॐ कयानचि ॥
ॐ ज्ञां कर्तव २॥ ॐ कर्तु कर्तु ॥
ॐ ज्ञां यवर्त्तनामृभुय २॥ ॐ जातव
ॐ ज्ञां भवर्त्तमसाल २॥ ॐ श्रीधर ॥
गतास ॥
ॐ ज्ञां गलयतय २॥ ॐ नमाग (सखा) ॥
ॐ ज्ञां मसाल २॥ ॐ श्रीधर ॥
ॐ ज्ञां सनत्य २॥ ॐ यावकान २॥

दुर्द्धुन्विक ॥
ॐ ज्ञां वामदवाय उरुनवकायना
नायसविदवायै नानागाननक्षय २॥
ॐ मिवातामासि ॥
ॐ ज्ञां गदाय दूरुदू ॥ ॐ मृत्माकमित्य
वृत्ति उरुनगाननक्षय ॥ नृवाहनादि ॥

नगाविदिग मृमिका समुजा ॥
मयशी मरुतनिनी कर्ष ॥
ॐ गत्वाजामि ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥
ॐ ज्ञां मदि गाननक्षमनाय २॥
ॐ ज्ञां मदि गाननक्षमूरुय २॥ ॐ दानदवा
ॐ ज्ञां मद्य २॥
खडिठकाय २॥ ॐ स्यातादृष्टी ॥
ॐ ज्ञां डयवदाय २॥
ॐ ज्ञां कृत्य २॥
ॐ ज्ञां मृमय २॥
ॐ ज्ञां मरु दूरुदू ॥ ॐ मृत्माकमित्य २॥

विष्णुनाकक ऋगुवालाय २॥ ॐ तिष्ठ कर्मि
श्रुवाहनादि ॥ धूय ॥ दीव ॥ अगुगत्तदि

गगाने मय का ल पूजन ॥
मयणी मकु लनिनी कर्ण ॥
ॐ तत्त्वा जामि ॥ अयू कर्ण ॥
ॐ जौ कीर्ति दाना सनाय २॥ ॐ दवस्य
ॐ जौ कीर्ति दान मूर्ति य २॥ ॐ दाना दवा
ॐ जौ कीर्ति य २॥
ॐ जौ दवदानू दकाय २॥ ॐ दाना दवा
ॐ जौ उयवदाय २॥
ॐ जौ रुद्र म २॥ ने मत्याय २॥ ॐ जय न
दवी ॥
ॐ जौ यमाय दू रूद्र ॥ ॐ अस्माकमिद
श्रुमिठि दाना कगुवालाय २॥
ॐ दवदध ॥ श्रुवाहनादि ॥
धूय दीव ॥ अगुगत्तदि ॥ ॥

गगा वायु वा का ल पूजन ॥
मयणी मकु लनिनी कर्ण ॥
ॐ तत्त्वा जामि ॥
ॐ जौ दवद्वि दाना सनाय २॥ ॐ दवस्य
ॐ जौ दवद्वि दान मूर्ति य २॥ ॐ दाना दवा
ॐ जौ दव य २॥
ॐ जौ वृत्त काय २॥ ॐ दाना दवा
ॐ जौ उयवदाय २॥
ॐ जौ रुद्र म २॥
ॐ जौ वायव्य २॥ ॐ तव वायु ॥
ॐ जौ धजाय दू रूद्र ॥ ॐ अस्माकमि
कवाली मकु लनाय २॥ ॐ नमः मरु वा
श्रुवाहनादि धूय दीव ॥ अगुगत्तदि

गग वी भन का ल पूजन ॥
मयणी मकु लनिनी कर्ण ॥ ॐ तत्त्वा जामि
ॐ जौ सिद्धि दाना सनाय २॥ ॐ दवस्य
त्वा ॥

ॐ जाँ सिद्धि दान मूर्ति य २ ॥ ॐ दानादवी

ॐ जाँ सिद्ध य २ ॥

नाम वृत्ताय २ ॥ ॐ श्रुत्या नादधी ॥

ॐ जाँ उपवदाय २ ॥

ॐ जाँ कृत्य म २ ॥

ॐ मय २ ॥

ॐ जाँ शि श्रुत्या य दू रू २ ॥ ॐ श्रुत्या कनि

ॐ जाँ शि म नू य कृत्वा लाय २ ॥

ॐ नमः सं गव ॥ श्रुवाह नादि ॥ भूय

दीय ॥ श्रुग न्नादि ॥

तत श्रु (आदि क) पूजन ॥ मयगी मल

वनिनी कर्ष ॥ ॐ तत्वा जा मि ॥

ॐ जाँ श्रु (आ) दाना सनाय २ ॥ ॐ दव सत्वा

ॐ जाँ श्रु (अ) दाना सनाय २ ॥ ॐ दानादवी

ॐ जाँ श्रु (अ) दाना सनाय २ ॥

ॐ जाँ श्रु (अ) दाना सनाय २ ॥ ॐ श्रुत्या नादधी

श्रुतनाय २ ॥ ॐ शि शि यदा ॥

ॐ चकाय दू रू २ ॥ ॐ श्रुत्या कनि

हाटक कृत्वा लाय २ ॥ ॐ

श्रुत नम य ॥

भूय दीय ॥ श्रुग न्नादि ॥

तत उद्दि क पूजन ॥ मयगी मल

वनिनी कर्ष ॥ ॐ तत्वा यामि ॥

ॐ जाँ उद्दि कृत्वा दाना सनाय २ ॥

ॐ दव सत्वा ॥

ॐ जाँ उद्दि कृत्वा धियत य २ ॥

ॐ जाँ कृत्वा सनाय २ ॥

ॐ जाँ च व कृत्वा य २ ॥ ॐ श्रुत्या नादधी

व कृत्वा २ ॥ ॐ व कृत्वा य २ ॥

ॐ जाँ य दाना य दू रू २ ॥ ॐ श्रुत्या कनि

ॐ जाँ श्रुत्वा कृत्वा लाय २ ॥ ॐ उद्दि

धिवर्ग ॥ श्रुवाह नादि ॥ भूय दीय ॥

श्रुग न्नादि ॥

मय ॥ ॐ जाँ शि य दू रू श्रु

यहं रुद्र॥ दधयं च लं क पूजनं ॥
ॐ नमो हर्ष ॥ ॐ नमो कर्मिभ्यः ॥
मध्य॥ ध्याय पूजनं ॥ ० ॥
इति दान पूजा विधिः ॥ ॥

मिव भक्ति कलम पूजनं ॥ ज्ञान ख
प्रकाश ॥ अमु मनुष्य ॥ ॐ यद्गुह्य
स्यति त्वं हि मूर्ति नमो वाचला
नमो ज्ञानेति किं नमो मृग स मायुग
॥ ज्ञान खरुं समर्थय ॥ ज्ञान ख
काय ॥ हृदयादिन पूजा याय ॥ मूक
न मृगुष्ट कनिष्ठायां कलम हयं
म ॥ मूल कलम कालाचलान्धियं
रुगलिं गी कनर्ष ॥ ॐ ज्ञा उ मायं रु
गदूविष्णे लिङ्ग दूयधनाय च ॥ भद्र
नाय नमस्तुभ्यं रुकान्गुहका निष्ठा ॥
रुगलिं गी कनर्ष ॥ ॐ ज्ञा यथेदं कृ
तयत्नन रुगवत्तख मन्दिनं ॥ नरु

षीयं जगन्नाथ सर्वाधन वन लया
॥ नमो यादुन ध्याय ॥ अमुगं ध्याय ॥

नमो हर्ष ॥ द्यादि दिक्कलम पूजनं ॥ पू
र्ण ॥ पूर्व दान कलम पूजनं ॥ गम्य
मनु मन्दिनी कर्ष ॥ अत्यु कर्ष ॥ ॐ न
त्यायामि ॥ अमुन ॥ ॐ धव स्यत्वा ॥
सुमंगल दानाय ॥ ॐ दाना धनो ॥
॥ ॥ ॥ अमुना काना न ध्याय ॥ ॐ
वत्ता निर्भृग ॥ कनिष्ठा रुका ॥ ॐ न
ना दृष्टि वी ॥
ॐ ज्ञा नमि न ॥ ॐ नमः ॥ रुवाय ॥
ॐ ज्ञा मला कालाय ॥ ॐ नमो वद ॥
ॐ ज्ञा गमय ॥ ॐ नमो मग ॥
ॐ ज्ञा यमनाय ॥ ॐ सिता सिता ॥
ॐ ज्ञा रुला काय ॥ ॐ नमो ॥ सविभु ॥
ॐ ज्ञा रुवर्ला काय ॥
ॐ ज्ञा कमुद ध्याय ॥ ॐ नमो कर्मिभ्यः

ॐ जौ हठुक कृपा लाय २॥

ॐ श्रुधवाच ॥

ॐ जौ पूर्वदि भक्ति कला भक्तिता
वक्षनिवा मिश्या वलिं गृह १ स्वाहा ॥

ॐ जौ पूर्वदि दिगी भमा ह गध वृद्ध
या गध वृद्ध कथा गिनी कृपा ल
या गध न कृपा ना मिश्या यक न कृ
१ किन्न व गन्धर्व विभवा यत वना
लस्य र्म वलिं वृद्ध गृह २ ममः
स्वाहा ॥ धृप ॥ दीप ॥ निवद्य ॥ जाय ॥
काय ॥ नमो कुरु भवीनाथ पूर्व
विद्यमन् वन ॥ यक या कृपा दि कर्मा
वि वरु सन्निधि र्व ॥ श्रुगन्ध
दि ॥

गगाद किशदि कल भ वृद्ध न ॥

मय गी मकु धनि वी कर्मा ॥ श्रु
कर्मा ॥ ॐ तत्त्वा यामि ॥ श्रु सन् ॥ ॐ
ददत्त ल ॥

ॐ जौ सुरुपा कगा वक्षाय २ ॥ ॐ च
त्वा निभृग ॥

ॐ जौ मांगल्य वृकाय २ ॥ ॐ श्रीमा
लखी ॥

ॐ जौ सुरुपा दवाय २ ॥ ॐ दवाय

ॐ जौ उरु मन् वृकाय २ ॥

ॐ स्थाना यथिवी ॥

ॐ जौ रजि ६२ ॥

ॐ जौ विनायकाय २ ॥

ॐ जौ गमदा वर्य २ ॥

ॐ जौ सन लस्य २ ॥

ॐ जौ खर्ला काय २ ॥

ॐ जौ मरु का काय २ ॥

ॐ जौ वृष्टुली कध जाय २ ॥

ॐ श्रुत्मा कमि ल ६ ॥

ॐ जौ यम दक्षाय २ ॥ ॐ श्रुतिय

मा श्रु ॥

ॐ जौ वृद्ध कृपाय २ ॥ ॐ वृद्ध

वायमहिवासाय२॥ॐ यमनदहं
आवाहनादि॥

ॐ जांचवर्षवधुलेनवाय२॥

ॐ जां श्रुतिवतालाय२॥ॐ श्रुथेतात

ॐ जां विद्याकलाविद्यातानवसवासि
त्यावर्तिगृह२स्तोत्रा॥

ॐ जां दक्षिणदिगीममाहकागल
दूधस्यगलवदूककुरुयातंयागि
नीत्यगंदनकुरुनानिश्ययकन
ककिंतनगन्धर्वविभचधुनव
गालस्यवर्तिगृह२कुनम४स्तो
त्रा॥

कुंभनयनिकुनवर्ष॥ॐ कयानधि
जम्बूरुलायमातवाधिद॥

धूप॥ॐ धूनि॥ दीप॥ॐ गजासि
नेवद्य॥ॐ यारुलानि॥ श्रुतयग॥

ॐ मनाहति॥ पतिष्टा॥ जायसागा
नमा॥ सुयमनाजाय दक्षिणियग

धन॥ यज्ञानां विद्युताभयवका
र्थं सन्निविर्तव२॥ श्रुगंभादि॥

तापद्विमदिकुलगवृजत॥ ॥

मयगीमकुलनिनीक॥ श्रुयूक

॥ॐ गलाजामि॥ श्रुत॥ॐ दव
स्यत्वा॥ सुकर्मकृतावसाय२॥

ॐ वलानिर्भृग॥ कल्याणदानाय२॥

ॐ दानादवी॥ श्रुतकुरुकाय२॥

ॐ स्थानादधिदी॥

ॐ जां वृषाय२॥ॐ धेनुवृद्धिक॥

ॐ जां सुन्याय२॥ॐ उल्लविवतम॥

ॐ जां कावनी२॥ॐ

ॐ जां सिन्धुव२॥ॐ

ॐ जां जनताकाय२॥ॐ

ॐ जां तवलाकाय२॥ॐ

शुक्रवर्षुधजाय२॥ॐ श्रुताकमित्त

याभय२॥ वनूदस्यातक॥ ० ॥

कान्तिरुगाय२॥ॐ दृष्टस्यग॥ ॥

ॐ वृषभाकाय १॥ ॐ शूद्रनमिनि
 शूद्रिदवताय १॥ ॐ विष्णुललाट
 शूद्रिलाय १॥ ॐ शूद्रिदूर्ग ॥
 कन्याय १॥ ॐ कामकामवृद्ध ॥
 पुलाय १॥ ॐ वीरुत्साया ॥
 विष्णाय १॥ ॐ यवामीना ॥
 शंकनाय १॥ ॐ तमःसंयवाय ॥
 शूद्रिदनाय १॥ ॐ शूद्रमानुजाय ॥
 नृजाय १॥ ॐ तमस्तु नृद ॥
 दामनयुगय १॥ ॐ शूद्रनाजा ॥
 सामवदाय १॥ ॐ शूद्रशूद्रादि ॥
 पुंकाय १॥ ॐ शूद्रनात्यविष्णु ॥
 अनिष्टनाय १॥ ॐ शूद्रनादवी ॥
 शूद्रनाथादिनका १॥ ॐ तमस्तु
 स्वाहा ॥

वन्धय २॥ ॐ नमो भवन्धय ॥
 यन्त्राय २॥ ॐ त्रयविन्द ॥
 पृथमांलाय २॥ ॐ श्रीगणेशाय ॥

वनूषाय ऋं द मासनीं १॥ पूष्यं २॥
 आवाहनं ॥ उक्कदि वा (ध) ग ल वा नि
 धी मां ग (ल) न य र्थ न्य स हा त्य ना रि श
 वि द्या ध न त्या म न गी य मां नै उ हित्व
 म स रु ग व त्त म रु ॥ आ ग रु ग व
 न्व नू ष ॥ ध्या त ॥ ॐ ज्ञां म क ना स न
 मा नू रं वा म ह रु ध ता स च । (म)
 की न क न कं सूर्यं व नू षं ध्या त
 पू व ॥ ॐ ज्ञां वां वां वूं ६ व नू ष य या
 म ह ला य श्रु वां य त थ म क ना नू र
 य २ ॥ व नू ष य या म ह ला य श्रु वां
 य त थ म क ना स ना य २ ॥ ॐ ॐ म
 म व नू ष १ ॥ आ वा ह ना दि ॥ ॥
 ॐ ज्ञां त व न्ते उ त्त रु रं व वा य २ ॥
 ॐ ज्ञां का ला क रु ण वा ला य २ ॥
 ॐ य नू डा ॥
 ॐ ज्ञां नि वृ त्ति क ला नि वृ त्ति ता न ष
 वा सि ण्णा व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ ० ॥

ॐ जं वरुणाहि माह गण नू ड गण वद
क क ग वाल या गि ना ख य ह न क र ना
भी य क न क कि न न ग न्व व वि भ च ध
ग व ग ल ख रू मां व लि गृ क र लु न म
स्वाहा ॥ ० ॥

कृ (भ न य नि न कृ र्ण ॥ ॐ क या न मि
ॐ धू न सि ॥ धू य ॥ ॐ न जा मि ॥ दी य ॥
ॐ या रु ला ति ॥ ॐ श्रु त्त य न ॥ ॐ म
ना रु ति ॥ य ति षा जा य मा रु ॥ न मा
मु ग ज ला भि य द वि र्ण य क न क की
वरु र्ण व म सा द र व न क र्थ स ति भि
रु व ॥ श्रु ग ग न्ध दि ॥ ० ॥

ग मा ड रु न दि क ल म यू ज न ॥
म य ण न ति ना क र्ण ॥ श्रु यू क र्ण ॥
ॐ न त्वा जा मि ॥ श्रु स न ॥ ॐ द व स्य त्वा ॥
श्रु मा ग्ध द ना य ॥ ॐ द ना द वा ॥
सू र्म ग ल गा न स य ॥ ॐ व त्वा नि भृ ग ॥
पू क र्ण का य ॥ ॐ स्या ना द धि वी ॥

व ह सा रू का य ॥ ॐ य द वा सा ॥
ॐ जं द वी ॥ ॐ द वी ना धा ॥
ॐ जं व धु य ॥ ॐ द र्ण द र्ण वा वा न ॥
ॐ जं को भ की ॥ ॐ
ॐ जं ग लु की ॥ ॐ
ॐ जं स ल ला का य ॥ ॐ ग श्रु स्य मू ॥
ॐ जं धू व लो का य ॥ ॐ
ॐ जं सू र्म ख धं जा य ॥ ॐ श्रु मा क मि ॥
ॐ जं ग दा य ॥ ॐ सू य र्ण वा वी ॥
ॐ जं ज ड क ण य ॥ ॐ द ह स्य ग ॥
ॐ जं सा ध य ना का य ॥
ॐ जं श्रु वि द व ना य ॥ ॐ जा न व द स ॥
ॐ जं प लू मा य ॥ ॐ वि ज द ह ॥
ॐ जं प री सा य ॥ ॐ
ॐ जं ध न व ॥ ॐ ध त्वा ना ग ध त्वा ॥
ॐ जं म क ना य ॥ ॐ य नू य मृ ग य ॥
ॐ जं क रू का य ॥ ॐ वा य वी वी ॥
ॐ जं स दा मि वा य ॥ ॐ
ॐ जं म क रू व ॥ ॐ

ॐ जौ मधुवाय २॥ ॐ मानसाक ॥
 ॐ जौ महाधवाय २॥ ॐ मानासाहर्क
 ॐ जौ कलियुगय २॥ ॐ मूकनाजाय ॥
 ॐ जौ मूधर्ववाय २॥ ॐ सत्तादवी ॥
 ॐ जौ नादव २॥ ॐ कयानधिग ॥
 ॐ जौ कतव २॥ ॐ कहु कहु ॥
 ॐ जौ धनिष्ठादि १॥ तक्रण ॥
 ॐ तक्रणय ४ स्वाहा ॥
 ॐ जौ कूववाय २॥ ॐ कविदंगज ॥
 ॐ जौ पर्वसूत्राय २॥ ॐ त्वजविष्ठा ॥
 ॐ जौ वृषमालाय २॥ ॐ श्रीधरा ॥
 ॐ जौ कूववाय ४०० मासर्त २॥ पूर्ण
 आवाहन ॥ नमो हिय कूववाय कू
 वका प्रसादतिर्थत्वलकापूनीमा
 सध्वितर्कसूनसमसर्व नृहालयू
 जं रगवत्तमस्तु ॥ आगुरुगवत्त
 यस्तु ॥ ध्यान ॥ यस्तु मधुमानुद
 गदाहर्कधनाधियं ॥ योतवर्तुम
 हाकार्य ध्यायदुरुवदिकति ॥

ॐ जौ सौ सौ सौ वेगवलयगदाहर्क
 यधनाधियतयदयासनाय २॥ क
 ववायगदाहर्काय धनाधियतय
 दयासनाय २॥ ॐ कविदंगज ॥ श्री
 वाहनादि ॥
 ॐ जौ यवर्जरीषलरेववाय २॥
 ॐ जौ चकपादकृपायालय २॥ x
 ॐ जौ यतिष्ठागवलयवातिष्ठावलि
 पृष्ठ २ स्वाहा ॥ ॐ जौ कूववालिमा
 हगलकूदगलयतिवदक कृपाया
 लयागिनीयायदतक्रण नागिष्ठा
 यकनक्र ४ किन्नवगत्वर्वविभव
 धनवतालया ४०० मां वलिपूजां गृ
 क्र २ तुनमं स्वाहा ॥ कूधनयनिक
 वर्ण ॥ ॐ कयानधिग ॥ ॐ धूवसि ॥
 धूप ॥ ॐ गजासि ॥ दीप ॥ ॐ यारुल
 ती ॥ ॐ मूत्रयग ॥ ॐ मनाहृति ॥
 यतिष्ठा ॥ जायका ॥ तमा सुगंध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नाथक कूबानादाचिदिक्कति। वरु
कर्महयहानां वैश्वानवनसाम्यद ॥
श्रुगगत्वादि॥

गगामिदि कलस्यूजनं॥
 मयणीमकुलनिनीकृष्णं॥ नूत्यूर्ध्वं
 तुं गत्वायामि॥ आसत्तं॥ तुं दवस्यत्वा
 तुं ज्ञांसिद्धिदाहृक्कायं॥ तुं नूयन्तां॥
 तुं ज्ञांमद्विदायेश॥ तुं वदाहमर्गं॥
 तुं ज्ञां कूम्भदधजायेश॥ तुं नूत्माकमि
 तुं ज्ञां नकयेश॥ तुं यणवानां॥
 तुं ज्ञां कृणायेश॥ तुं हृदयगुरु॥
 तुं ज्ञां विजययताकायेश॥ तुं नूत्तुआ
 तुं ज्ञां नूषिदवताये नकवर्धुयेश
 दिष्टायेश॥ तुं नूकृष्णत॥ आवाह
 न॥ उक्कृदिसर्वां मनहव्यवाह मू
 निषुवीनैवशिगारियूकं॥ गजाव
 लीलाकगले॥ ससिद्धिं नैमाध्वनैव
 कृकवैतमम्॥ नूगुरुगवत्तप

ॐ जौं काग सनाय २॥ ॐ अग्निमूर्ति
 य २॥ ध्यानं ॥ काग यथा सती दर्व
 भक्ति हस्त महावर्त । न कवेर्मु
 गजाङ्ग वेधं तर्त न मास्य ह ॥
 ॐ जौं नौ नौ नै ॥ अग्रय भक्ति हस्त
 यगजाधियतय काग वाह नाय २॥
 अग्रय भक्ति हस्त य काग सनाय २
 ॐ अग्निमूर्ति ॥ आवाहनादि ॥
 ॐ जौं नू अग्रय वलि गृह २ स्वाहा ॥
 ॐ जौं नू नू नू वाय २॥
 ॐ जौं लिय नोक्त क क क यालाय २॥
 ॐ लिय व क ॥
 ॐ जौं अग्रय अद्वि दाना वासि श्याव
 लि गृह २ स्वाहा ॥
 ॐ जौं दि द्याह गल नूड गल वदू क क
 यालया गिती त्या यदन कण नाभि
 त्या यक न क ४ किल न गत्व वृथि भव
 धन वगल ल्य गूमी वलि पूजा गृह २
 स्वाहा ॥ क (भन य निरु न र्ण ॥ ॐ कया

नमिष ॥ धूमसि ॥ धूम ॥ हुं गङ्गासि ॥ दी
प ॥ हुं यारुलनी ॥ हुं मृतयत ॥ हुं म
नाहति ॥ प्रतिष्ठा ॥ जाय ॥ साय ॥ स
कडि कनमरुतु ॥ अस्तयदिगधा
धन ॥ यज्ञार्थं कर्मसंधव नकार्थं
सन्तिभिरिव ॥ अणगत्वादि ॥ ॥

ताननेर्मह्यदिकालसपूजनं ॥ गय
णी मरुतुतिनीकलं ॥ अस्तु कलं ॥
हुं गत्वाजामि ॥ अस्तनं ॥ दवेस्यत्वा ॥
हुं जां कौर्किदुकाय ॥ हुं स्वस्तिनेब्द्धा ॥
हुं जां वृद्धिदाये ॥ हुं अर्कं कर्मकर्म ॥
हुं जां वामना कधजाय ॥ हुं अस्माक
मिदु ॥

हुं जां स्वप्नाय ॥ हुं जां वदध ॥
हुं जां कल कणाय ॥ हुं वृद्धस्य गङ्गा
हुं जां धृतिपताकाये ॥ हुं अर्द्धासा
हुं जां अविधवगाय ॥ हुं अलवर्धुय
वृद्धदधाय ॥ हुं विरुक्ता न ॥
आवाहन ॥ चक्षुहि न कागलनाय
कलं विलास वनालविभवसंध

॥ समाधनं यासु सुनाविताथ लोक
धनत्वं रगवत्तमम् ॥ अगच्छ रग
वत्तमम् ॥

हुं जां प्रतासनाय ॥

हुं जां नेमिति मूर्किय ॥

धार्त ॥ भवदृष्टसमासीनं स्वप्न
लं महाबलं ॥ धूमवर्धुमहादीकं
मायादुकाकर्मधनं ॥

हुं जां कौर्किदुकाय ॥ हुं नेमत्य स्वप्न
सायनाकसाधि ॥ वतय भवानुरा
य ॥ हुं अर्कं दवी ॥ आवाहनादि ॥
हुं जां कौर्किनेमत्य वलिगृह ॥ स्वा
हा ॥

हुं जां वरुणकाधरेनवाय ॥

हुं जां अग्निदिका कणयालाय ॥

हुं वृद्धदध ॥

हुं जां नेमत्य कौर्किदानवातिथाव
लिगृह ॥ स्वाहा ॥

हुं जां नेमत्य मां रगलवृद्धगलव
दक कणयालयागिनीत्याद्यहन

कृष्णमामिषा यक्रवक्र ४ किन्नर
गन्धर्वविभवेयुतवतालस्य ००
मां वलियूजां गृह्णन्तु नमः ४ स्वाहा ॥
कृष्णनयनिसुवर्ण ॥ ॐ कयानमि ॥
ॐ धूवसि ॥ धूव ॥ ॐ गङ्गासि ॥ दिवा ॥
ॐ यारुलती ॥ ॐ मृतयग ॥ ॐ म
नारुति ॥ ॐ तिष्ठा ॥ जाय ॥ साय ॥
नमस्तु गति ॥ अमय नैर्मल्यदिग
धीधन ॥ यज्ञानां नक्रक्षथय स
य ४ सन्तिहिगारुव ॥ मृगगन्धादि ॥

रगावायुदिकामयूजनं ॥ गमय
जीमकुलतिनीकृष्ण ॥ मृत्युकर्ष ॥
ॐ तत्त्वामि ॥ असर्न ॥ धवस्यता ॥
ॐ जां धृतिवृत्ताय ॥ ॐ सगमिन्द्रस
ॐ जां सिद्धिदार्थ ॥ ॐ आन्तोरुद्रा ॥
ॐ जां सर्वेनपधजाय ॥ ॐ मृत्माक
मिन्द्र ४ ॥

ॐ जां धृजदत्ताय ॥ ॐ वायवायादि
ॐ जां नाथकृष्णाय ॥ ॐ वृहस्पते ॥

ॐ जां नृषिदेवताय हविगवर्धुयग
नृजय ॥ ॐ सूर्य ॥ ॐ सिंगनूत्ता ॥
ॐ जां वायव ॥ ॐ दमासर्न ॥ ॥ यूर्य ॥
आवादन ॥ ॥ अदियक्रमनयक्र
वीर्य मृगमृग ॥ ४ सहसिद्धसंघे
प्राप्तविग ४ कीलेकलसहाया गृ
हाययूजां रगवन्तमस्तु ॥ मृगक
रुगवत्त्वमीन ॥

ॐ जां मृगसन्ताय ॥
ॐ जां वायुमूर्त्य ॥
धनं ॥ मृगसन्तकिर्णदर्व धृजद
र्णमहावर्ण ॥ हविद्वर्णसूदीकाङ्ग
वायुदिक्काथमोधनं ॥
ॐ जां यीर्यीर्यीर्यी वायवधृजदत्ता
यववताधिय ॥ ॥ तथ मृगनृजय ॥
॥ ॐ तववायु ॥ आवाहतादि ॥ ॥
ॐ जां वायववर्णगृह्णन्तु स्वाहा ॥
ॐ जां यवर्णकवालीमरेनवाय ॥
ॐ जां कालवृषकृष्णवालीय ॥

ॐ ह्रीं घृत वा वा न॥
ॐ ह्रीं वृष्टि दान वा सिद्धि वलिं गृह्ण
स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वायव्य माह गल नूद गल व
दूक कण वाल्या यद न कण वा नि
त्या यक न क ४ किन्न न गत्व विभ
वध ग व ग ल य ॐ मी वलि पूजां गृ
ह्ण २ तु न म ४ स्वाहा॥

क (भ न य नि क न व ॥ ॐ क य न वि ॥
ॐ धू न ति ॥ धू व ॥ ॐ ग जा ति ॥ दी य ॥
ॐ या रु लं ती ॥ ॐ अ न य ग ॥ ॐ म न
र ति ॥ धि ति ॥ जा य ॥ का य ॥ न मा
मु ग ज ग त्या ६ क न क न न मा ति ॥
य क्क र्थ क र्म ६ म ल न क र्थ म ति
धी र व ॥ अ ग ग ६ दि ॥ ॥

त त ॐ भ न दि क ल ६ यू ज ६ ॥
म य गी म ल ६ ति नो क ६ ॥ अ य
क ६ ॥ ॐ त त्वा या नि ॥ अ स न ॥
द व स त्वा ॥

ॐ ह्रीं मा क द का य २ ॥ ॐ ह रि य न ॥
ॐ ह्रीं वृष्टि दाने २ ॥ ॐ ह र स्य न व नि ॥
ॐ ह्रीं सु व ति ६ ध जा य २ ॥ ॐ अ स्मा
क मि त् ॥

ॐ ह्रीं ति पू ल रु का य २ ॥ ॐ ति य न्व क
ॐ ह्रीं का ति कं ग य २ ॥ ॐ ह र स्य न ॥
ॐ ह्रीं वि स ल य ग का य २ ॥
ॐ अ रि त्वा भू ल ॥

ॐ ह्रीं अ वि दे व ता य ॥ अ व धू य
का ला वि द व ता य २ ॥ ॐ ती ल गी वा
ॐ भ न ता य ६ द मा स न २ ॥ वृ ष २ ॥
अ वा ह न ॥ अ क दि वि ॥ अ व न द व
द व ति पू ल ख द्वा ग क वा ल या ६
ला क स्य य ६ अ व र ति ति धी गृ हा
६ यू ज ६ र ग व न म ॥ अ ग क र
ग व न्नी ॥

ॐ ह्रीं वृ वा स ता य २ ॥
ॐ ह्रीं ॐ भ न मू र्ख य २ ॥
६ न ॥ वृ वा स न ति र्ग भ न ६ सु र्ग

महुरिकायमं । विभूलाकधनं
वैष्णवदीपनदिकृतिं ॥

ॐ जौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ भानाय वि
भूलहकाय ह्रीं ॥ विभयतय ह
ववाहताय २ ॥ ॐ जौं ॐ भानाय
विभूलहकाय ह्रीं विभयतय ह
वाहताय २ ॥ ॐ तमी भानं ॥
आवाहतादि ॥

ॐ जौं भवमे सदानेन वाय २ ॥
ॐ जौं शीमनूय कणवालाय २ ॥
ॐ भूषवाव ७ ॥

ॐ जौं वृद्धिदानवासिण्या वलिगृ
ह २ लाहा ॥ ॐ जौं ॐ भानदिगा
हगहनं हगहनवदूकयानितीया
गहनकाणनामिण्या यकनक ४
किन्ननगन्धर्वविभवखतवताल
य ॐ मां वलिपूजागृह २ लुनमः
लाहा ॥ कभनपनिस्तन १ ॥
ॐ कयानसि ॥

ॐ धूनासि ॥ धूय ॥ ॐ गजासि ॥ दीप
ॐ यारुलनी ॥ ॐ मृतपग ॥
ॐ मनाहृति ॥ यतिष्ठा ॥ जायकार ॥
हृन्नाथनमस्तु ॐ भानदिग
वीधन १ यकनक १ ॥ अर्थय द
वसन्तिदिगा ह्रीं ॥ मृगगन्धदि ॥

तमा १ ॥ अदिकलभयुजतं ॥
मयणीमकुंठतिनी कर्ण ॥
मृत्युकर्ण ॥ ॐ तत्वायामि ॥
मृत्युर्न ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥

ॐ जौं दानाय २ ॥ ॐ दानादवी ॥
ॐ जौं मृमकवृकाय २ ॥
ॐ मृनाय विवी ॥
ॐ जौं मृतनाय २ ॥ ॐ लीषिषदा ॥
ॐ जौं हृषिषजाय २ ॥ ॐ मृमाकमि
ॐ जौं वक्रहकाय २ ॥ ॐ मृपलु
यावे ३ जत्य ॥
ॐ जौं ॥ धय कृणाय २ ॥ ॐ वृहस्पति ॥

ॐ ज्ञानियताकार्ये ॥ ॐ नवाय ॥
ॐ ज्ञानि विदेवताय नालवर्धुय मू
नकाभिधवताये ॥ ॐ नमास्तु सूर्य ॥
मृतकाय ॥ ॐ दमास्तु ॥ ॐ यूर्य ॥
मूवाहन ॥ ॐ धिवागालवनाभ
नय नागमस्तु नाकिन्नवगमयमान ॥
नकागलास्तु मन्त्रलाकसिद्धे नन
कनकाधनमस्तु दीय ॥ ॐ गुरु
गवन्विष्णु ॥

ॐ ज्ञानि कूर्मासनाय ॥
ॐ ज्ञानि मूविष्णु मूर्क्य ॥
ॐ ज्ञानि कूर्मयष्टसमावृष्टं वक्र
हस्तं सुभाशतं ॥ नीलाश्वदतिरं
तिर्यं ॥ गन्तमामिजनादितं ॥
ॐ ज्ञानि श्री ३ मृतकाय वक्रहस्ताय
यागालाभियतय कूर्मासनाय ॥
ॐ ज्ञानि मृतकाय वक्रहस्ताय ना
गविषतय कूर्मासनाय ॥

मूवाहनदि ॥
ॐ ज्ञानि दुर्द्धकनाय वलिं गृह्णतु
हा ॥
ॐ ज्ञानि हाटक रेनवाय ॥ वलि ॥
कूर्मातयनिस्तुवर्ण ॥
ॐ कयातयिस्तु ॥ ॐ धूतति ॥ धूत ॥
ॐ गजासि ॥ दीय ॥ ॐ यारुलती ॥
ॐ मृतयतं ॥ ॐ मनास्तु ॥ युति
ष्टा ॥ जाय ॥ लाण ॥ मूधमृत्तनम
स्तु विष्णुवागालमाशिता ॥ य
हस्तं वक्रहस्तं मृत्तनसिद्धि
तां रव ॥ मृत्तनमादि ॥
गतदुर्द्धदिकलमयूजतं ॥
मयणीमस्तु एतिनीकृष्टं ॥
मृत्युकृष्टं ॥ ॐ गताजामी ॥
मृत्तनं ॥ ॐ धवस्तु ॥
ॐ ज्ञानि दुर्द्धकनाय ॥ ॐ धनादवी ॥

॥ श्रीगुरुकृष्णं नमः ॥

लक्ष्मीकृपाय २॥ ॐ हृदय ॥

यताकाय २॥ ॐ हृदय ॥

ॐ जौयकासनाय २॥

ध्यान ॥ यमसिंहासनावर्द्ध हिमम

जानसतिर्ग ॥ जिनं दिव्यवृषांगी

हमाश्वनखरुविगां ॥ स्वप्नरुटक

हलुके यथात्यलसुभानिधी ॥ १००

ध्यात्वा महादवी महालक्ष्मी नमाम

हं ॥ ॐ जौलक्ष्मी मूर्ति २॥ ॥

ॐ श्रीमाल ॥ ॐ जौ सांसां सौ स्त्री श्रीम

हालक्ष्मी २॥ बलि ॥ आवाहना

दि ॥ ॐ धूवति ॥ धूय ॥ ॐ गंजाति ॥

दीप ॥ ॐ यारुला ॥ ॐ श्रुतपग ॥

ॐ मनाहति ॥ प्रणिष्टा ॥ जाय ॥

काय ॥ कूर्मवीभसमासीतं ॐ स्वा

नकर्मदाहलं ॥ यमदयित्तस्यक

लक्ष्मीदवीनमोमहं ॥ ॥

श्रुगंधादि ॥

वायुवस्यदकि ॥ कणकलसवू

जर्त ॥ मयणीमकुलानिनी कर्ष ॥

श्रुत्यकर्ष ॥ ॐ गत्वाकानि ॥

श्रुत ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥

कृपाय २॥ ॐ हृदय ॥

यताकाय २॥ ॐ श्रुताकामिनु ॥

ॐ जौयतासनाय २॥

ध्यान ॥ ॐ धातुर्गमहावर्द्ध नील

वर्द्धमहाद्युति ॥ बहुशुद्धीमदध

नं ॐ मन्त्रस्वर्गांगधनवी ॥ कर्तिका

वालहलुके ॥ रेववा रेववाश्वकी

॥ १०० ध्यात्वा महावर्द्ध कणवाल

केचित्तयत् ॥ ॐ जौ कौ कौ कौ कौ

स्वस्तनकणवालाय २॥ बलि ॥ धू

श्रावाहनादि ॥ दधुमूजा ॥

ॐ धूवति ॥ धूय ॥ ॐ गंजाति ॥ दीप ॥

ॐ यारुलाति ॥ ॐ श्रुतपग ॥ ॐ म

नाहति॥ धर्मा॥ जाय॥ सा॥ सय
यज्ञायवागाङ्गं कयालवलिहृषणं
स्वप्नरुटकस्वर्गं कयालनमा
महं॥ गृगन्धादि॥ ० ॥

वायुव्ययपूर्वगद्यति कलभयुजा
॥ गयणी मकुलतिनीकृष्णं॥ गृगन्धा
दि॥ गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

यगाकाय॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

धर्मा॥ मृषासतहिर्गदर्वं (धर्मा
इद्विद्वानननं॥ नीलात्यलाकृष्णं
भनाकृष्णनम॥ मूललकु कया
गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

लद॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

गृगन्धादि॥ गृगन्धादि॥

वृक्षविग्रहः । दधनमक्रयस्तु सर्व
 भक्तविनाशनं ॥
 ॐ जंगुर्वशः ॥
 ॐ जंगुर्वमूर्त्यः ॥ २ ॥ ॐ वज्रयज्ञानं
 श्रावहनादि ॥ ॐ धूवति ॥ धूय ॥
 ॐ गङ्गाति ॥ दीय ॥ ॐ यारुलिनी ॥
 ॐ श्रुतयग ॥ ॐ मनाहृति ॥ यतिष्ठा ॥
 जाय ॥ क्षाण ॥ सुवर्णवर्णसंकाशं
 यस्तुकाक कवचयः । सर्वभक्तुकि
 यारिहं गुर्वध्वनमाम्यहं ॥
 श्रुगन्त्यादि ॥

गङ्गाशिवमकि कलस्युज्ज्वलं ॥
 त्यास ॥ श्रुववाणयुज्ज्वलं ॥
 मयणमकुलनिनीकलं ॥
 श्रुत्युक्तं ॥ ॐ गत्वा जानि ॥
 श्रासर्तं ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥
 ॐ जंगवर्मादि ॥ ४ ॥ ॐ जंगवर्मा

दिभः ॥
 श्रुष्टिहयुज्ज्वलं ॥
 श्राधनमक्रयस्तुत्यादि ॥ ५ ॥
 ॐ जंगवर्मासनाय ॥
 ॐ जंगसिंहासनाय ॥
 ॐ गत्वा जानि ॥ ॐ त्वमप्युक्ति ॥
 ॐ श्राधाश्रुताग ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥
 ॐ धावाधवी ॥ ॐ वत्वाविभृक्ता ॥
 ॐ श्रामित्य ॥ श्रावहर्त ॥
 ॐ हिनक्षगर्ह ॥
 ॐ ॐ मभगन्त ॥
 ॐ वज्रं नद्यः ॥ श्राजिष्ठकलसं
 धार्त ॥ कर्षुकायनिदीयर्त
 यज्ञलकमसाजर्त ॥ मभ्रवज
 गदायद्य वनमालाविरुविर्ग
 विचित्रमूक्तध्वस्तु रुक्षंसक
 विरुविर्ग ॥ गङ्गाकच्छ महाधा
 नं द्वाणि मभ्रकिस्त्युर्ग ॥ कया

लखदाङ्गयनर्गु मूलधुमनूमातिक
 । बीजपूर्वववनर्द आयुधतिविवि
 कय७॥ मृत्यदाङ्गदयायाचैर् गज
 वर्मावृणविगद । गङ्गुर्न हीमनना
 द् रक्तयन्त्राविविकय७॥ ॐ
 भगत्वावमिष्ठकु सकिं कयनमेश
 वी । मूर्तिमनचवित्तय स्वदहयूज
 यक्त४॥ यक्षदावाहयद्वद्व द
 त्यममहुलायनि । दार्णिभक्तनमक्त
 वू पूषाङ्गलि उयत्तद७॥ अर्ध
 जलनसक्तर्धमूडीपूर्ववर्द्धनय७॥
 गगालयाङ्गमयर्ची आगङ्गाति तद
 र्वय७॥ ॐतिव्यार्त॥ ॥ अथान
 मूलमक्तलयूजर्त॥ ॐजांजांभीश्र
 धानधनीभक्ति सहिताय२॥ म॥
 भिवभक्ति कलसयूजर्त॥
 ॐजांस्थानागाययश्चिमवकाय२॥

ॐजांर्ववामदवायडक्तनवकाय२॥
 ॐजांलंश्रुधानाय दक्षिणवकाय२॥
 ॐजांयगत्यनूषायपूर्ववकाय२॥
 ॐजांकींभीभनाय दुर्धवकाय२॥
 आवाङ्ग॥ ॥ गगावामादि॥ ॐजां
 वामाय२॥ ॐक्षुषाय२॥ ॐत्रोक्षे२॥
 ॐजांकात्मे२॥ ॐजांकलविक॥ १॥
 ॥ ॐजांवलविक॥ १॥ ॐवल्यमे
 थत्मे२॥ ॐजांसर्वरूपादमत्मे२॥
 पूर्वदिभीभनार्त कंभनव॥
 वामादीन्संपूष॥ कयालीभदिय
 शाङ्कक॥ ॥ ॐश्रुं कयाली
 भरेनवाय२॥ पूर्व॥ ॐजांद्रुमि
 खिवारुन रेनवाय२॥ अ॥
 ॐजांश्रुंकाधरेनवाय२॥ दक्षि॥
 ॥ ॐजांद्रुविकनालरेनवाय२॥
 नेमत्य॥ ४॥ ॐजांद्रुमत्तथरेनवा
 य२॥ यश्चिम॥ ५॥ ॐजांद्रुमद्यताय

१२॥ वायव्य ॥ ६ ॥
 ॐ जां कूं सामभवन ॥ वायव्य ॥
 उरुन ॥ १॥ ॐ जां कूं विद्यानाज ॥
 वायव्य ॥ २॥ ॐ जां कूं ॥ तत्तावताजि
 य ॥ वलुदि ॥ ३॥ ॐ जां कूं ॥
 ये ॥ १॥ ॐ जां कूं ॥ ४॥ ॐ जां
 न ॥ मदाभनाय ॥ ५॥ ॐ जां कूं ॥
 स्वाय ॥ ६॥ ॐ जां कूं ॥ ७॥ ॐ जां कूं ॥
 ८॥ ॐ जां कूं ॥ ९॥ ॐ जां कूं ॥
 नव ॥ १०॥ ॐ जां कूं ॥ ११॥ ॐ जां कूं ॥
 १२॥ ॐ जां कूं ॥ १३॥ ॐ जां कूं ॥
 १४॥ ॐ जां कूं ॥ १५॥ ॐ जां कूं ॥
 १६॥ ॐ जां कूं ॥ १७॥ ॐ जां कूं ॥
 १८॥ ॐ जां कूं ॥ १९॥ ॐ जां कूं ॥
 २०॥ ॐ जां कूं ॥ २१॥ ॐ जां कूं ॥
 २२॥ ॐ जां कूं ॥ २३॥ ॐ जां कूं ॥
 २४॥ ॐ जां कूं ॥ २५॥ ॐ जां कूं ॥
 २६॥ ॐ जां कूं ॥ २७॥ ॐ जां कूं ॥
 २८॥ ॐ जां कूं ॥ २९॥ ॐ जां कूं ॥
 ३०॥ ॐ जां कूं ॥ ३१॥ ॐ जां कूं ॥
 ३२॥ ॐ जां कूं ॥ ३३॥ ॐ जां कूं ॥
 ३४॥ ॐ जां कूं ॥ ३५॥ ॐ जां कूं ॥
 ३६॥ ॐ जां कूं ॥ ३७॥ ॐ जां कूं ॥
 ३८॥ ॐ जां कूं ॥ ३९॥ ॐ जां कूं ॥
 ४०॥ ॐ जां कूं ॥ ४१॥ ॐ जां कूं ॥
 ४२॥ ॐ जां कूं ॥ ४३॥ ॐ जां कूं ॥
 ४४॥ ॐ जां कूं ॥ ४५॥ ॐ जां कूं ॥
 ४६॥ ॐ जां कूं ॥ ४७॥ ॐ जां कूं ॥
 ४८॥ ॐ जां कूं ॥ ४९॥ ॐ जां कूं ॥
 ५०॥ ॐ जां कूं ॥ ५१॥ ॐ जां कूं ॥
 ५२॥ ॐ जां कूं ॥ ५३॥ ॐ जां कूं ॥
 ५४॥ ॐ जां कूं ॥ ५५॥ ॐ जां कूं ॥
 ५६॥ ॐ जां कूं ॥ ५७॥ ॐ जां कूं ॥
 ५८॥ ॐ जां कूं ॥ ५९॥ ॐ जां कूं ॥
 ६०॥ ॐ जां कूं ॥ ६१॥ ॐ जां कूं ॥
 ६२॥ ॐ जां कूं ॥ ६३॥ ॐ जां कूं ॥
 ६४॥ ॐ जां कूं ॥ ६५॥ ॐ जां कूं ॥
 ६६॥ ॐ जां कूं ॥ ६७॥ ॐ जां कूं ॥
 ६८॥ ॐ जां कूं ॥ ६९॥ ॐ जां कूं ॥
 ७०॥ ॐ जां कूं ॥ ७१॥ ॐ जां कूं ॥
 ७२॥ ॐ जां कूं ॥ ७३॥ ॐ जां कूं ॥
 ७४॥ ॐ जां कूं ॥ ७५॥ ॐ जां कूं ॥
 ७६॥ ॐ जां कूं ॥ ७७॥ ॐ जां कूं ॥
 ७८॥ ॐ जां कूं ॥ ७९॥ ॐ जां कूं ॥
 ८०॥ ॐ जां कूं ॥ ८१॥ ॐ जां कूं ॥
 ८२॥ ॐ जां कूं ॥ ८३॥ ॐ जां कूं ॥
 ८४॥ ॐ जां कूं ॥ ८५॥ ॐ जां कूं ॥
 ८६॥ ॐ जां कूं ॥ ८७॥ ॐ जां कूं ॥
 ८८॥ ॐ जां कूं ॥ ८९॥ ॐ जां कूं ॥
 ९०॥ ॐ जां कूं ॥ ९१॥ ॐ जां कूं ॥
 ९२॥ ॐ जां कूं ॥ ९३॥ ॐ जां कूं ॥
 ९४॥ ॐ जां कूं ॥ ९५॥ ॐ जां कूं ॥
 ९६॥ ॐ जां कूं ॥ ९७॥ ॐ जां कूं ॥
 ९८॥ ॐ जां कूं ॥ ९९॥ ॐ जां कूं ॥
 १००॥ ॐ जां कूं ॥

१२॥ ॐ जां कूं ॥ विकटाय ॥ २०॥
 ॐ जां कूं ॥ जातानि ॥ २१॥
 ॐ जां कूं ॥ दक्षक बालिन्ये ॥ २२॥
 ॐ जां कूं ॥ शुक्र बवत्ये ॥ २३॥
 ॐ जां कूं ॥ यूयतावि ॥ २४॥
 ॐ जां कूं ॥ मृतम्याये ॥ २५॥
 ॐ जां कूं ॥ संहानि ॥ २६॥
 ॐ जां कूं ॥ रुद्र कात्ये ॥ २७॥ ॐ जां कूं ॥
 रुद्राय ॥ २८॥ ॐ जां कूं ॥ नूजाये ॥
 २९॥ ॐ जां कूं ॥
 ॥ ॐ जां कूं ॥ शिमाये ॥
 ॐ जां कूं ॥ मरुदिकाये ॥ ३२॥
 वतिगीयुतर्त ॥ पूर्वदि ॥ ३३॥
 ॐ जां कूं ॥ म्याये ॥ पूर्व ॥
 ॐ जां कूं ॥ हानाय ॥ दक्षिण ॥
 ॐ जां कूं ॥ वाक्ताय ॥ पश्चिम ॥
 ॐ जां कूं ॥ श्रियाय ॥ उरुन ॥

ॐ जां भूधर्माय १॥ भू (मू॥
 ॐ जां भूकानाय १॥ नेमय ॥
 ॐ जां भूवेनाकाय १॥ वायुव ॥
 ॐ जां भूनेश्वर्याय १॥ वी भूत ॥
 दद्यादिषु (मनसंयुक्त ॥
 आवाहनादि ॥ लिंगमूला ॥
 ॐ जां श्रीं यशू कुरु ॥ धर्मकृत्तम
 लकलसंयुक्त ॥
 याशुयगमकुत्त ॥ जाय ॥
 ॐ वक्रयकान ॥ ॐ वृद्धविष्णु ॥
 ॐ जिवातामासि ॥ आवाहनादि ॥
 कृ (मनसंयुक्त ॥
 ॐ यागनूद ॥ ॐ धीमाल ॥
 ॐ धून्सि ॥ ॐ गजासि ॥
 ॐ यारुलिनी ॥ ॐ भूतयग ॥
 ॐ मनाहाति ॥ यति ॥
 याशुयगमकुत्त ॥ जाय ॥ स्तुति ॥
 भूधर्माय १॥ भूधर्माय १॥ भूधर्माय १॥

यत्तु वक्रयकान् वाहनीर्थं
 यूक्तं सकलजलनि (४४) यत्तु
 लोच (४४) यत्तु यत्तु यत्तु
 लिवनसकले १॥ सेविर्ग सर्वश
 वं तत्त्वतोमिश्रका जिवभक्ति
 पूर्णकुरुमूर्ति तमा मु ॥
 भूगमत्तादि ॥

तत्तु वक्रयकलसंयुक्त ॥
 मयगीमकुत्त ॥ तिनीकृत्त ॥
 भूधर्माय १॥ ॐ तत्त्वयामि ॥
 आसर्त ॥ ॐ धवस्यत्ता ॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ वनाय १॥
 भूधर्माय १॥ ॐ जां वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ जां वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ जां वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ जां वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ जां वनाय १॥
 ॐ जां वनाय १॥ ॐ जां वनाय १॥

ॐ ज्ञां श्रुतिनकुमानाय २॥ ॐ त्रिषाडवा ॥
ध्यानं ॥ यद्वासन ४ यद्वाकन ४ यद्वागर्
समद्युति ॥ सकाश ४ सकजकुश ४ दिव
ज ४ स्यात्तदानविश ॥
श्रुदित्याये व्रीधनाय श्रुतिप्रत्यधि
दवगायतम ४ ॥ ॐ श्रुदुष् ॥
ॐ श्रियम्वर्क ॥ ॐ श्रुतिदूर्ग ॥
श्रुवाहनादि ॥ कृष्णतयविरुनर्ण ॥
ॐ कयानधि ॥ ॐ धूवसि ॥
ॐ गजासि ॥ ॐ यारुलित्ती ॥
ॐ श्रुतयग ॥ ॐ मनाहृति ॥ प्रगिष्ठा ॥
जाय ॥ काश ॥ कलिमधमसंरुर्ग वि
भावाजकसंरुर्व ॥ नकयद्वाकनर्द
र्द ॥ नोमिश्रुदित्यमलुर्ल ॥
जगत्वादि ॥

गतातागकुरुयुजन ॥
श्रुत्युर्क ॥ ॐ गत्यायामि ॥
श्रुतर्न ॥ दवस्यत्वा ॥

ध्यानं ॥ शुद्धसूटिकसंकाशं वनदंय
नवाविर्ण ॥ रुक्षसकविरुवाङ्ग ॥ ध्या
यर्न ॥ शुद्धगविर्ण ॥ ॐ श्रुतनादिमूर्त
य २ ॥ ॐ नभासुसर्ग ॥
श्रुवाहनादि ॥ ॐ धूवसि ॥ ॐ गजासि ॥
यारुलित्ती ॥ ॐ श्रुतयग ॥
ॐ मनाहृति ॥ प्रगिष्ठा ॥ जाय ॥ काश ॥
शुद्धममिदुजाय नानानतविरु
विष्ण ॥ विषकीलावकीशुय ॥ गम
तागयवर्नम ४ ॥ श्रुगत्यादि ॥

गतायक्रिणीयकयुजन ॥
श्रुत्युर्क ॥ ॐ गत्यायामि ॥
श्रुतर्न ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥
ध्यानं ॥ योगवर्णमहाकार्य वीजयु
नकवाविर्ण ॥ रुमातकनसोराग्य
धनवाच्ययति ॥ शुद्ध ॥ ध्यानवर्णम
हादीर्क ॥ सर्वलक्षण ॥ अशिर ॥ नत
युद्धैककलर्न ॥ यक्रिणीवतमाम्यर्ण ॥

ॐ कायक्रियाय कायतमम् ॥
ॐ श्रुम श्रुकावध ॥ ॐ प्रभञ्जकृत्वा ॥
श्रुवाहनादि ॥ ॐ धूवसि ॥ ॐ गजासि ॥
॥ ॐ यारुलनी ॥ ॐ श्रुतयत ॥
ॐ मताहति ॥ यतिष्ठा ॥ जाय ॥ साण ॥
हमवत्तावलीयूक मूकठाहलरु
विर्ण ॥ गदायाविमहाकार्य पुनमा
मिधनाविर्ण ॥ दिववसुयनीधना
सर्वलोकान् ॥ शरिणा ॥ तमामियकि
दीधवी सर्वसंयक्तिदायिनी ॥
श्रुगन्धादि ॥

ततः श्रीलक्ष्मीकलसयूजनम् ॥
श्रुश्रुकर्ण ॥ तत्वायामि ॥
श्रुसर्न ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥
धनम् ॥ यथायविहिगाधवीनीलात्य
लदलदश ॥ सिन्दूरययदकाव का
क्तियवितसं हिता ॥ यथासन्नहिगा
धवी ॥ मुद्ररुटिकसन्तिश ॥ श्रुद्ध



॥ अथानेसु ॥ अथानेसु ॥ अथानेसु ॥ अथानेसु ॥ अथानेसु ॥

र्यदहसाव धनधन्यवनयदा ॥
ॐ जीशीलक्ष्मी मूर्किय २ ॥
ॐ श्रीश्री ॥ ॐ श्रीमाल ॥
श्रीवाहनादि ॥ ॐ धूवसि ॥ ॐ गजासि ॥
ॐ यारुलिनी ॥ ॐ अन्नयग ॥
ॐ मनाहति ॥ यतिश्री ॥ जाय ॥ साय ॥
ब्रह्ममामिमहादवी ॥ श्रीमन्मङ्गल
दायिनी ॥ यद्मन्मङ्गलकार्यम् नि
त्यं यद्मन्मङ्गलकार्यम् ॥ ॐ लाकवेदि
नादवी ॥ सर्ववत्तयदायिका ॥ यन
मामिमहादवी ॥ लक्ष्मीनामोदनि
विया ॥ अथानेसु ॥

गाम्मन्मङ्गलसयुजर्न ॥ न्यास ॥
मयलीमन्मङ्गल ॥ निनीकर्ण ॥
अथानेसु ॥ ॐ गत्वायामि ॥
आसर्न ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥
ॐ जीद्वानाय २ ॥ ॐ द्वावाधवी ॥
आसर्न ॥ अथानेसु मूदारासर्न चत्तम

बुलमधर्गः। शुक्लविमलसकाशं
 मृत्पूजयविश्रवय॥
 ॐ मृत्पूजेऽयाय श्रुमतीश्वराय२॥
 ॐ नमः॥ ॐ सकलमय॥
 ॐ पूतल्लादिर्या॥ ॐ मन्दवा॥
 ॐ श्रीशुभं॥
 ॐ श्रुमन्तयाद्यादि॥
 श्रावदनादि॥ ॐ धूवति॥
 ॐ गजाति॥ ॐ यारुलिनी॥
 ॐ श्रुतयग॥ ॐ मनाहति॥ प्रति
 षा॥ जाय॥ सा॥
 सव्यायसव्यायसदित्त्वविम्वं क
 रुकेरुनिसूयमश्चकभुगनाविः
 ॥ श्रुक्कषियाचिवनदारुयवाहि
 वरवा मृत्पूजयाजयति साकृति
 मकनरु॥ श्रुगत्वादि॥
 यथानुकम॥ थल्लिपूजर्त॥
 न्यासादि॥ श्रातपूजा॥ तत्वाया

मात्यादि॥ दानार्चनं॥ थल्लितिस॥
 दकारिपूजर्तं नदनर्तं यथधव
 श्रुतकम॥ धीर्त॥ निवद्यादम॥
 १२॥ पूजन॥ धवत॥ १२सह॥ दृषा
 सताय२॥ ॐ श्राभुमिभना॥

समस्तकलसपूजर्त॥ ॐ श्राजिषक
 ॥ ॐ दिनधमरु॥ ॐ वीहयधम॥
 त्वं ॐ उविष्टदा॥ ॐ यारुलिनी॥
 ॐ दृहत्या॥ ॐ कर्तुं कर्तुं॥
 ॐ श्रुमाकमित्य॥
 श्रावदनादि॥ धूय॥ दीय॥ नेवद्या॥
 श्रुगत्वादि॥

गतागमयलिङ्ग॥ ॐ नमः॥ सूरवा
 य॥ सूर्यनाग॥ ॐ जायद्यासताय२
 ॥ ॐ ईस॥ १२नागय२॥
 धीन॥ ॐ दृहटिकसंकाशं वन
 दारुयवात्रिणी॥ रुक्षसंकविरुषा
 ई॥ नागनाजतमा मयई॥

वर्त्तसर्वविद्यानि वनमाहावेद
हिमः ॥ गगनसिंहासन
मयविष्णु ॥ य०७० ॥ तेलोक्त्या
तिष्ठति स्तावनाक्षिचनाक्षिच
वक्त्रविष्णुमिवभक्त नकां कूर्व
कुमसदा ॥ यवदानवेगत्थवी
यकनाकसयत्तग ॥ ४१ ॥ सर्वसमा
धननकां कूर्वकुसमूदाविता ॥ ४२ ॥

गगनकुम्भकुम्भकर्मकुर्यात् ॥ ७० ॥ श्रुष्टा
दि ॥ ७१ ॥ मानयूष्यराजन कान
य ॥ ७२ ॥ सिद्धिबलुंरुत्यादि ॥ य०
सकुजनस्वानविश ॥ ७३ ॥
वक्त्रादिनथवरकर्मयादून
भय ॥ सूर्यार्धदत्ता ॥
गुनस्मनर्ण ॥ मूलनत्यास ॥ ४१ ॥
श्रुष्ट्यागुयूजा ॥ श्रुष्टयूजा ॥
वन्दनादि ॥ स्नान ॥ श्रुष्ट्यागुल
यनहाय ॥ श्रुष्टमकुत ॥

वद ॥ ७४ ॥ यविष्णु ॥ गगनीमकुल
निवीकर्ण ॥ श्रुष्टमकुलयाकर्ण ॥
कवचनावगुष्टन ॥ श्रुष्टमकुल ॥
श्रुष्टकर्ण ॥ वद ॥ ७५ ॥ तत्वायामि ॥
श्रुष्टमकुलगाउन ॥
कवचनायकर्ण ॥ त्वमपद्रुष्टि ॥
४॥ श्रुष्टनखनन ॥
उद्धनर्ण ॥ ७६ ॥ यदवा ॥ ७७ ॥
ददयमकुल ॥ यूनर्ण ॥ समीकन
र्ण ॥ वद ॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥ कवचनसच ॥
वद ॥ ८० ॥ तत्वायामि ॥ त ॥ श्रुष्टमकु
लकूर्तर्ण ॥ चाणय ॥ वद ॥ ८१ ॥ त्व
दत्ता ॥ ८२ ॥ कवचनसमाऊन ॥
७० ॥ मानसाक ॥ ८३ ॥ समलवन ॥ ८४ ॥
७१ ॥ यद्वानिल ॥ ८५ ॥ दिवस्थेगर्ण ॥
लूयर्ण ॥ डाहायर्ण ॥ ८६ ॥ सदसंस्थ
ति ॥ अन्तर्विकयर्ण ॥
७२ ॥ ददयभूम ॥ ८७ ॥ यद्विवादि वि

कृपणं ॥ ॐ ज्ञां ह्यं भक्तानीक
 लाये २॥ मध्य ॥
 ॐ ज्ञां ह्यं भक्तिकलाये २॥ पूर्व ॥
 ॐ ज्ञां ह्यं विद्याकलाये २॥ दक्षिण ॥
 ॐ ज्ञां विद्यायतिष्ठकलाये २॥ उत्तर ॥
 ॐ ज्ञां निवृत्तिकलाये २॥ पश्चिम ॥
 कृष्णं कृष्णं कृष्णं कृष्णं ॥ कला
 यनिकल्पनं ॥ १३॥ कवचमकुल
 विमलवर्णनं ॥ वद ॥ ॐ त्वं जविष्ठ
 दा ॥ १४॥ ॐ ज्ञां कलामयकृष्णय
 ॥ यूननं ॥ १५॥ कृष्णमकुल कृष्ण
 नवखाकवर्णं ॥ ॥ ॐ दवस्यत्वा
 ॥ १६॥ कृष्णवर्णकवर्णं ॥ ॥
 ॥ १७॥ हृदयमकुलवर्णवर्णनं ॥
 ॥ १८॥ ॥ १९॥ कृष्णवर्णकवर्णं ॥
 कृष्णवर्णकवर्णं ॥ ॥
 ॐ ज्ञां वागीश्वराय वागीश्वर्यविरु
 नासनाय २॥ कृष्णमध्यविरुनास
 नकृष्णय २॥ ॐ दिनवर्णवर्णनं ॥

ॐ कौलं भक्ति कलाय २॥ पूर्वा ॥

ॐ ज्ञानं विद्याकलत्रं २॥ दक्षिणे॥

ॐ जौ विद्याय निष्ठा कलाय २॥ उत्तम ॥

ॐ ज्ञानिवृत्तिकलाय २॥ यश्चिम् ॥

कृष्णार्ककृष्णद्वयस्त्रय ७॥ कला

यनिकल्यर्त्त ॥ १३ ॥ कवचमकुक्ष

विश्वलवष्टनं॥ वद॥ ॐ त्वं ज विष्ट

दा॥ १४॥ ॐ क्लृप्ता कला मय कृष्णाय
॥ नमः ॥ १५ ॥ नमः ॥ १६ ॥

॥ यूजत ॥ १७ ॥ मूलमन्त्र कृष्ण
नमः साक ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

न नखाकवर्ण ॥ ॥ दुदवस्यत्वा
॥ २०६ ॥ सकलवर्णकवर्ण ॥ ॥ ॥

॥ १७॥ हृदयसक्तवचनस्य ध्यानं ॥

॥ + ॥ १८ ॥ ॐ ति नृणां दशसंस्कार

शुभिकुलं मेधय ७॥

ॐ नमो वागीश्वराय वागीश्वर्यविरु

नासनाय १॥ कृष्णमध्यविष्णुनास

त. क्रम य. २॥ तुंदिन स्य वल्लुं हनवा

ह्यादि॥ ॐ ज्ञा वागीश्वर्ये नमः॥

ॐ कौवागीश्वनाय ॥ पूजन ॥

श्रीवाहनादि॥ (धनू मूला॥
नव नव नव॥ ॐ नमो भगवते॥

काष्ठमादाय ॥ ॐ त्विदं ॥
 क्षमर्षि कायाव दहमानेन

हमोभुकायावज्जमाननहायवा॥
बद॥ॐ००स्थानात्वा॥

ॐ ज्ञानलोकाय नमः

ॐ ज्ञानवलाकायशः॥

ॐ ह्रीं स्वस्तिकाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ कृत्यालोकाय ॥
ॐ कृत्यालोकाय ॥

ॐ क्राञ्जलं कायरा
ॐ क्राञ्जलं कायरा

ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ सर्वगत्वाय ॥

ॐ कौं सर्वगत्वा विद्यतयः ॥

श्रुधानमस्तु एहामसि योजनं ॥

ॐ जगत्सु ॥ ह्रीं नमो भूतनाथ ॥ ॥
॥ ॥ सर्वभूतहिते रते ॥

ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नीतिविवेकयत्नः॥ कृष्णस्य

गङ्गातटाविवर्णवृत्तिः ॥

न विचिन्त्य ॥ सूर्य कान्ति मादाय का
 रुयत्तु मध्यायिवा ॥ कृष्ण मूला लनं च
 व ॥ रि ४ ॥ दानि कर्षणं ॥ ॥
 शिख थलं समतलं च ॥
 सिमिर्ग च ० यार्तं दय क विधि ॥
 श्रुत प्रश्न ॥ लू वति ॥ यंच न
 त्तरु या द न गोय काय उचस्य
 सिमिर्ग सगरु याय ॥ ॥
 धन वल ॥ शिन उ का दू खान ॥
 यज मानस्य जा द ता या व आ वाय
 स्य मयाय ॥ श्रुधान मूल मकु ६ ॥
 नां नां वृ व क्रि च ना य न म ४ ॥
 ॐ श्रुति कान्ति ॥ ॐ श्रुति मूर्द्धा ॥
 ॐ न का दनं ॥ सर्व धन तिर्वृ क्तनं ॥
 ॐ श्रुध वाच द ॥ वलि य दानं ॥
 ॐ कथा द मयि ॥ कथा न सं व निर
 य ॥ श्रुति ॥ कथा न य स्वादा ॥
 तिला रुति ॥ ३ ॥ दृता रुति ॥ १ ॥
 श्रु मकु ६ ॥ कथा दानि य कुरु
 द न मान म ४ ॥ कथा दानि मूल द

न व वा ह य ॥ डय त्यर्जनं ॥
 तता सु दानि केत्वा ॥ श्रुति त्यास ॥
 रुत जा ० न मे ड व दानि उ की कत्वा
 त न र य ॥ ॐ वृ क्त ल न ल र य ॥
 ॐ विष्णु व न ल र य ॥ ॐ मे द ध व न
 ल र य ॥ शिन उ ॥ न क य य म य
 गीत्य सत् ॥ श्रुत स व क ॥
 क व च ना व गु ष्ठ न ॥ ॐ न मूर्द्धा द न
 य ॥ पूज नं ॥ श्रुति मकु ॥
 म य गी ॥ मूल मकु ॥
 ॐ वृ क्त य क्त न ॥ ॐ विष्णु ल ला ॥
 ॐ न म ४ सं र वा य ॥
 ॐ श्रुति मयि ॥ ॐ श्रुति मयि न य ता ॥
 श्रुति गृही क ॥ श्रुति कुरु शि य दानि
 ६ ॥ ३ ॥ श्रुतानं न व व द्या ता ॥
 यज मानस्य लं ख धन थस्य कालू
 व न ॥ ॥ यथा कार्य मूदाय ॥
 ॐ मयि गृहा ॥ श्रुति कुरु य न ॥
 य ० म थ ल या व ॥ श्रुतानस्य सम
 न मी रा व स वी ज य न न रु व र न

य ॥ ॐ स्वस्ति वाचन य ॥ ० ॥
 हस्तिमकुल वद ॥ ॐ मस्मीति ॥
 ॐ त्वनन पुष्पाद्य ॥
 ॐ वागीधर्ये स्वाहा ॥ ॐ दृष्टादिवि ॥
 श्रुत्य कर्ण ॥ श्रुमस्तु ॥
 हं रुद्र ॥ धमस्तु धमकायक ॥
 ॐ श्रुमिष्टाति ॥ ॐ जंगर्हमय ॥
 पूजन ॥ श्रुमस्तु ॥ ॐ त्वत्तु वि
 ददा ॥ कृमककल वागीधरीनका
 य ॥ जयनय धन ॥
 ॐ जालेंतु धाजागययश्चिमवका
 यनम ॥ पूजन ॥
 ॐ जंगर्धानेय जंगर्ह दयाय गर्ग
 धनाय स्वाहा ॥ तिलाद्रुति यत्तु क
 दद्यात् ॥ दृताद्रुति ॥ ॐ गर्ह श्रु
 स्वायधी ॥ १ ॥ गर्ग धन ॥
 ॐ जंगर्ह वामदवाय डरुनवका
 यनम ॥ पूजन ॥

ॐ जंगर्ह धानकी वक्रमिनसूयुष्टिक
 वदाय स्वाहा ॥ तिलाद्रुति यत्तु क
 दद्यात् ॥ दृताद्रुति ॥ वद ॥
 ॐ स्वस्तिन ॥ ॐ ॥ यत्तु वद ॥ २ ॥

ॐ जंगर्ह धानावदक्रिधवकाय ॥
 पूजन ॥ ॐ जंगर्ह धानधाननन हं वा
 लितामिखाय भीमनाय स्वाहा ॥
 तिलाद्रुति यत्तु क दद्यात् ॥ दृताद्रु
 ति ॥ ॐ माहिरुर्मा ॥ अनोननयध
 कल्पना ॥ भीमस्तु ॥ ॥

ॐ जंगर्ह यत्तु नूपाय पूर्ववकाय ॥
 पूजन ॥ ॐ जंगर्ह सर्वत ॥ सर्वसर्व हं
 विगलकवदाय जातकर्मिय स्वा
 हा ॥ तिलाद्रुति ॥ यत्तु क ॥ दृताद्रु
 ति ॥ ॐ याधय स्वाहा ॥ ॐ जंगर्ह धाना
 य स्वाहा ॥ ॐ दृतादिजातकर्म ॥ जा
 तामिधन ॥ ॐ दृतालामालाकूल
 धत्वा गिनर्ह वनमकिदक्रिध

१ वामशुक्रमहोत्तरेव सुकडिका
महागज ॥ मयावृत्तं नमान्यद ॥
४॥ अमुमकुलयाकृष्णं सद्यःसूत
कताभर्त ॥ ॐ श्रुयाश्रुमात् ७ ॥

ॐ ज्ञावागशुनीतमः ॥ दमारुनक्ष
दवीविविक्त ॥ ४॥ दसमिधेक्षाम
॥ ॐ कानक्षोदा ॥ चक हल्ली इक्ष
यात् ॥ ॐ च बाहयव ४॥
कलुष्कायनिदिद्यमूर्तियनमाका
लावलीरासभा नकोनंगशुसार
नयनदितं सयथेसर्वांगक ४॥ आ
कानक्षमयागताविरंगवत्सुक्ति
तां समूर्ख ॥ अमुवदविदाचैर्म
गलकनीकृयाकिर्व ॥ अस्तर्त ॥ ॥
अग्निं समूर्खीकनक्ष ॥ अमुमकुल
कृमयंरितं ॥ ४॥ अमुमकुल
समिधिवचैर्क ७ कृत्वा ॥ ॥
ततादवीयूजर्त ॥ कृमयंरितं
य ॥

ॐ ज्ञावक्रासनाय २॥ ॐ ज्ञावक्रमूर्त
य २॥ ॐ ज्ञावक्राय २॥
ॐ श्रीमानवृत्ता ॥ ॐ ज्ञासपेदाय
श्रीगणेशायसामदवताय नमः
कृत्यसनमः ॥ पूर्ववदी ॥ १ ॥ ॥
कृमयंरितं समिध ॥
ॐ ज्ञाभक्तनरायणाय नमः ॥
ॐ ज्ञाभक्तनमूर्तियतमः ॥
ॐ ज्ञाभक्तनायतमः ॥ ॐ श्रुवत्तर्क
ॐ ज्ञायश्रुवदायरा नदाजस्य ॥
गयवक्रदवताय ॥ ६६ कृत्यसन २॥
दक्षिणवदि ॥ २॥ कृमयंरितं समिध
ग ॥ ॐ ज्ञाविष्णुसनाय २॥
ॐ ज्ञाविष्णुमूर्तियतमः ॥
ॐ ज्ञाविष्णुवतमः ॥ ॐ श्रुत्तश्रुया ॥
ॐ ज्ञासामदवताय काश्रय ॥ गाय
वृद्धदवताय जगती कृत्यसन २॥
यक्षिमवदी ॥ ३॥ कृमयंरितं समि
ध ॥ ॐ ज्ञाश्रुत्तासनाय २॥
ॐ ज्ञाश्रुत्तमूर्तिय २॥

ॐ ज्ञां नूनकाय २॥ ॐ सन्नादवी ॥
 ॐ ज्ञां नूथर्ववदाय कस्यय (म) ज्ञा
 य नूतुदवताय नून नूतुतुस २॥
 उरुनवदी ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ज्ञां लू
 नूतुदायनम ४॥ ॐ ज्ञां लू नूनय २॥ २
 ॐ ज्ञां नूनमयाय २॥
 ॐ ज्ञां वू वनूतय २॥
 ॐ ज्ञां यू वायव २ ॥ ६॥
 ॐ ज्ञां सूं कवनय २॥
 ॐ ज्ञां कूं नूभनाय २॥ ७॥
 ॐ ज्ञां नूं नूनय २॥
 ॐ ज्ञां उद्वयनम ४॥
 दमला कयालयूजा ॥ ॥
 ॐ ज्ञां नूधान ज्ञां ददयाय स्वाहा ॥
 नूदति ३॥ शाला कयालयूंम
 वानयि कार्यं नूत्या नूतवय ७॥
 धादमला कयालयूजा ॥ ॥
 नानावक्रावलीतयूजन ॥

ॐ ज्ञां वक्रा २॥
 ॐ ज्ञां वक्रा २॥ १॥ सानाया २॥
 ॐ ज्ञां वक्रा मूतिय २॥
 ॐ ज्ञां वक्रा य २॥ ॐ दिनक्षगर्ह ॥
 नूत्यावक्रासर्त ॥
 ॐ नूदीविभूषलीतासर्त ॥
 वलीति या नूतुमलु लया कर्ह ॥
 ॐ यल्ल ० नकलादि ॥ यतर्ह ॥
 ॐ नूयादिष्टा ॥ उदकयूनर्ह ॥
 वक्रायूजन ॥ धान ॥ यद्यासनहि
 त्तिवर्ह ससु वतु नानर्त ॥ यीनर्त
 त्तिवर्ह नूतु कन्दी कन्दी कयूसर्त
 ॥ कलुस्य दकि लेवक्रा मुक्तम
 मयमासन ॥ त्वर्ध्वत्वावक्रा लू
 जयत्यनम धर्त ॥ वक्राधान ॥
 ॐ ज्ञां वक्रा २॥ नम ४॥
 ॐ ज्ञां वक्रा यतय २॥
 ॐ ज्ञां सर्वथा दवया २॥
 ॐ वक्रयज्ञर्त ॥ ० ॥ ॥

यहीतयूजा॥ यद्यस्तु तार्क मा नूत
तार्कस्तु मर्कटातिरं॥ मंखचक्र
दायघं विष्णु कुतुवाकन॥
विष्णु व२॥

ॐ जौ प्रलीताय२॥

ॐ जौ मृशानम४॥

ॐ जौ सर्वेश्वरवशा२॥

ॐ वनूमेयनेम४॥ ॐ वृद्ध विष्णु॥

ॐ श्रवर्कवाकन॥

दक्षिणवक्त्राकन॥

ॐ विष्णु ललाट॥ उक्तनयलीतकन॥

पूर्ववत्पूजनं॥ वक्त्रायलीत॥

श्रावहतादि॥ संयूक्त॥ ० ॥

तताश्च कुश्चवासाधनं॥ यत्केमय

तहाय॥ श्रवामादाय॥

श्रुमस्तुलयाकर्ण॥ यतार्थं॥

ॐ यत्पू॥ कृमकुट्टिताकनपूर

चादवकाय॥ थकृमश्चवाधियक॥

यालसयालनं॥ मधसमधनं॥

वासवानं॥ ॐ जौ श्रात्मतत्वाय२॥

कृमयालश्चवातसधियक॥

ॐ जौ विद्यातत्वाय२॥ कृममधन

श्चवामधसधियक॥

ॐ जौ शिवतत्वायनम४॥ कृमवा

नश्चवाचासधियक॥ श्रुमस्तुल

ॐ श्राधादिष्टा॥

श्राकामवायूपूनर्ण॥ चालादनं॥

ॐ दवीनाथाश्रुय॥

ॐ यस्यां वृद्धा॥ ॐ सविष्टुल्ल्या॥

लिप्ता२॥ कृष्टुयमर्ण॥

ॐ कृष्णस्यावर्ण॥ उदकयलीति

लिप्ता॥ श्रुक्श्चवायूजनं॥

ॐ जौ जौ शिवाय२॥ श्रुवा॥

ॐ जौ जौ श्रुवीमर्कनम४॥ श्रुवीमर्कि

ॐ नम४ संयवाय॥ ॐ वावकान॥

कवचमस्तुल्ल्याश्रुतिमस्तसधियन॥

ॐ जौ जौ श्रुक्श्चवायू२॥ यूजनं॥

कृष्णमादिशि॥ स्वातमात॥ कृष्ण
सुत॥ धवजवलासुत॥
ॐ निष्ठासाधन॥

गताद्युतसूदि॥ विश्वयवमादाय॥
श्रुतमकुलं याकृष्ण॥ यतर्था॥
ॐ ययुष०॥ नकु॥ ददयमकुल
द्युता॥ ॐ ॐ वलज्जत्वा॥ वीतक
॥ ॐ ज्ञा श्रुतय स्वाहा॥ यकुलि
सुवकुमयी॥ ॐ श्रुतय स्वाहा॥
कृष्णयादहलकी वाय॥
ॐ कृष्णाय॥ कृष्णाय॥
कृष्णगुणिकादद्युतविलुं दान॥
ॐ विष्णुव स्वाहा॥ वीकुलीसविष्णु
मयी॥ कृष्णगुणिकादमस
हाय॥ ॐ नृजय॥ कृष्णमध्वनू
दमी॥ कृष्णगुणिकादमस
हाय॥ ॐ श्रुतय स्वाहा॥ दक्षिणाय॥

मुक्तयक॥ ॐ सामाय स्वाहा॥
वासन॥ कृष्णयक॥
ॐ ज्ञा श्रुतिधामा स्वाहा॥
दक्षिणाय॥ दक्षिणाय॥
ॐ ज्ञा श्रुतिहृदि दक्षिणाय स्वाहा॥ त्याग॥
धमकुलं दक्षिणाय विद्युत्स्व॥ ३॥
षष्ठं गतं सर्वं॥
श्रुवाद्य॥ ॐ नृमूढा॥
ॐ ईश॥ श्रुवायिदियजमानस्य
धनसं कसाय॥ ॐ तज्जाति॥
श्रुमादाय॥
श्रुवायदनेदृष्टा श्रुवायद
नेयन॥ श्रुवायदनेयन॥ सर्व
माययति श्रुति॥ ॐ निष्ठासाधन॥
उययमत कृष्णमादाय॥
ॐ नृमूढा॥ ॐ नृमूढा ०॥ ०॥

गताद्युतमादाय॥ वक्रादिद्यानया
य॥ ॐ ज्ञा लं सधाजाताय स्वाहा॥

यष्टिम॥ ॐ जौं वै वामदवाय स्वाहा
 ॥ उक्त॥ ॐ जौं वै तत्पूषाय स्वा
 हा॥ पूर्व॥ ॐ जौं वै श्रुधानाय स्वा
 हा॥ दक्षिण॥ ॐ जौं कौं श्रुमनाय
 स्वाहा॥ म॥ वक्रकल्पेना हति
 ॥ ॐ जौं कौं सधाजात वा
 मदवाय स्वाहा॥ यं विनतयथं
 म॥
 ॐ जौं कौं वामदवा श्रुधानाय
 स्वाहा॥ यं विनतयथं दत्तमक्ष
 सृष्टाक्षनहायक॥ श्रुवान॥
 ॐ जौं जौं कौं कौं जौं जौं ४ सधा
 जात वामदवा श्रुधाना तत्पूष
 श्रुमनाय ४ स्वाहा॥ वक्रकान
 यं थदमक्ष सृष्टाक्षनहायक॥
 ॐ जौं कौं नै श्रुधानाय दक्षिणव
 कायतम॥ संपूष॥ स्वाहानै॥
 ॥ दक्षिणवक्रसलीतयाद

दक्षिणवक्रकाय॥

७

गताजिज्ञासकल्पनं॥
 ॐ जौं कौं दिनव्याय स्वाहा॥ नैसत्य॥
 ॐ जौं लूकनिकाय स्वाहा॥ यष्टिम॥
 ॐ जौं वृं नकाय स्वाहा॥ वायव्या॥
 ॐ जौं कौं कृष्णाय स्वाहा॥ श्रुमि॥
 ॐ जौं संपूषाय स्वाहा॥ पूर्व॥
 ॐ जौं वृं श्रुतिनकार्य स्वाहा॥ श्रुमना
 ॐ जौं कौं वक्रपूषाय स्वाहा॥ म॥
 ॐ जौं लू दिनव्याय कनिकाय स्वाहा॥
 नैसत्य यष्टिम॥
 ॐ जौं लू वृं कनिकाय नकाय स्वाहा॥
 यगतवक्रलि॥
 ॐ जौं वृं नकाय कृष्णाय स्वाहा॥
 वक्रलितयकलि॥

ॐ ज्ञां भूषूँ कृष्णाय सुप्रणय स्वाहा॥
य कृत्तिनर्व कृत्ति॥
ॐ ज्ञां भूषूँ सुप्रणय श्रुतिनकाय स्वा
हा॥ वक्तानर्व कृत्तिता॥

ॐ ज्ञां भूषूँ य राव नूयाय स्वाहा॥
ब्रह्मानमक्षता॥ मक्षता घृताक्षन॥
ॐ भूषूँ वरु नूयाय स्वाहा॥
मक्षस घृताक्षनादायक॥ सकृन्नि
खानस कल्पयादाव वरु नूया ॥
कीर्तिस्वाकाय॥ वद॥ ॐ सकृन्नि
मि॥ यूर्ध्व॥ डि कासंक्षर्त॥ ० ॥

ॐ ज्ञां मिवाय नामाय नाम कवक्ष
य स्वाहा॥ वद॥ ॐ काय स्वाहा॥ नाम
कवक्ष॥

ॐ ज्ञां श्रुधानां सर्वत्सुन ददया
यनम॥ वद॥ ॐ यारुत्तिनी॥

रुत्तयासुत॥

ॐ ज्ञां श्रुधानां सर्वत्सुन ददयायन
म॥ वद॥ ॐ नूतयत॥ नूतयासुत॥

श्रुमकुल॥ वद॥ ॐ मूर्धन॥ दिवा॥
चूजाकनर्ष॥

श्रुमकुल॥ वद॥ ॐ रुडक (लु) रि॥
कलुर्वध॥

कववमकुल॥ वद॥ ॐ यथेमावाच॥
मखलावतवक्ष मयणीपदान॥ ॥

श्रुमकुल॥ वद॥ ॐ श्रुतुषू॥
वतमाकु॥

ददयमकुल॥ वद॥ ॐ शुभक॥
विवाहा॥

श्रुमकुल॥ वद॥ ॐ काष्ठा काष्ठा॥

उमनयागा॥

ॐ जं वागीश्वर्ये नमः॥

ॐ जं वागीश्वराय नमः॥

विगाधयाः पूजनं॥

स्वाहा तं इति दशकं १०॥ वियथा॥

पूज्यं॥ विगाधिसंस्तुतं॥ वद॥

ॐ श्रयमग्निः सदा॥ संयुक्तं श्रमिन्नात्

॥ ॥ अथ दक्षिणमग्निमान् य

त्था कलकलो यत्तं॥ वदुर्जमेदा

नाम्न मरुसूक्तं कमलुर्ल॥ अथ

किधनं वदति॥ यत्तमलुलमधर्गं॥

तकठमूनदतिर्ल॥ सर्वलकलसं

यत्तं॥ सर्वदवकलामूर्ति स्वाहा शक्तं

समन्तिर्ल॥ श्रमिमध्वनविल्लतं न

विमध्वतुवत्युमा॥ एतच्छिवाकने

दिद्यं सुष्ठिनायनसत्युतः॥ कलु

मध्वतिमति संयुक्तं श्रमिमलुल

॥ अथ नीलात्यलाशर्त्तमध्व

नत्वमीश्वर्यं॥

तावदाहतिः॥ वगुवदाय स्वाहा॥

यथिवे स्वाहा॥ ॐ दयुथिवे स्वाहा॥

श्रमय स्वाहा॥ ॐ दमग्नय स्वाहा॥

वसुधे स्वाहा॥ ॐ दवसुधे स्वाहा॥ यजा

पतय स्वाहा॥ ॐ दयजापतय॥

दवत्यः स्वाहा॥ ॐ ददवत्यः॥

मवित्यः स्वाहा॥ ॐ दमवित्यः॥

कृत्यायः स्वाहा॥ ॐ दकृत्यायः॥

अदाये स्वाहा॥ ॐ दअदाये॥

मध्वये स्वाहा॥ ॐ दमध्वये॥

सदसस्याय स्वाहा॥ ॐ दसदसस्य

तय॥

श्रुतमग्न स्वाहा॥ ॐ दश्रुतमग्न॥

यशुर्वदाय स्वाहा॥ ॐ दयशुर्वदा॥

श्रुतनीकाय स्वाहा॥ ॐ दश्रुतनीका

य॥

वायव स्वाहा॥ ॐ दवायव॥

वक्रः स्वस्ति ॥ ॥

सामवदाय स्वाहा ॥ ॐ सामवदाय
दिव स्वाहा ॥ ॐ दिव ॥
सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय ॥
दिश्या ॥ स्वाहा ॥ ॐ दिश्या ॥
चतुस्रस्य स्वाहा ॥ ॐ चतुस्रस्य ॥
वक्रः स्वस्ति ॥ ॥

गतः क्रियते ॥ ॐ
ॐ स्वस्ति ॥ ॐ ॥
ॐ सुव ॥ स्वाहा ॥ ॐ सुव ॥
ॐ स्व ॥ स्वाहा ॥ ॐ स्व ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥
ॐ त्वन्ता ॥ ॐ दमसी वनूषा ॥

वक्रः स्वस्ति ॥ ॥
ॐ उदरु मन्त्र नृणां ॥
ॐ वनूषाय दीयते ॥

शुद्धादयः समिधसामः ॥
ॐ समिधसामि ॥ समिधसामाय ॥
ॐ तदवाप्ति ॥ समिधसामः ॥
ॐ कं कान्त ॥ ॐ कं कान्त निधाय ॥
ॐ कं कान्त निधाय ॥

कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥ ॐ
ॐ कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥
ॐ कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥
ॐ कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥
ॐ कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥
ॐ कृष्णयनिष्ठान् वनूषा ॥

गतः प्रसाधनं ॥ वनूषा तीस मा ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ अथ श्रीगणेशोपनिषद् ॥

[illegible]

गक्षयति इन्मदि स्वस्वमक्त क्ष सर्व
 दृता दृति दद्या ७ ॥ ॐ संकन नृमि ॥
 दृता दृति दृष्टु ॥ ० ॥

ब्रह्मणो यतिर्लोकहाताश्च यद्विभक्तमुत्तमम्

गंगादासयागमुद्रि॥ तामराजन
 न ब्रह्मचारिकत्वा॥
 श्रुतमन्त्रेण वाक्ये॥
 पुं प्रत्यक्षं॥ यत्पर्यं॥ वाक्ये॥
 सम्मार्जनं॥ यव श्रुत तिल त
 धुलादि मूलज्ञानं॥ वाक्य॥
 सर्वज्ञानसंयुक्तं कृष्णमकुटा
 निव॥ रुवर्गात्वेत्यसाधनं सर्वज्ञा
 नं रुल्लयदं॥ मूलमन्त्रेण वृक्षग
 यणीषडयनथवन१॥ यजमा
 नत्वं लानथियक वाक्य॥ यज्ञस्या
 त्वं यतिष्ठदि निर्विघ्नं यज्ञं कर्मसि
 ॥ रुद्रगणेशमन्त्रं पुं उक्तिं यनगुच
 निर्वर्गतिं॥ यजमानादि सर्वेषु ना
 जानाशुभमुशदय॥ सर्वभक्तिकर्त
 वेव सर्वदयं यज्ञं य॥ एवमस्तु
 गृहीत्वा च सर्वभक्तिं कर्मा मयदं॥
 सर्वद्विगताभय लक्ष्मी सर्वार्थ
 सिद्धिदा॥ वंद॥ पुं रुद्रं दं रुद्रवि॥

३ श्रीशूलतलिकवविमवशते

11

41

24

41

22

ॐ शुभकं यज्ञा ॥ यष्टिका कृति ॥ ॥

यव क्षत्वा लाजा समिध गुण दत्त
विल्वरुत ॥ नाविकं ल जयत्रय ॥
श्रीहोमकुक्ष दक्षदत्त वत्तलीरु
ल ॥ जाम्बीन किम्वरुत प्रियङ्गु
सुमरव भग्युष्य सततिल कृष्णति
ल नकतिल शिकु शिरुला नू
यकभन यक्षकभन चक्षुनगुति
गुणुन ॥ सर्वविधाता ॥ कन्ध मूल
रुत यक्षात्त रूक्ष इर्वीकृत या
यस ॥ इर्वी ॥ १०८ ॥ श्रीक्षालनं इ
दूयात्त ॥ बाक्षल मूत्र सकल्प ॥
दिगर्च ॥ ॐ जातवृक्ष ॥ ॐ द्यामा
ल रवी ॥ वलियूजा ॥ ॐ दृष्टं दृष्टया ॥
दृष्टदीपवृत्तिका ॥ १०८ ॥ ॐ द्योः ॥
कि ॥ दृष्टं नम्रक्षालन भर्तृ इदूया
त्त ॥ ॐ सर्ववार्चय ॥ ० ॥

स्वस्वाग्नेयस्वाहा उवत्याग वक्ता
उवयमनस्या ॥ ॥ ॐ त्वत्ता
श्रुमेव नूतन ॥ ॐ सत्त्वत्ता श्रुमेत
व नूतन ॥ ॐ श्रुयाग्नेयसत्तति ॥
ॐ जातभगम्वनूत ॥ ॐ उवृक्षमम्व
नूत ॥ ॥ ॥

यादिताह प्रस्वाहा ॥ यादितावद
प्रस्वाहा ॥ यक्ष यादिविशंवस
स्वाहा ॥ सर्व यादिविशंवस स्वाहा ॥
नूतातिनकं इक्षानि स्वाहा ॥ श्रुति
त्रिकं इक्षानि स्वाहा ॥ श्रुक्ताय
दनाक्षात्त तत्सर्वं क्रियते म ॥
सर्वतदग्नेयकल्पति विहितति
दृष्टासेन ॥ यथादि स्वाहा ॥ ॥
वैश्वतलाय विद्वद् श्रुतकारिणा
यधीमह तत्तावद्भिः ॥ यथादयात्
॥ स्वाहा ॥ ॐ दवृक्षस्येन सावय ॥

मनुष्यकृतस्येतसा॥ॐ विह कृतस्ये
नसा॥ॐ श्रातेकृतस्येतसा॥ सन
सप्ततसा॥ यद्याहमनाविद्विष्ट
कानयद्याविवातस्य सर्वस्येतसा
वयनमसिस्वाहा॥ॐ स्वक्तितस्तु॥
ॐ यय ४८ धिया॥ॐ विष्णुं ललाट॥
ॐ श्रीमिद्वेता॥ॐ यो ४५५॥

वाक्कलदक्षिणदानं॥
ईश्वारिंस्वाकायदभवलिक्काय॥
वलिहवर्ष॥दिनयूक्तु॥
मूलमस्तु॥वद॥ॐ दवागभु॥
ॐ श्रायाय॥ॐ श्रावकत॥
ॐ हिमस्यत्वा॥
श्रासंसा॥
श्राभीर्वादि॥ॐ श्रीमिर्षि॥
ॐ यस्य कूर्मा॥ॐ दीर्घयूत्वा॥

सम्वर्दिन॥
कृमताय॥ॐ ततूया॥
हस्तयतर्ष॥ॐ श्रायूष॥
रसना ललाट ग्रीवा दक्ष बाहू
मूर्ध्नि गिलर्क कृत्वा॥याटभुलित॥
वाचनलंखन श्रीरिषक यजमा
न॥ वत्ततादिसंभत॥
श्राभीर्वादि॥

यूनर्यक्तुस्वठता॥ॐ वाक्कल
दिमहुजस्वातविय॥
वीहि याल नाविकल कादूया
त२ किनलसं ॐ मलसं॥
जिलिथि२ वीहि याणसं॥
वकायलीत वद लाकयाल॥

वास्यं तका कलस ॥ यूजनं ॥
 धनं र्कं धव र मकु ल आ कृति नधि
 यक ॥ सठुजन न स्वस्ति वाचनादि
 यउ र्कं य (०७) ॥ आनधि ॥ सूर्य सा
 की ॥ दितया धन ॥ सठुजन न सा
 जनं कृत्वा ॥ गता नाशो वलि यदानं
 ॥ धयया नूक मल ॥ माल काध
 न विय ॥ डिम न कू र न सा वीन
 याग र्कं दू या य माल ॥ ॥

यकू र न सा वीन याग कू दू या य ॥
 याग मया कू वलि र्क काध न
 विय माल ॥ न र्क र्क ना ॥ वलिविय
 धन दाव न ठ माला स र्क या र्क र्क लि
 कान वद माल ॥ गुन र्क वामा वार्य
 र्क र्क जनं कान य ७ ॥ ॥

सक्ति का कू यात तातादि ति यधवा

धनं कृत्वा ॥ पूर्व दानादि १० ॥
 यागिनी ॥ कृत्वा ॥ श्री लक्ष्मी ॥ गल ॥ गु
 न ॥ मक्ति ॥ मिव मक्ति ॥ आदित्य ॥
 मृत्पुंज ॥ धन कलस यूजा ॥
 धनिल ॥ नाग र्क ॥ यकि ली यक ॥
 श्री लक्ष्मी ॥ वलि गल र्क कोमानी ॥
 स र्क म न ॥ र्क म य लिं ग ॥ सूर्य नाग ॥
 पूर्व व ७ यूज य ७ ॥ ० ॥

गल वाति दूर्गति दि सम र्क र्क आ कृति ॥
 वद धव र न धिय क ॥ च नू साधन यू
 र्क वत ॥ द म यात न ॥ कल स यति
 का ॥ र्क र्क र्क ति ॥ ॥ व नू आ कृति
 ॥ य ह या मूल मकु ॥ य ह या समिध
 धव र न व द धव र न ॥ डिम न कू
 र न सा डिम कू र न ल क र्क वा य ॥
 य ह या मकु ॥ र्क र्क या र्क न सा
 र्क र्क न डि दाल खा य ॥ धन न वा

थ यावत्प्राययाकावक्रिच्छि २ यामा
 लकाभनविय ॥ कृकर्ममाल ७
 कर्मभनयादता ॥ ० ॥
 वाक्मलयुजा ॥ दभवलिवियक ॥
 आरुति ॥ सात्तिक ॥ यष्टिक ॥ यव
 भान्यादि विप्रिथं यक्तू धूनक ॥
 यजमान श्रुषिक विय ॥ चतुता
 दि ॥ यक्तू स्वद गा ॥ ॥ नागिसक्तू
 शनं डाकर्म याय ॥ ॥
 क्रिथं धल भन याय माल ॥ ० ॥

विभयजिमक्तू काद्रया ॥ सखा
 द्रुति ॥ धूनकाव ॥ सामल लयाव ॥
 लकक्रि ॥ दूद ॥ धवि ॥ धन ॥ कलि
 भन ॥ थगत नवालाव र्कद्रया
 तत यल यय ॥ यातनं स्वर्ग कृद
 यक ॥ यक्ते नल लं यजमानया

श्रुतसावनत ॥ नगिरूति ॥ मंसक र्क
 गरुयाय ॥ शितग कर्क यताका ॥
 श्रुदवान ॥ नक यय ॥ मलुयनेस
 य दान सल सास्य दूत ॥ यजमान
 स्य आचार्यतां द्राय ॥ आचार्यस्य
 तिनी कलदि ॥ चतु ८ सक्तावया
 य ॥ मूलवत ॥ सल संयुक्त ॥ आरु
 मक्तू लजयनय मक्तू भन ॥ ॥ मक्तू ॥
 जं ७ जं ७ जं ७ जं ७ जं ७ ८ कं कं कं
 मक्तू सफका ७ धनी महामक्तू मक्तू
 मक्तू जेलाक मक्तू मक्तू मक्तू मक्तू
 न ७ म ८ ॥ यजमान जायय ॥
 आचार्यस्य मलु आवनय थमक्तू ल
 दूतनय ॥ आरुति ॥ १० ७ ॥ दृताद्रु
 ति ॥ श्रुवान ॥ वद ॥ ७ ॥ सल सुस्यय
 मासि सल सुयति मति सल सुसात्मा
 सि साद सासि सल सायत्वा ॥ ॥
 भक्तिको द्रुति ॥ ७ ॥ शुभकी ॥ यवभ

७ ७ ८ भक्ति ॥ यष्टिका द्रुति ॥ १

। न्यादि॥ वाक्पददक्षिण दानं॥ वाच
नारिषक॥ द्विथं याथं यक्तु सदा
॥ ॥ ॥

यत्रदिव॥ यातस्तानतिह्य दवाव
र्ष कृत्वा॥ पूर्वद्वानादि॥ दिक्कलसा
र्वर्ष॥ आकृति॥ गणयति॥ पूर्वकृति
॥ दन्त॥ कलस॥ वदथवरस॥
कलसप्रतिष्ठा॥ ॥ संख्याकृति॥
धमवलि॥ वियक॥ आकृति॥ यज
मानप्रतिष्ठा॥ ॐ मनाकृति॥
ॐ मनाकृतिर्इषता माद्यत्यतिमन
सावाब्द॥ सर्वमायतनमनसेवे
र्ष सर्वमायति वृत्त्यति यक्तु मिमं
कतात्वनिष्ठं यक्तु॥ समिमं दधति
नियद्विविर्षं तत्सं दधति वि॥ यद
वासब्दमादयं तामिति सर्ववेवि
॥ यदवा॥ सर्वलोवे तत्सं दध स
यदि कामयत दूयायतिष्ठति॥ व

वे यतिष्ठानामयक्तयत्तनयक्त
नयजक्त सर्वमवयति विर्षं रव
ति॥ ॥ ॥

भक्तिकाकृति॥ पूर्विकाकृति॥ य
व भक्त्यादि पूर्ववत्॥ यद्वादीयवृ
त्तिका॥ ॐ त्वन्ता नृपत्यादि॥
ॐ यो॥ भक्ति॥ वाक्पददक्षिणादा
नं॥ वलिदनर्ष॥ ॐ दधयक्त॥ य
भवति॥ दीखाविखाकाय॥
संयवयाभर्ष॥ ॐ सुमिगियात॥
यदीतारिषक॥ ॐ आया नृया॥ य
विष्णुभावनं॥ मूलमक्त॥
ॐ दवाग्नहमिति॥ पूर्वकृति॥ ॥

ॐ आयाय॥ ॐ हिमस्यत्वा॥ आर्षसा॥
आशीर्षद॥ य॥ ॐ उतिष्ठवृक्त
लस्याति॥ ॥ वीक्ष्यविमर्ष॥
ॐ कल्पाविमर्षेति॥ वक्ताभावनं॥
ॐ विष्णुनलाट॥ यदीतविमर्षं॥ २

ॐ श्रुथाश्रुधालिवाविष॥
 श्रुतिर्कर्म॥
 ॐ सन्धवदिवक्ता० मिति॥
 श्रुतवातत कृमउययमतकृम
 यनपूगनरुद्रयाग॥
 ॐ तानूया० मिति॥ हस्तेयतर्क्य०॥
 ॐ णायूर्य॥ हस्तेतिलकंकृत्वा॥
 ॐ यक्तयक्तगच्छति॥
 श्रुतवातादकनश्रुतिकृष्टयमर्क॥
 ॐ गच्छगच्छसूत्र० यच्छसंसाधयवम
 यव० यणवक्तादयादवा गच्छगच्छ
 कृतासन॥ श्रुतियार्थना॥
 ० यवहामं रुद्रया०॥ मक्त॥
 ॐ जौंजौंजौंजूंस्वाहा॥ धनधनकन
 लूय॥ धंवनधनहायकं तया का
 काय॥ काकायावधनदकालूय॥
 वक्तासिंहाय॥ मक्त॥ ॐ कृताक्तक
 र्मनस्वाहा॥ ॐ श्रुतवाय कर्मन

स्वाहा॥ ॥ ताम्रूलं दद्यात्॥ न्यास
लिकाय॥ ॐ उद्वयक्तम॥ श्रुतिकृष्ण
विसर्ज्यते॥ ० ॥ ॥

यदुर्ध्वान् यदुर्ध्वदी कलसः॥ वलि
 विसर्ज्जनं॥ वलिष्ठा यथैव रथाय
 स॥ कलुष्या कृत्स्न स्वस्तिकासन उ
 यविश्व यजमान यजमातीसह॥
 निर्वृक्तं निवभक्ति कलसारि
 शक॥ स्वकूटम्यादि॥ वस्तुचतन
 सिद्धुत् सग्नत पूष्य ताम्बूल य
 वैरुर्ग दद्यात्॥ श्रीगीर्वाण॥ अहु
 जनदक्षस्य यवैरवदत्त श्रीगीर्वा
 ण॥ थाबुलचूनतकूचक॥
 कलसगलक॥ तयकृष्णाय॥
 वाक्मलमहुजन यवैरस कलस
 विय॥ निवभक्तियजमानस्य॥
 श्रीकलसमजमातीस्य॥ कीमानी

दर्शन ॥ अत्रापि ॥ सूर्यसाक्षी ॥
मालतीमती यज्ञाक्षाय ॥ मङ्गलवा
द्य ॥ भस्वादि नूर्ययावकाव धव
लकायाव कुं वन ॥

वाक्कलस्य लेशमलुल ॥ ५ ॥
वामाचार्यस्य भगवति य ॥
दानयूजाया काव मूलगृहवंत ॥
सगुणवियमाल ॥ यज्ञमान ॥
नालीकोमानी यागभर्तृ ॥
गतशुद्धीदिवस ॥ अत्यकृष्ण
चतुर्थीयर्क कुर्यात् ॥ ७ ॥
०० गिलका कृतिविधिः समाक ॥

गगारुसुयवाहविधिः ॥ वलि
वियक ॥ आवादत ॥ नलिविका
याव जलसिसा ॥ शिर्ष
हाकृष्ण मालायुष्यत ॥ १ ॥

वाक्कलस्य लेशमयाय ॥ यज्ञमानस्य
युष्यराजत ॥ वाक्क ॥ अद्यादि ॥ यज्ञ
मानस्य अमकयर्क रसतदीप्रवा
ह यर्कतिमिलार्थ ॥ सूर्यार्थ ॥ ॥
अत्रापि यास लेशमयाय ॥ यथारय
धविधिमलुल कलसाधन ॥ द्यता
कृति ॥ कलसयतिष्ठा ॥ सखाकृतिः ॥

नलियूजा ॥ चतुयात्यास ॥ च अक्रा
यर्क्यादि ॥ आसन ॥ आधनगका
यत्यादि ॥ धन ॥ नूजाप्रियरुव
चर्क ककुलारुयातकी ॥ टंकपू
लधन नोड चतुर्वर्क चतुर्गुडी ॥
मूखाङ्गलमहाकाल नकादादभ
लावर्त ॥ जयमूकट खल्लु मल्लि
तरुलिककृष्ण ॥ व्यालयकायवीत
के साकसूयकमलुल ॥ स्वतय

भासतासीत, रुकिषकं लितासतं ॥
 उं चावीवृव (लुभनाय दूरुट् स्वाहा
 ॥ ३ ॥ ॐ ति उया उं लि ॥ वतु (कुल
 संपूष ॥ व (लुभनाय २ ॥ उं नभासु
 नील ॥ उं दवाय २ ॥ उं नमस्तु नमः ॥
 उं श्रुमि मूकादिरुकाय २ ॥ उं ह्वनसि ॥
 आवाहनादि ॥ शिशूल मूजा ॥ धूप ॥
 दीप ॥ जाय ॥ कण ॥ उं नमश्च (लुभ
 नाय २ ॥ लक्ष्म्याद्यक्तवातादि ता
 मूलं श्रुविलयनं ॥ निर्माल्यं राज
 नं तुल्यं उदलं तु मिवाकृत्य ॥ नू
 नाधिकं कर्तुं माहात्यवियुक्तं ममा
 मुम ॥ ॐ ति विहाय च (लुभं तत्वा
 र्धकस्य समना ॥ ७ ॥ आका (मलिक
 मित्याद् दृष्टीगस्य वयीठिका ॥ श्रु
 लयं सर्वरुतातां लीयगलिंगम
 यात ॥ श्रुगत्वादि ॥ श्रुदृति १० ॥

भक्तिक ॥ पूषिक ॥ धूलु ॥
 दक्षिणममाल ॥ आसंसा ॥
 आभीष्टीद ॥ वलि विसर्जन ॥
 कलसाश्रिषक ॥ नलस ॥
 चत्तनादि ॥ सूरु श्रुनधि ॥
 नलस ॥ नलविसर्जन ॥ हामया
 नलं तव्यं यन ॥ नदीगत्वा ॥
 श्रुदादि ॥ वाक् ॥ उं जामया पूजा
 वसुस्त्रया तत्वाद्या ४ वं चदवका ४ ॥
 सूर्यागा ४ सक्तु मतसा मया श्रुद्यवि
 सर्जन ७ ॥ पूजितं वलु निर्माल्यं
 रुक्तिं च नूकं त्रया ॥ व (लुभनाय
 सूर्यागः समताहव ॥ श्रुक्तु वाहय
 ७ रुस ॥ स्नानादिकं कुर्या ७ ॥ ॥

पूनर्यक्तु स्नान भक्तिकलसा चर्चन ॥
 दूषराजन ॥ सूर्याद्य ॥ तयोसादि ॥
 विविधं कलसा चर्चन पूजा ॥ वलि

गल (गमय) को माना स (गमन) पूजा
॥ धूय ॥ दीय ॥ जाय ॥ कौं ॥ ॥

श्रावण न भक्ति कवलि विय क ॥
वाक्कल पूजा ॥ अतर्क कल्प ॥
दक्षिण ॥ यजमान अरिष क ॥
वन्दनादि ॥ स (गमन) ॥ श्री वीर्य ॥
वाक्कल दायक ॥ सूर्य साक्षि थ
य ॥ यकून खूला लि त लि धाय ॥

१ श्रावण विविय ॥	युक्तीनाय स्वाहा ॥
गल यतय स्वाहा ॥	ॐ विष्णु न राट ॥
गुनय ४ स्वाहा ॥	म (गमन) दाय स्वाहा ॥
कण्ठवालाय स्वाहा ॥	य शर्व दाय स्वाहा ॥
इन्द्राय स्वाहा ॥	सामव दाय स्वाहा ॥
वक्र (ल) स्वाहा ॥	श्रुथर्व दाय स्वाहा ॥
ॐ वक्र यकून ॥	ॐ दाय स्वाहा ॥

श्रुथय स्वाहा ॥
यमाय स्वाहा ॥
नेम्याय स्वाहा ॥
वनूलाय स्वाहा ॥
वायव स्वाहा ॥
कवनाय स्वाहा ॥
ॐ भानाय स्वाहा ॥
अतनाय स्वाहा ॥
वक्र (ल) स्वाहा ॥
यथानि ॥

पूर्व दानया ॥
भक्तिगान लय २ ॥
सुमङ्गल दानाय २ ॥

नदिन स्वाहा ॥
महाकालाय स्वाहा ॥
मीनाय स्वाहा ॥
मवाय स्वाहा ॥

दृषाय स्वाहा ॥
न कणाय स्वाहा ॥
गल यतय स्वाहा ॥
मह ल (ल) स्वाहा ॥
सन ल (ल) स्वाहा ॥

वि श्रुताय स्वाहा ॥
व क्राष्टि स्वाहा ॥
माल धर्य स्वाहा ॥
सुनव स्वाहा ॥
मिनाय स्वाहा ॥
यभु यतय स्वाहा ॥

कनयूगय स्वाहा ॥
म (गमन) दाय स्वाहा ॥
सामाय स्वाहा ॥
श्रुथनाय स्वाहा ॥
हठ कण्ठवाला २
ल (ल) दाय स्वाहा ॥
ॐ शान न मिड ॥
दक्षिण दानया ॥

विद्याभानक्षयः॥
सुहाण्वानायः॥

हृदिः॥
विनायकायः॥
मिथुनायः॥
कर्कटायः॥
हिंसायः॥
नक्रायः॥
गणायः॥
महालक्ष्म्यैः॥
सुनखैः॥
शिखलायः॥
कोमलैः॥
वैष्णवैः॥
उदनायः॥
उग्रायः॥
सक्रवायः॥
शिलावनायः॥
गतायः॥
यश्वदायः॥
वृक्षायः॥

वृहस्पतये॥
शुक्रिणायः॥
वाल्मीक्यैः॥
उदनायः॥

यश्विनायः॥
तिष्ठितायः॥
कल्याणायः॥
वृषायः॥
सुन्द्यायः॥
कन्यायैः॥
कुलायैः॥
विष्णुनायः॥
नक्रायः॥
गणायः॥
महालक्ष्म्यैः॥
सुनखैः॥
शिखलायैः॥
वानाक्षैः॥
शुद्धाक्षैः॥
उदनायः॥
श्रीश्वनायः॥

ब्रह्मायः॥
भक्तनायैः॥
दायनयुगयः॥
सामवेदायः॥
शुक्रायः॥
भक्तेश्वरायः॥
कलाकेश्वरायः॥
वाल्मीक्यैः॥
वृंष्टवृक्षायः॥
उदनायः॥

उदनायः॥
यश्विनायः॥
श्रीश्वनायः॥

दक्षायः॥
चक्रायः॥
धनूषायः॥
मकरायः॥
कन्यायः॥
नक्रायः॥

गणायः॥
महालक्ष्म्यैः॥
सुनखैः॥
शिखलायैः॥
वामदेवैः॥
महालक्ष्म्यैः॥
उदनायः॥

भक्तेश्वरायः॥
महाश्वनायः॥
महादवायः॥
कलियुगयः॥
शुद्धवैष्णवायः॥
नाहवैः॥
कन्यायैः॥
उदनायः॥
वाल्मीक्यैः॥
सुंक्षुब्धलायैः॥
उदनायः॥

शुक्रायः॥

सुंदर अथवाहा॥
ॐ अग्निमूर्द्धा ॥
विष्णुनाकककु
वालाय स्वाहा॥

नेमत्याया॥
सुंदर नेमत्याय २॥
ॐ जकायवी॥
अग्निजिह्वाक
वालाय स्वाहा॥

वायव्याया॥
सुंदर वायव्याया॥
ॐ तव वायू॥
कयालीनककु
वालाय स्वाहा॥

ह्रीं अतया॥
ह्रीं ह्रीं अताय २॥
ॐ अरित्वा॥
हीमत्रयककु॥

सुंदर्या॥
जो विष्णुव स्वाहा॥
ॐ शीलियदा॥
हाटकककु॥

उर्द्ध्या॥
सुंदर उर्द्ध्या स्वाहा॥
ॐ अमरुदनि॥
अवलककुवाला॥

यीयागिनीत्य॥
ॐ वसुधम॥

शीमूर्द्ध्या स्वाहा॥
ॐ शीमालस्वी॥

कीककुवालाय २॥
ॐ अथेतानश्री॥

गीनलयाय २॥
ॐ अमृततुंड॥

गुरुमूर्द्ध्या स्वाहा॥
ॐ वरुणतम्रि॥
अतिकलमय २॥
ॐ शी ४ अति॥

मिवमकि यात॥
विष्णुव स्वाहा॥
शीलस्वी स्वाहा॥
ॐ विष्णु नवादा॥
ॐ शी शी लस्वी॥
ॐ शीमालस्वी॥

जो अदित्याय २॥
ॐ अरुणत॥

ॐ शी ४ वरुणय २॥
ॐ तमासुसर्था॥
यकाय स्वाहा॥
ॐ अतम्रि॥
यकिस्वी स्वाहा॥

ॐ वात्सयक॥
अथे स्वाहा॥
ॐ शी शी लस्वी॥
लस्वी स्वाहा॥
ॐ शीमालस्वी॥

ॐ शी ४ सुख्यजया॥
ॐ मत्तवा॥

थलिलियात॥
मूलमकुल॥
ॐ यात नूड॥

अमयलिन॥
ॐ मिवातामाति॥
सुख्यताग॥

ॐ या ४ वरुण॥
वलियात॥
ॐ तमासुअय॥
नलयात॥
ॐ तमागलया॥

ममसयागं॥
उंमयंमे॥
कोमानीयागं॥
उंजागवदस॥
सगुलयागं॥

२ॐ नमसदागि
वायन॥

वसथविधि॥
स्वानवारुं२६
मकारुं२१
मूकारुं२१
हान्नुं२१
लयाहान्नुं१
वीदिआउ
यवाकआउ
धलरुं५हाय
कवाहिकन॥
कलिरुं५

सारवनरुं४
काल्वणरुं४
धनिदूद
नालिकनगुठ१६
यालमगुठ१६
किंवसगुठ१७
जानिन्गुठ१७
कालसरुं१
धिर्यगुरुं१
समस्वरुं१
मनय्यरुं१
मयम्लरुं१
जिकदरुं१
जिरुलारुं१
दूयस्वानरुं१
यलंकमनरुं१
चननगुठि१६२०
गुमुलि१६२०
सवविधीरुं१
दोरुलस्वान

खंदायिगाठय१६२०
यं वसुगकी
कोमानीका
यादसूनी
जयमाला
धवकवदूवा
गामगिनिगम१
धकता१
यक्रिलियू
सिजलखालागम६
गंहादयंमे७
खासिगम७
सिजलमुवायाग५
कंसमुवायाग२
कामालयाग१
मूर्धा
न्याकंध
वरूयाग७
लकामरु७
थकवगि१
गाहाकवगि१
का

कदूयादता१
कदूयादस्वांकु॥
लकुकु१
कदूकु१
गायकु१
लायाकु१
वदूकु१
मूर्धिरुं१
यथायताय५कु१
कदूयाताय५कु१
गायता५कु१
लकूयाग५कु१
वदूयाग३कु१
वदुर्दान५
यल्वपिलानयल
यतिरुलाकयाल
वतिथव२मरु
थव२स॥
लाककूलि
दिष्टि३३६

नवदिष्टि २५।

यंवनत १४

लंहाउयल १६

लंकाट २०

उहाकाट १८

कर्तुयाका ८

श्रुवानयाग ४०

स्वदित्वाक १

यंवनयाका १८

करूं १ दाजा धनिजा ॥

न्यादिभूलय ५ ईकू १ श्री ६ वाक श्री ६

मलुययायायायविद्रुसमुयायमाल

हाकिममाल ॥ ययमिया माल

यूनइवाल ४ यूनईकू ४ वाकूशविधू

ईकू २ वाकू १ वालक दथू यूनयक

नम यूनकायउत वंम रूगसास्य

शचक हागायागं सियति १ ईकू ४

वाकू २ वदिथंथाचक कलुव

समुवाव ॥ कलुयावदिगमाल

लकाकृति यां यकूर्या ॥ ॥

यागभूलिया लकलवाकू दलुत

गव ॥ हसुयमानतगव ॥ स्रु

कत श्रीगुलि १२ दयक कवा

श्रीवत ॥ कवा श्री ८ कवा श्री ७

हाममूडा गय ४ पाका मृगीरुसीवसूकनी ॥
सूकर्थाः सिद्धिमायाति मृगीरुसीवसिद्धिदा ॥
उद्धराणरुवडागी मध्वराणदत्रिदता ॥ अ
धराणरुवसूत ४ कथं धनयतपूर्व ॥ ॥
श्रीगुलिमूर्द्धरागस्या ॥ धरागस्यदयं सज्जन
धनयद्विमुद्रागश्रु अयूलस्त्रीलुरुयदी ॥

१ मलुय कू १६ चतुनस
१ मलुय कू १८ चतुनस
१ मलुय कू २० चतुनस
थाग स्रष्टयक ॥

मलुयकू १० चतुनस
मलुय कू १२ चतुनस
मस्यमयक थाग ॥

मलुयकू १० चतुनस
मलुयकू १२ चतुनस
मलुयकू ११ चतुनस
मलुयकू ७ चतुनस
थाग कतिष्टयक ॥

१ कू २ श्रीगुलि ८ दूवाल व्या
कू २ श्रीगुलि ८ दूवाल व्या

कू २ दूवाल व्या

१ कू ६ कनाळि १ आरुति साहू १०
कू ६ कूत कूळि १ आरुति ७०
कू ६ चाला कूळि १ आरुति १००
कू ६ कूळि १ आरुति १०००
कू ६ कूतसि २ आरुति १००००
कू ६ कूवि ४ आरुति नक १०००००
कू ६ कूखू ६ आरुति दमनक १०००००
कू ६ कू ८ आरुति कूटि १०००००००
कू ६ कू १० आरुति कूटि १००००००००
थाग कू ६ या यमा ल श मा ॥

१
 १७ नमः शिवाय ॥ वसू भयं क भमिह्यादि ॥ तु नमः ॥ अय ॥ श्रीमदक्रान्ति
 याधिं सुनवनतमिर्दधवददमनाहं ताकभं ॥ मातमभं जगति गुरुकनं सत्सु
 चीजीवहृर्ग ॥ यकीं न्नागभङ्ग ॥ अहिस्मृतिवनसकले ॥ सिद्धविद्याभनेद्वी वन्द
 दिक्पालमीलुं दभभानयनं विगुहं कार्केतारु ॥ १ ॥ गङ्गा स्वो स्वयं किं विभु
 रुवकलूबदनीयावर्तं हुरुर्लुं सच्चैर्ययायविभुं मूलिवननमिर्गं शक्तनं
 व्याफविभुं ॥ जन्ता अत्यक्तनात्मा कक्षमयितनिरुं भुक्ता भूक्ताति सुक्ता वन्द
 वर्ध्मद्यकलुं द्विजनिस्वितुर्गुर् ॥ अदिकभं रुवर्क ॥ २ ॥ यामीदिकपालना

थं सकलशयदनी सविर्गं सतिवर्धुं नील आसाम्बु गत्वं मितावदनवर्नं अक्र
 दक्षुगयाधिं ॥ सखा सैसा नवकुसमभममर्तं अक्रुर्वं भुद्वयता सुम्वत्यध
 र्मनाई तिस्वितयिहृयोर्गिं अभिर्गं सर्वं हृर्ग ॥ ३ ॥ तीक्रुदं ह्यकनालं दभ
 नभभभर्नं नगुयि ॥ गभग ध्यानं अभूक्षमूर्द्धजानां कलितं वृचतनं विहृ
 लिर्गं समर्क ॥ यूर्धुदागकयालं वयत्तवमकिर्गं स्वप्नं सैसकयाधिं ॥ तन्मन्द
 जालुभर्तं सकलशयकनं सिद्धिर्दधुतसैर्लु ॥ ४ ॥ भं स्वकीनावदार्गियम्
 दिवावदनी विभु ॥ अकायनादं ह्रीगद्यालासू तिङ्गसूग रूषिकनक्षत्र

त्रिकास्तु नदीर्यः । दक्षविन्दुयुग्मार्थं शिशुवक्षविदिर्माकनन्दनम् ॥ गम्भ
 त्मभक्तनृयद्रुतिगुरयद्वर्नवान्नीदिकयतीर्भ ॥ ७ ॥ आशयासस्यनृय
 डगदस्वित्तसस्त्वर्णवृत्तीर्न । ससोनाक्षंयसिद्धयनमगुननर्नविश्वनृ
 र्यमद्वर्भः । सिद्धिर्सीसिद्धदददधजल्लित ४ ॥ श्रीमद्ब्रह्मोदलार् ॥ बन्दसान
 न्ककुर्तुवृजिनरयद्वर्नक्रमदलालसाह ॥ ५ ॥ स्वर्गविभ्रष्टोन्नयानरुवस
 स्वयनर्मकार्कतार्सूदीर्क कयूनेदमिहानेर्मर्षियकटके ४ कक्कलेभ्य
 यिरुर्भः । सानन्द्यनन्दनम् नकुलवनधर्ननाजनाठीधनर्भं त्रियर्कनोमिनि

र्यवियत्तकर्तदं श्रीदकाधुयुधनर् ॥ ११ ॥ ॐ भर्तृयुधकर्तुचतुननुडलगा
 दक्रिष्णजायमात्ता । मीलोस्वधुत्तुगङ्गाकुरयकनधर्नसुष्टुलोकैकतार्थः ।
 वासकृष्णुतिभूतं श्रितयनसनर्षिविग्रहवर्धुनाडं । गम्भद्वनोमिनिर्णयद्रुति
 तरुयद्वर्नलग्नमृक्किचदम्भा ॥ १२ ॥ श्रीमन्नीलतुलासीद्विडधवसनर्थहा
 टकारुयदीर्क वक्काशक्तिषूयाब्धेतिदितावनगदोकोक्तुर्पावेडल्यार्
 दवर्णुलोक्तार्थेतिदभगङ्गां युयुर्नसुरक्का नलाब्धलग्नसंस्क
 मलममृगहलालसातीयदर्ह ॥ १३ ॥ योर्गम्भवाचतार् ॥ युहसितवदन

सर्वलाकानूकर्म्यं अर्नर्मसकवगल्लसुननर्नयमडं बुद्धमुक्तिं
 ॥ यस्माकं वदन्तीयं धृतकनकमयी अन्नकृणु बुद्धाहुं दीप्तं सावधेयं
 यनमणुनूतर्न अर्द्धनर्नोमितिह्यं ॥ १० ॥ ॥ नत्तोषधीत्यादि ॥ आदिह्यं
 भभीत्यादि ॥ भुद्धभक्तमित्रत्यादि ॥ तुं तमः भिवाय ॥ यातात्तवाकनीक
 त्यादि ॥ वृद्धाद्यालाकयात्ताः स्वसदिगवसिता स्वस्वमया स्वयका आदिह्या
 दिगृहभवसतिगुविसदाऊत्तमधवस्ववृयाः सकायाभसतिथमगधगुन
 वद्कास्त्रुल्लेमाहकवा सिद्धिषयाददाहुं रुवगुवसुमगीयकृयधुम्भु

शुक्ल ॥ ॥ हुं नमः शिवाय ॥ धर्मार्थे भक्तवृत्त्यै नित्यं कर्मनिर्वाहान्न
होक्तं मोक्षं नित्यं वामाक्षं लक्ष्मीं कनकं त्रिभुक्तं वा नृवभ्ययं कान्तिः ॥ ८ ॥
द्वर्धमानं लोकमानं पूनरुक्तं सुदसानां नमोर्लोकनाथं मे गीर्भं भक्तिमूर्तिं
नमस्तु यत्र नमर्दं वा तु यस्मात्तदंभः ॥ ॥ न का भुक्ताति कृष्णं विषदय
दयदाणी क्षिप्रं वाणिमाणा गत्यागत्यागिर्याति श्रूतं लक्ष्मीं नित्यं लला
कस्तुवाक्षः ॥ तान् लब्धवान् नृदृष्ट्या कथयति ऊयति यदा नित्यं कालं यथादा माणा
वदामुगं ऊयति ऊयनमदा नित्यं नृयाभिर्वागमः ॥ हुं नमः शिवाय ॥ ॥

जास्य स्वाति विभृत्वादि॥ ॥ वक्राक्तवक्रिनक्त मनयनयनधा ८ मेलेम
 कुलनमक्त सवृत्त स्वत्यमक्त मसूनसूनयदं गत्तवृद्धि सूनाक्षं ध्यानश्च
 ध्यानमक्तमनस्य हर्षानवार्यप्रथक्तं गत्तवृद्धि सूनाक्षं ध्यानश्च
 मदाशुकि दाम्कि दाय॥ ॥ सुकावातू सुभक्तता इतवर्ष दिवादिपू
 र्णुक्तं ॥ ताता कामरुता दयं दत्तयूर्गं सम्युक्तं कामयुर्दं वल्लुवर्षु मि
 स्वातिभयकटिर्गसिद्धात्तमत्तादिर्गं दिवातो दत्तदि दालु लुष्टिरुगवात्ता
 तत्तद्वृष ४ मि व ४॥ ॥ यथययक्तं वृत्तं दिगविदिगसमा सीकृतायव

ताया क्लृवावक्रिमक्ष सकलतयनिजनामधुलं सुलुलं वा १ गसर्वसक्तु
 दवा अरिमग रूले दामक्तु सुनाममूडा मूडापूजाविभक्ता यजनयनिवर्ग
 क्रीषदावा ४ कयक्तु॥ ॥ सत्तदायस्य यादाय इतयदयदं सामव
 दाथदक्त ॥ उषाथर्वादितीर्य भायथवदत्तं वादार्गं वृक्षधार्यं १ गमयणीय
 सुगमर्णनयनमूयनिषदुक्तं अणवदुष्टा विष्णुयुक्तमूर्ति र्ववतिवत्
 मतीयक्तु नूयीवनाद॥ ॥ वृक्षविष्णुयभक्ता कलति यमकना ४ नक्त
 वाभीसमीद यक्षास्यातक्त इर्गर्गयदगक्षसहिता सैयर्गं सर्वताग ४ १ दले

वा ॥ सिद्धिर्मादृशित एयदना ॥ अतु सुख्यीदिदवा ॥ यागित्या ॥ सर्वधवा ॥ सुनग
 धसहिता ॥ दारुव ॥ सर्वधवा ॥ ॥ सुयीगा ॥ सर्वधवा ॥ हवि सकलेय
 ना ॥ अग्निमखाति एका ॥ द्रुतायुर्धु सुगर्भं सकलेभु ॥ रुदया भक्तिर्क यष्टिय
 म्या ॥ सक्तावाक् सुसर्व ॥ अग्निमेत वनदा ॥ सर्वसिद्धिददतु ॥ तीर्थवीनोमि
 रुक्ता ॥ सकलसूत्रगन्ध यक्तूयीनमास्तु ॥ ॥ अस्मत्तजार्थ ॥ सक्तु क
 लसथलितदि ॥ च्यवता ॥ सुयीगा वनदारुवतु ॥ ॥ अमृक अमिरुद्धानकस्य
 सुयीगा वनदारुवतु ॥ ॥ गमवा क ॥ अत्य ॥ भुर्गुरुवतु ॥ नाजायमविजया

रुवतु ॥ यजा ॥ सुस्विन ॥ सक्तु ॥ सर्वसत्त्वा ॥ सुस्विता रुवतु ॥ ॥ यय ॥ ॥ का
 लवयी रुवतु ॥ द्विवदयेतु ॥ यदानी ॥ भक्तिर्गुरुवतु ॥ यष्टिरुवतु ॥ ॥
 धवावर्धतु ॥ काले जनयतु ॥ वसुधसंयुक्तं सुगम ॥ कीनाद्या ॥ सक्तु ग
 दानयविवृतमति ॥ दारुना जायनिशी ॥ ॥ सोय्येना ॥ साधयणी ॥ कलेय
 वति ॥ जना जाति ॥ दधावितार्भ ॥ लोकान्तरिक ॥ राजा ॥ यरुवतु ॥ विवृता रु
 कि ॥ नवाप्रियास्तु ॥ ॥ ॥ अस्मदाजाधियग ॥ ॥ यीथीजय ॥ अमृकमत्सेद
 वस्य स्वप्नसिद्धि नस्तु ॥ ॥ ॥ सुगन्धयनि ॥ वानस्य ॥ आयुनाग्य ॥ जनधन

लक्ष्मीसुकृति सुकृतु वृद्धि नक्तु ॥ यजमानस्य तत्कादृति यक्तु
संपूर्ण निमित्तु यथ भक्तु कुरुत दायिना एवक्तु ॥ यजमानो
नी श्रुत तसिद्वन मक्तु ॥ सगल यनिवा नाक्ष भुर् एवक्तु ॥
सक्त ॥ सक्तु तिन कर्न सुकृति ना विश्व कृया दया ना जान श्रुति याल
यक्तु वसुध भक्ति ॥ सर्वदा ॥ काले सुकृति वरिषे लम्व ॥ स
क्तु यजा मादिता भाद कर्न यल वृद्धि वाधव सुद्व (साष्टी यमादा ॥ सदा ॥
स्येक्षिय जात्य ॥ यनिवा तयत्वे न्याय न मा (नक्ष मदी मदी ॥ ४५ ॥ गम

वाक् (लक्ष्म ॥ भुर् मक्तु निर्यं लाका ॥ समक्ता ॥ सुखिना एवक्तु ॥
काले वर्ष कुरु यथ ॥ वृथिवी सुभ्य भक्ति ॥ ५८ ॥ अर्यं काले नदिता
वाक् (लक्ष्म ॥ सक्तु निर्यं या ॥ ५९ ॥ अज्ञाना नना वा द्वा मक्ता कर्ता यक्तु
रिचाति निर्यं मद्रा यजा विभर्न क्रम यजत विष्णो काले मक्तु तमक्तु
यक्तु यक्तु यथा वा द विनयिन कर्ति सर्व लोक कताथं सर्व संपूर्ण म
वक्तु तन द्वा वद ॥ यो जति ॥ सुय सत्त ॥ ॥ पाषल नाक्त नव रक्ति
शुवा या यत्ये द्वा भा म्न नय ॥ ६० ॥ शुशु वा ॥ ६१ ॥ तूना धिर्क मक्तु क्वा धन ल क

मल्लधवा ममधा यदुक्ता ॥ त्वंगति ४ स र्व सुगतां सीलितं सुव नाचन ॥
 श्रुते श्रुतं सुगतां दृष्टा त्वयं नमः श्रुत ॥ ॥ कर्मसमस्तसा
 वाचा गता त्याग्नादि कर्मसं ॥ श्रुतं वाक्कादीनक्तु ॥ तप्युनं द्रुता भन ॥ मने
 दीनक्रियादीनं एकदीनं तथेव च ॥ जयसामाच्चनदीनं कर्मगं यनमः श्रुत ॥
 श्रुतमस्तु ॥ ॥ गङ्गा नवर्तु वाहाकिं तहायनसि ॥ त्रैपालिकचेयु सिन ॥ द्विती
 य ॥ श्रीसिद्धि नाजस्यसुग ४ कतीया ॥ लुकाद्वितीयं विधि विनस ॥ ॥

काटि म्व २
 संगयति १
 यति यू १
 काजाता स्वत्ता १
 मस्व (ग) १
 कति ७
 लं श्रुगुलि ७
 जहा श्रुगुलि ७
 कसम ३ ७
 जहा रयनि १
 श्रुति श्रु (ग) का ३ ७
 लकम श्रुति १
 कादुम श्रुति १
 तायाग श्रुति १
 वंदुम श्रुति १
 ययाग श्रुति १
 यति लठ ३ १
 कादू पाट काट ३३

श्रीभक्त उक्त नाम दामाया आप नलि नन्द मनकालि धन ननुदद श्रीभक्त भक्ति



निव शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य



शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य

नमो नमो कलि उद्यम श्री भक्त वल्लु उद्यम भक्त कलु गुन

शक्ति मयि रूप निव धरिणि श्री दिव्य

五



१॥ गतः यश्च न यसाधनं ॥ दधिलिव
 अ॥ गमर्गं पृथग्दृष्टं वलममयं । घृतं
 कृष्णदकं वैवृष्टीदि कमतान्यस
 न ॥ न वामधियेव तत्तु भवकथ
 र्ग ॥ उमायति ॥ निवावद्वि ॥ ग्री ॥ साम
 धजनार्दन ॥ राक्षवावतू ॥ लक्ष्म्या
 वक्ष्याय नुमक्षम ॥ गमर्गनील
 वलुया ॥ कृष्णया गमयनथा । दृष्टं
 वेतासुवलुया ॥ धनाया दधिउद्यत
 कयिलाया घृतं गमर्गं मदायातक
 नाधनं ॥ अलारु सर्ववलुया ॥ का
 यिलेका पुनस्यत ॥ गमर्गं वैकयलं
 दद्याददुष्टार्कं नु गमयं । कीर्तय
 यलं वैवृष्टीयलं दधिवैवृष्टि । अक्ष
 मकयलं गमर्गं यलमर्कं कृष्णदकं
 सयि कृष्णदकं तुल्यं पृथक्कले वि
 लभयन् ॥ ॥ नृति यश्च न यसाधनं ॥ ॥

१॥ आदौ गुनमलुलं कावयित्वा गत्य
 अ॥ दृष्टं न स्यावतलानि कीयन्
 सकल्यं कावयित्वा यजमाननव
 तासीति युतिवचनं यथा विहितं
 कर्म कृत्वा कववालीति युतिवचनं
 गदनकर्तव्यं कर्म मानसावल संकल्यं
 दिक् कावयदिनि ॥ ० ॥



॥ अथ श्रुकादि कृकालाक मारुकाक
 नार्कवीन ॥ वलिसकुयी ॥ जाति नाना
 वलु नानाकृण नानापी ॥ नानामारुका
 नानाहिनवनाहिनवीना ॥ नानामान
 कनवी नार्क नानादवना नानाहिनाना
 विगच नाना नार्कस नाना यक नाना
 कितन नाना नाना नाना श्रुकागुचानि
 नानाग कि नि ॥ षट् ॥ कि नार्क नाना
 ॐ ॥ दव नार्क ॥ नाना यका ॥ ॥ ॥
 ॥ अं महा कयाक कवीन ॥ अं श्रुक कवी
 न ॥ ॐ महा नादवीन ॥ ॐ वज्रवीन ॥
 उं महा शगवीन ॥ उं उं ऊं येवीन ॥ अं र
 मा कवीन ॥ अं महा इन्द्रवीन ॥ ॐ म
 हा नोनववीन ॥ ॐ महा वनासवीन ॥
 उं इन्द्र यदिवीन ॥ ॐ र मा क कषिवीन ॥
 उं वगुता मखिवीन ॥ उं महा कायवीन
 अं सर्ववीन ॥ अं ८ महा निवलवीन ॥ ॥
 कं धर्मवीन ॥ खं उ मरु कवीन ॥ गं कं क
 वीन ॥ घं महा वनवीन ॥ ङं विय कवी
 न ॥ चं श्रु यवीन ॥ चूं वस कवीन ॥
 ऊं विद्यवीन ॥ अं विष्णुवीन ॥ ऐं व
 क्काया वलि ॥ ॐ सर्व विना वलि ॥ ॥

कभ वनर्व वल्यार्चन ॥ समकचा
 वझायली ॥ व ॥ अं मा रु ध्व त्री ॥
 रु त्री वा की मा नि ॥ तिन कृष्टि वा ॥
 द्वे भूवी ॥ नागानं रु वानादि ॥ लिगुचने
 द्यायली ॥ गलुची वाम ॥ म ॥ धी यगु
 वति ॥ ॥ १ ॥ यथ म म लुल ॥ ॥
 धि म लुल यी ॥ ॥ इतिय म लुस ॥
 य ना ति वझायली ॥ एता महा मृ त्री
 मगु लि की मा त्री ॥ वरु व ॥ भूवी
 न न रं वी राही ॥ न वलि म ॥ व द्या यली
 ॥ म क लु वाम ॥ सानद्र महा ल श्री ॥
 द्वि तिय म लुले ॥ ॥ कृ ती य म लुले
 व का कृ त वझायली ॥ नी म दा महा मृ त्री
 मृ तृ ग द्वि की मा त्री ॥ वल खू व भूवी ॥
 श्री म पि वा राहि ॥ ॥ द हिल वे द्यो य लि ॥
 चिल र्ग ग वाम ॥ कं ति महा ल श्री
 कृ तिय म लुले ॥ कृ तिय ३ समा फ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



(यूयलेकलमाह॥ भक्त्यर्थक॥ ब्राह्मणस्य तु कालाभा न्यभाक्षरुति यस्याव। विश्ववर्षेऽपि निदिष्टः
 सुहृत्प्रादक्षनसुधा॥ भिन्नः कष्टु उभा तानि प्रमर्षवर्षु संक्रमातु। द्वात्रिंशदहोर्लोकं श्रुतव
 आण्डसतः। क्रतुविद्वद्भ्यानितां हयवृत्तुने गुरु॥ अष्टमं चैव कर्कशं द्विंशदहोर्लोकं। अथ
 वाकीनष्टकस्य सर्वसां उपमाणीवोपमार्थ॥ ॥ अर्धार्धकनसोपासु गस्मिन्तु नृणं संश्रुयारु नि
 योगेनायं एकमंशुषिकैः सर्वपगाभीचत गुरु नृद्वौ विश्वपुणलं पाटलिकां वक्ष्यामि यथा
 सवासोऽंशुनिवासायुजनमस्तु य गीधाइ संपुष्टं पुष्पविष्णु निवा लाभ्यानीचष्टुम्भ॥ ध्रुवहर्क
 म०००॥ ध्रुववक्रिति॥ ॥ ध्रुवहर्क धर्मध्वज यद्गुताधुयी मया वदलनी नृप॥ विधा
 यधवदवर्णयद्गुतां वलिं गृह्णन् ममरुतमासि॥ ॥ गतिवलिदत्ता॥ मन्त्रयद्गुतां दि पद्म
 तमलकलसादिन संपुष्टवर्ध॥ ध्रुवहर्क॥ ध्रुवाय वधीति प्रथमालि वक्ष्यामि
 मालिम्भ नमन॥ ध्रुवी वहिगत सानमात्र॥ पद्मदाम॥ ध्रुवमिदं विविध॥ ॥

፡ ሐይቅ ይኖርበት ነው

[illegible]

नवश २० जाहोजे थायर भासान

समलं धनं नाव ॥ तत्तां युक्तानि यात्री रुवसक्ति रुतल वति
न्यातेन मासु ते ॥ १॥

मृग लक	नमस्य दक	लजी कादू	गन्धर्व हाक	मदनदा कादू
क्षीबानिक वादू	जीववकक नायू	विनविदि नायू	महा हाक	महा हाक
सुगीव नायू	वनकि नायू	जीववकक नायू	महा हाक	महा हाक
वनर नायू	ज्या नायू	ज्या नायू	महा हाक	महा हाक
वृषारुन नायू	ज्या नायू	ज्या नायू	महा हाक	महा हाक
जस्तन हाक	विजला वादू	सविना नायू	विजल नायू	विजल नायू
सवि नायू	सविना नायू	वनकि नायू	विजल नायू	विजल नायू
शान वादू	जान नायू	भक्त नायू	भक्त नायू	भक्त नायू

५६ अथ एवमापरकवलि नवद्विपद

हीत्वा विविध सुखं ॥ मृगयामास वै विकल्पं तु कुरुता

ॐ बुद्धिनिष्ठा यत् १० दधुस्तिनाग

५
अति

पञ्चमः

श्रीगुरुभ्यो नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

12/12

॥ अथ कर्तव्यामूक अयूतश्रुति वृथायायना
 मूकयतिमायतिहा कर्मलि सुकलहात कर्म
 कर्तुममूक ॥ अथ ममूक गमोर्वाक्रो मरि
 रुमा लक्ष्मील सुगन्धतामूल वासातिहाति
 खनत्यामहं वृत्ता ॥ ॥ वृत्तिवचनवसुसोम
 ग्रीगुनवदयं ॥ ॥ वृत्तामिति वृत्तिवच
 नं ॥ यजमाननकथय ॥ यथाविहितं कर्मक
 न ॥ कनवालीति वृत्तिवचनं ॥ ॥ संक
 ल्प ॥ अमूक कर्मलि विद्युयति समाधिकामा
 रुगवर्त ग्रीविनायक इमं च मरुदुज विष्टा ॥
 अथ सर्वयज्ञतय सीर्थरुलत काटि गुणिगजय
 रुल समरुल प्रादिकामामूक अमूककर्म म
 रुकविष्टा ॥ ॥ वृत्ति मूधिवसकृत् ॥ ७ ॥

नववर्षार्चनं ॥ यीतत्र वृत्तनवकाहं लिखित्या
 वृत्तिविक्रमं नवदीप वलिमाह ॥ ॥
 नवदीपमुपयथा ॥ वृत्तदीपकं नृपुतामवर्तु
 रुगे लिमान ॥ नागदीप सुधसोमी गंधर्वमथवा
 नृप ॥ अथ नवमादीपकोमार्दीप मरुकी ॥
 योयोगलयति विद्यात इमं च वरुचा यथेन सु
 नंदकिलता रुया कुरुया लंचला रुमि ॥ वानू
 ॥ नाकसं विद्या दायुय रूतमवच ॥ विष्ण
 चं चारुन रागनृप मंगनकावर्ग ॥ मधुतु
 रुन वीपारुविइ द्वियाधिदेवत ॥ ७ ॥

न्यासः ॥ पूर्वोदिकमल ॥ गलानोत्था वृत्तमूधिवि
 इमं ॥ वृत्तिवचनं ॥ वृत्त ॥ वृत्तदीपतया ॥ कुरु ॥
 वृत्तदीप ॥ नाकस ॥ वृत्तदीप ॥ वृत्त ॥ वृत्तदीपतया
 विसाच ॥ वृत्तमासु सयथि ॥ वृत्त ॥ वृत्तमावर्तु
 मधु रुनव ॥ मिति वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ मरु
 रुनव ताय समनीय मूवालि पूकानाना यहा न
 यविच वृत्त वृत्तकान ॥ यज्ञमूकर्म सुनिवापित वि
 धु जाला दीयाधिदेवत गलानुसतन ममसत ॥ ॥
 वृत्तिमुत्ता विसर्जय ॥ अथ मधुल ॥ मिति वच
 नं सयथि गंध्यादि यति तया ॥ नैमल्यका ॥
 मधुवाय वाक्तालो गयरी मरुल रुमि निवि कय ॥
 तदव रूमि मधुनं कार्य ॥ ११ ॥

अथ कृत्वा यैः विधिः ॥ तत्र दीक्षादिना पूर्वमेव नवदि ॥ सकलिविधिः ॥ यात्रिनिर्मितमधुय
 स्था कनका ॥ सुसंवृती गृहीतमय तत्र तत्र मया पति फ ससमरुतलं यात्रय न यता
 यैः कुरु दीर्घोपे के नत्वा याभादी व्यायता वितस्म वात्ता ध्वज नत्वा ॥ कदा च वा नि
 हा को वा यत सा द्वे द्वय रुक् विस्त्रा भा यत मधु ते कदा तत्र च उर्द्धि नू गत च उर्द्धि
 हा तिका द्वा न की कृण मध्व च उर्द्धि कदा रयता ध्वया ॥ को व द्वा य का व द्वा य मा ऊं यि
 वा वा न क च कृण या त्रक द्वा द्वा य दा यत विपू ते निस्मो य च उ ॥ च उ ॥ को
 द्वे न क म के स्मने च कृ वि कृ न्ना न्ना पचिम मध्व युर्विक मल पचिक त्या तत्र
 पचिमा दि च उर्द्धि मा नय को व मान त्वा न्नत को व य यो न्नी चीतन क ॥ ध्वत ॥ ध्वमेव ॥
 न आदि ॥ यति च उर्द्धि म कन न ऊर्द्धि के का व मिता कमल द्वा द्वा को व या यूर् यो त

उक्ता नय मध्व म च उर्द्धि वि कृ दे व त्या ध्व उर्द्धि नत्वा ॥ तान्त विस्त्रा य क ॥ उ म न
 का का ना ॥ यत सु या तिका मध्व यिया त दत्ता सु य त्वा व सु रु सु गल स भिष्टा ॥ स क्का
 या तथ मध्वि म च उर्द्धि या क सि न्ना ॥ यैः या ग नि य थ ए वान् तथ ॥ तान्ति व
 ना नि स्मिता नि ॥ या न्नु म न्का का ना नि ॥ या उ ॥ उ ता न्त विस्त्रा यि य कानि ॥ वृद्ध
 व त्या नि च द्वा नि या गानि ॥ तथे व यिया त दत्त य कानि स स्मया तथ पूर्व च उर्द्धि द्वा
 द ॥ उ ता न्ति विस्त्रा कृता ॥ निव दे व त्या ॥ या व यिया त दत्ता दि य कानि ध्वना ॥
 हा ना वा ॥ स क्का या ति द्वा द्वा य ता नि ॥ य कानि ता नि द्वा द्वा को व यूपानि को व म
 की या र्ण भा त यैः अ व नी न्ना क ता द्वे यैः क म स स्मया तानि या गानि वा त्वा कानि म् कनी
 व र्क ॥ स य क क सि न्ना त न ॥ ॥ त्वर्द्धि दि ना व त न ॥ ॥ ध्वय ॥ यि र्ध्व ॥ मा क

१ कुलुसलुपद यक दिवस सायाव दू १४ द्दव अग्नि कलुया चीय यात कथू चव
कि किंक स दवर्न पल १२ थू तस दिक् पाल दवर्न पन सह ॥ थू तस कव सि
भाल दवर्न व्यापति यन ॥ नाग आनि या ५ थू स ६ नाग गोणू के आनि झा दू तका
या ५ थू नि स मिखा ॥ ग ७ २ चीय ॥ सिंहा सन सिं दू २ चीय ॥ यू न स ची य च
नू नू र्य द्दवर्न ५ थू स चापति यन ॥ ५ थू क लुिका स ॥ ग ९ य व १ व ११ द व या स नू
निवर्न ख स मूल स नू न ता चीय ॥ अग्नि क लु स अग्नि का ल स अग्नि हा कि स हि त न ची
य ॥ दि ग जाप ता का थ व २ स ची स र्ग ॥ य वा द क र्प दू दू व वि थि यू जा या १ ३ ल रु य मा
ल द व दृष्टि वि य या न ॥ अग्नि का य अग्नि चक्र आ सि न सा च का व ख र्म पा त ल भाल र्ग म ग

वगकडयवीपक३

मधुसूक्तं श्रीसूर्यो न काय न लयूजा या दवा सूर्यो काकि स मकाया ॥ १ ॥
यवापक याय दूथक कौगार्थकादिना ॥ अकृष्टं कुर्याय सानवमुनीदिने लेखका
यनकलक ॥ इसन जय सानन याचक ॥ सति दे सने याय ममाल ॥ कलाहानवति
यतिम ॥ अत्रिष्ठपनवनेसमाल ॥ दवया सूनकम लयादव पतिवाहानमालका
धर्मदत्त गहानपाकलस आदिन काथ ॥ ४ सन अतनकक ॥ वलि गममादि ॥ इष्टुष्टुद्वि
दिन पूष्टु ह्यादिनाथयक ॥ नखिस अरुति कसो वाय नवलावनेत याय ॥ धन ६० रुद
वीयद्विजुमदीययाउलि वलि धूपदीयेनेवडादि वमादि दक्रि म सुवर्द्धम
विक्लु सवर्द्धम आवाहन याहा वयडा आप कोगदि अतनकल श्री यडाथनी

[illegible]

होमजाय तकधवय किवाहनदतसा गोदागपीकल भवलिआदिनमालका वायावा
होमजाय धतडाव म सकल्य मलकुलु सै गयाव कल भया कूतपा सिंहासनया सुष
वियति कलुका प्रहीता थदीडाव सक तीर्षु स्त्रनयाभानलि मालको द्रयकन सुय
रस ॥ ॥ सुषधवतीवयुजय च्छुगदि वलिदद ॥ समस्त जनसै सुषयविय ॥ वा
कनई १४ देवक आचार्य सकादृष्ट १४ वयम पि मुक्ता वाक्सी काउय ॥

(श्रुति॥ पञ्चपति॥ गुह्य श्वरी॥
वागुक्ति॥ वक्रला॥ अथवा लश्वरी॥
अक्ष श्वरी॥ चतु॥ गुवाहात्र॥ श्री
श्री ३ तत्र शसवली॥ अथाक्ष॥
शेनवत्॥ चतु श्वरी॥ मान श्वरी॥
अत्र॥ वृग॥ कथिताय॥ रुतपि॥
धूवाहात्र॥ मंगुसकन॥ विद्याध
नि॥ कनवीन॥ समान॥ मोक्षेण
वति॥ रुदगीर्था॥ गूतापि॥ कालि॥
या॥ अतकिन॥ श्रीसपि॥ कस
लातिथि॥ पामिका॥ लूसाक्ष॥ हिव
पञ्चनदी॥ कपिथि॥ मतिनी॥ तथुती
थि॥ कर्मेण॥ लीति॥ दवनिनि॥ लीरू॥
चन्दनलीरू॥ धवहिलि॥ रुत॥ जम
ले॥ अगत रुपि॥ धनमदू॥ ॥

लवन्तललि॥ अगाशेवव॥ लश्वरी॥
श्रीरिमदु मदादवल॥ विवृदवल॥
लासाहात्र॥ माहातचक्र॥ दगुलितल
कनवलसिक॥ वलिलाहा॥ वक्रल॥
विशूल॥ वसक्तपुलि॥ इमाश॥ ॥ श्री ३
तत्र श सकले॥ १२॥ ४॥ मातृका १३
इतयातमानक॥ ॥ धवद्रुतमाना
खद्यकगम॥

१ स्वप्नयाश्च या यनायास्यधलमाल॥

















दाक्षिणा

दायादा



१५५

दीक्षा





१५५

५३५५

५३५५



उत्ता
पुत्र





५

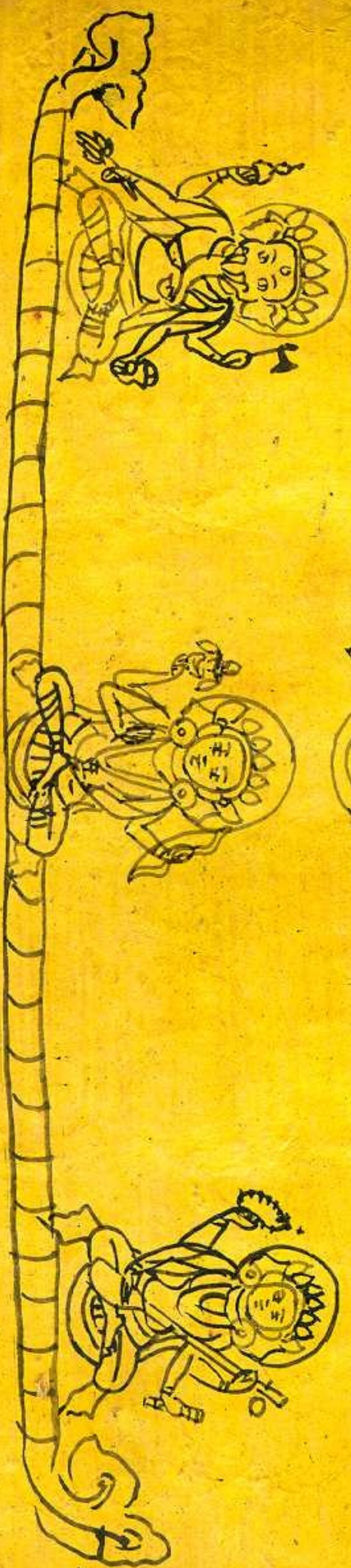
५

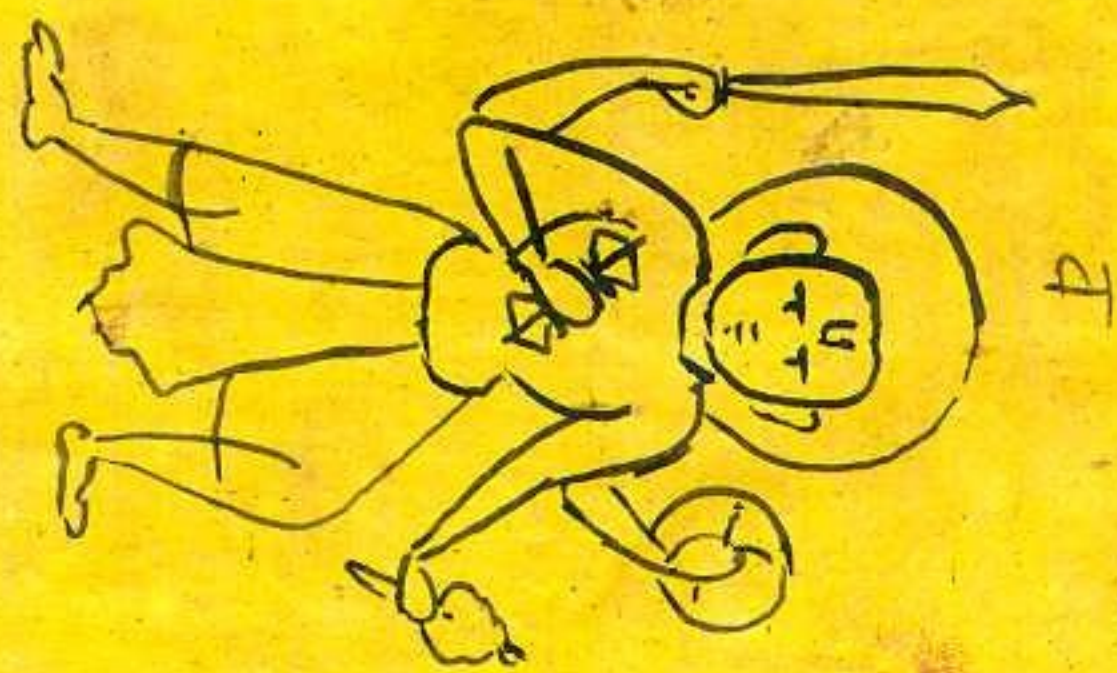
५

५

52

॥ ॐ ॥





इय

विष्णु उना



म. १००









ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ सिद्धि भूषण उक्तं गायत्रीं विष्णोः कृतं विष्णोः स यत् ॥
तु कस्य यासि स क्लामा कथं लिख्यते यत्तु नाकं न पृथक् न भवति यत्तु ॥ अथ क
नयास्यो विद्वत्तयाय ध्यास्य क्तादत्तं वृत्तं यत्तु ॥ अथ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य
नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य
नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य
नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य नृपधर्म लये ध्यास्य

यवः साधः
उक्तः
धनपुत्रः नमः



यवः साधः
यवः साधः
मयः सविः साधः
मयः सविः साधः

यवः साधः
यवः साधः
कामः साधः

यवः साधः
यवः साधः
यवः साधः

मनविनायकाया सामान्य

मल्ल

उक्तद्वार

कवन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

मन

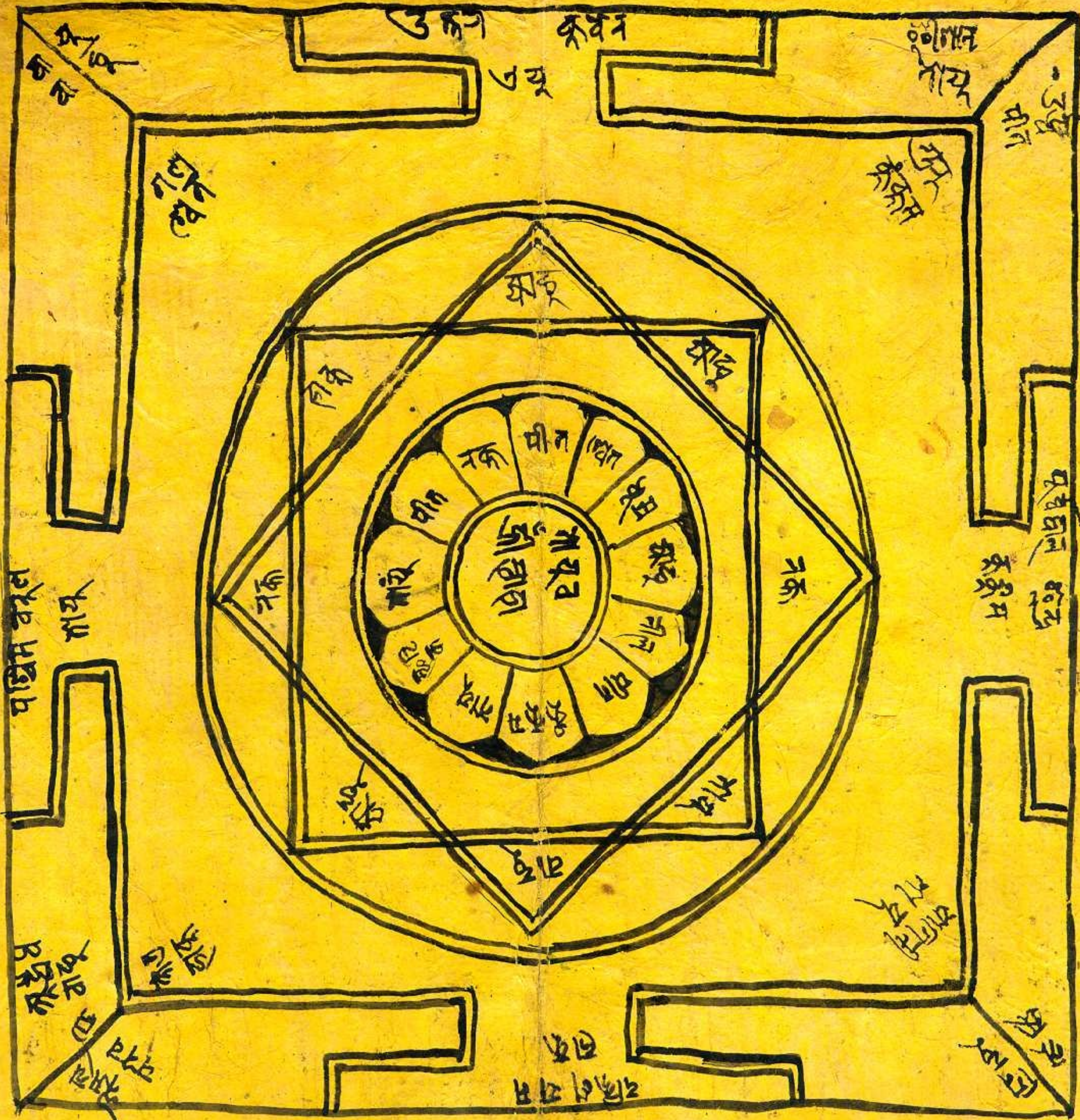
मन

मन

मन

मन

माययासुखल विष्णुपात्र



मनविनायकप्रामुख्ये

पुरुषोत्तम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

उक्तप्रकारेण

उय

क्रीकम

क्रीकम

प्राथम्येन

माय

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम

क्रीकम



शून्यक (शून्य) नाम भुज

